अनंत यात्रा

भाग 5

अनंत यात्रा

अनंत यात्रा

पूज्य श्री बाबूजी

एवं

बहिन कस्तूरी

के

मध्य पत्र व्यवहार

भाग - 5

19 मार्च 1959 से 2 मई 1975 तक

प्रथम संस्करण : जनवरी 1998
500 प्रतियाँ

© : सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 60/- रुपये

प्रकाशक : श्री जी.डी. चतुर्वेदी
सी. 830-ए. पारिजात
एच-रोड. महानगर
लखनऊ

मुद्रक : एन्टेक्स प्रिंटर्स
10-ए, बटलर रोड,
डालीबाग,
लखनऊ।
फोन नं. 283370, 273808
फैक्स : 0522 - 283370

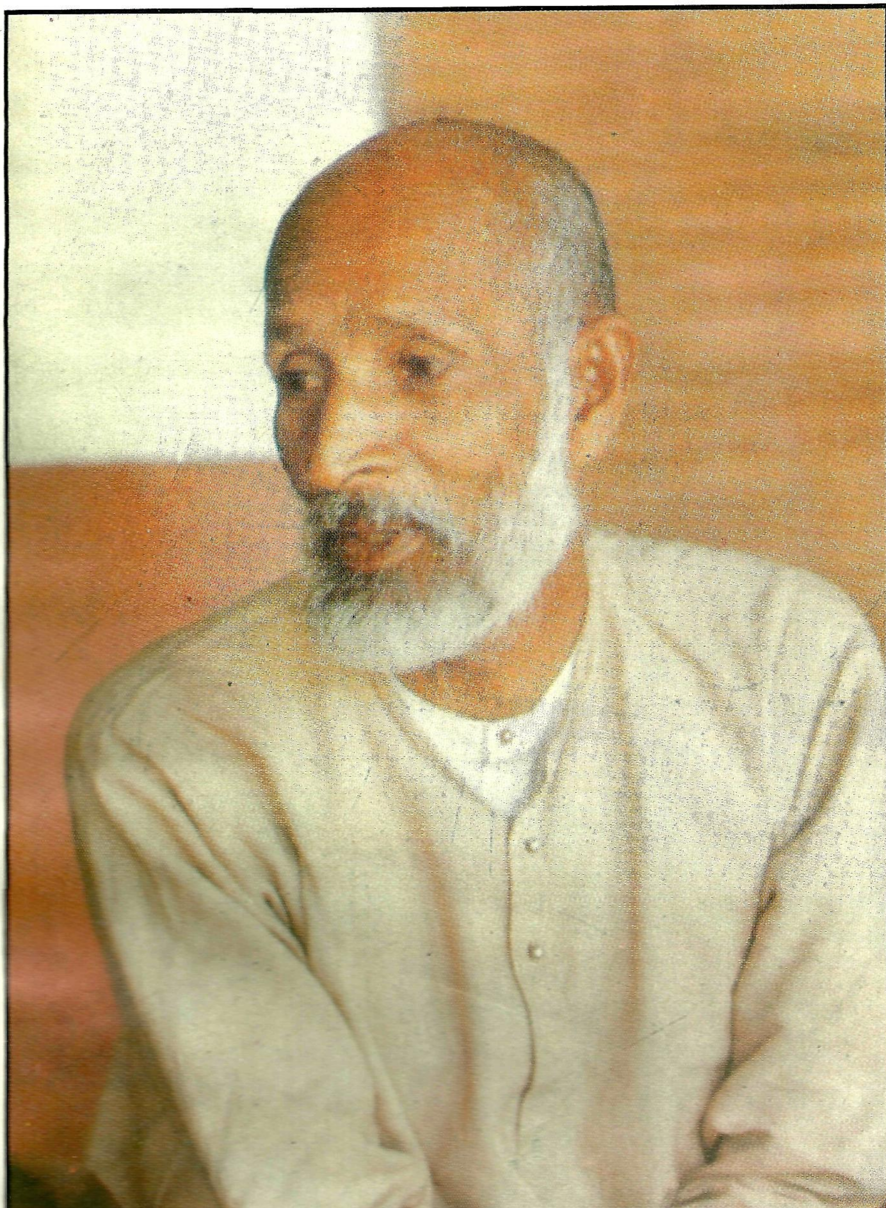

श्री रामचन्द्र जी महाराज

शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

" दो शब्द "

मुझे यह लिखते हुये अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि अनन्त-यात्रा अब 'श्री ती महाराज' की कृपा से पुस्तक के रूप में परिपूरित होकर पाँचवें Volume ने अंत को छूकर 'मालिक' के चरणों में ही समर्पित हो गई है। मानों अस्तित्त्व- . समस्त के हित हमारे श्री बाबूजी का मंगलमय-दैविक-निमंत्रण बन है। अनन्त-यात्रा में मेरे और मेरे बाबूजी के मध्य पत्राचार का जो कुछ साहित्य ग्न्थ हो सका है वही दिया गया है। उनकी कृपा की अनन्त-धारा में भींगी मेरी यात्रा का आदि और अन्त मेरे बाबूजी के चरणों को पाकर अनन्त हो गया .नि ही इस पत्राचार को अनन्त-यात्रा का नाम दिया था एवं उनकी इच्छानुसार ही अनन्त-यात्रा को पुस्तक का रूप दिया गया है। मेरी आशा है कि 'अनन्त-यात्रा' पुस्तक के पठन करने वालों को हृदय में 'श्री बाबूजी' की अनन्त-कृपा-धारा का प्रवाह प्रवाहित मिलेगा। मेरे दो शब्द लेखन और लेखिनी उनकी दिव्य-गरिमा का अनुपम-गौरव पाकर निहाल हो उठे हैं।

अनन्त-यात्रा पुस्तक के दो शब्द में अंतिम दो शब्द Point 'K^2' और Point 'Y^2' की विशेष महत्ता है। Point 'K^2' के लिये श्री बाबूजी ने लिखा था कि 'K^2' Point में तुम्हें प्रवेश देने पर मैंने देखा कि तुम्हारा 'ब्रम्ह-रन्ध्र' का स्थान खुल गया, जो soul का प्रवेश द्वार और वापस जाने का भी द्वार है। इसलिये मैंने तुम्हें अपने जी में लेकर मानों छलाँग लगाकर 'ब्रम्ह-रन्ध्र' के पार 'L^2' point पर स्थिर कर दिया और लिखा कि बस अब Points की Research पूरी हो चुकी है और Centre-Region समक्ष में है।"

मैं बहुत आभारी हूँ केसर बहिन की, कि अब तक मेरी जितनी भी पुस्तकें छपी हैं उन सबकी हिन्दी एवं इंगलिश अनुवाद सहित सभी पुस्तकों को पूरा का पूरा Fare ने: लिखने का अथक परिश्रम उसने ही किया है। मैं प्रेस में मेरी पुस्तक छापने अपने भाईयों की भी आभारी हूँ कि उन्होंने इन पुस्तकों को मान देकर अपने .. प्रकाशन के सदृश ही संज्ञा देकर इन्हें छापा है। 'मालिक' से समस्त के हित . यही प्रार्थना है कि दुनियाँ में सम्मान के साथ हमारे श्री बाबूजी की कृपा समस्त .यों को पखारती रहे।

कस्तूरी बहिन

पत्र संख्या-701

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी | लखीमपुर
सादर प्रणाम! | 19.3.59

बहुत दिनों से आपका कोई पत्र नहीं मिला। हो सकता है, 'आप' और दूसरे काम में व्यस्त हों, खैर, कोई बात नहीं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो यह न जाने क्या दशा हो गई है कि पूजा करते या करवाते समय लगता है कि मानों मेरी जगह बिल्कुल खाली पड़ी है। केवल विचार ही नहीं ऐसा होता, वरन् सच ही न जाने क्या हो जाता है कि मैं यह देखकर स्वयं आश्चर्य में पड़ जाती हूँ। केवल पूजा में ही नहीं, वरन् यह मेरी कुछ दशा ही हो गई है। अब कुछ ऐसा लगता है कि मानों अंतर-बाहर, सब स्वतंत्र या मुक्त हो गया है। कुल भीतर-बाहर, एवं कण-कण तक में मानों बक़ा ही बक़ा हो गया है एवं मानों अन्तर-बाहर का कण-कण मुक्त हो गया है। सारे बन्धन व बन्दिशें टूटकर सब स्वतंत्रात्मा हो गयी हूँ किन्तु सद्गुरू के सर का छूटा हुआ वाण भी बिना घाव किये ही अन्तर में जाकर ऐसा भिद गया है, जो चाहे कैसी दशा हो, बेचैनी बनाये रखता है। कभी-कभी तो ऐसा मन में आने लगता है कि क्या मेरा जन्म सिर्फ बेचैनी के लिये ही बनाया गया है, परन्तु फिर भी एक सब 'मालिक' की ओर से अवश्य रहता है या सेंक जो कि हर एक को एक सीमित अवस्था में रखता है, परन्तु एक बात आश्चर्यजनक है कि मेरी दशा अब इस सेंक या सीमित अवस्था से भी परे व अछूती ही रहती है। कुछ अजीब बातें मेरे में, मैं देखती हूँ, जिन्हें मैं 'आप' को लिख नहीं पाती हूँ।

अब तो मेरी यह दशा है कि जैसे मृत मनुष्य को कोई चाहे नोच कर भाग जावे या सींग दिखाकर अपशब्द कहे। ऐसी दशा है कि जैसे मुर्दा नहलाने वाले के हाथ में होता है, चाहे वह उघारा करें या कपड़े पहिना दे।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-702

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी | लखीमपुर
सादर प्रणाम! | 4.4.59

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। मुझे अब काफ़ी ताकत पैदा हो गई है। 'मालिक' की कृपा ने मुझे अन्तर की ताक़त दी है। इसके लिये 'उसको' धन्यवाद है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो ऐसी दशा है कि जिसमें न अक़्ल ही रह गई है, न बेअक्ली ही शामिल है, न आनन्द ही शामिल है और न बेआनन्द ही शामिल है, न पता ही शामिल है और न बेपता ही शामिल है। मेरी तो यह दशा है कि न कुछ समझ में आता है और न बेसमझ ही कहा जा सकता है। खैर, जो भी हो न सूनापन है, न बहार या भरापन ही है। न प्रेम है, न पसीजन है और न भक्ति। लेकिन न जाने क्यों ऐसा दृढ़ विश्वास अन्तर में हो गया है कि मानों मेरा तन-मन व धन सब कुछ 'मालिक' हो चुका

है। मेरी आत्मा ने भी मेरे प्यारे श्री बाबूजी का ही स्वरूप धारण करना आरम्भ कर दिया है।

अब तो ऐसी दशा है कि मानों दशा जैसी पूजा से पहले थी, वैसी है कोई पर्दा, न कोई नक़ाब उसे ढांक सकता है और न ज़रा सा भी छिपा ही सकता है। दशा ही क्या, शरीर का कण-कण मानों भीतर-बाहर सब बेनक़ाब हो चुका है, परन्तु मन तड़पता है, शान्ति नहीं मिलती, क्योंकि अब लक्ष्य पर मेरी निगाह एक क्षण को भी टिकती ही नहीं। चाहे जितना प्रयत्न करूँ, मुझे वह तड़प पैदा ही नहीं होती। न जाने अब तो कुछ यह दशा हो गई है कि मुझे आध्यात्मिक बातों में या ईश्वरीय विषय में कोई रूचि नहीं है। अपनी दशा को देखते हुए अब यह कहते हुए भी शर्म आती है कि मुझे तो अब तड़प व छटपटाहट है। अब तो तड़प पाने के लिये जी तड़पता है। जानते हैं क्यों? तड़पने और छटपटाने के लिये। शान्ति नहीं मिलती है अशान्ति पाने के लिये, और अशान्ति भी मिलती नहीं है। कैसा खेल व ज्यादती है 'मालिक' के दरबार में।

हृदय पर क्या, बल्कि अंतर में एक सेकण्ड को भी दृष्टि टिकती नहीं। पता नहीं, तब वहाँ 'मालिक' था और अब उसे प्रियतम 'मालिक' वहाँ नहीं मिलता हो शायद इसीलिये वह भी लौट आती है। मेरे 'बाबूजी' मेरी दशा बहुत बिगड़ी हुई है। मुझे सहारा आप का ही है। तड़प कर मर जाऊँगी, 'बाबूजी', 'बाबूजी' अनजाने ही हृदय से निकलता रहेगा। कहाँ तो मैंने 'आप' को लिखा था कि मेरी दशा तो यह है कि ''मन थिर, चित्त थिर, सुरत थिर, थिर भया सकल शरीर'' और अब थिरता का भी कहीं पता नहीं है। अंग-अंग, रोम-रोम में अस्थिरता घर किये हुए है। थिरता को तो मानों स्वयं ही तिलांजली दे दी है। अस्थिरता भी है या नहीं, मुझे कुछ पता नहीं है। मैं बिगड़ू या बनूँ, किन्तु न जाने क्या हो गया है कि मेरे काबू में कुछ नहीं रह गया है। मुट्ठी दोनों ही खुली हुई हैं। न कुछ भीतर ही बन्द है, न बाहर ही कुछ पल्ले हैं, बस तड़पने के लिये तड़पती हूँ।

न जाने क्या बात हो गई है कि देखती हूँ कि मेरा मन 'आप' ही हो गये हैं, क्योंकि अब न मुझे मैं के बनने की चिन्ता है और न बिगड़ने की परवाह है। न गिर जाऊँ तो कोई बात है, न ऊपर उठ रही हूँ तो कोई बात है। मेरे मन में मेरे सम्बन्ध की बात से अपने को अलग ही कर लिया है,चाहे बिगड़ जाऊँ, तो भी, चाहे बन जाऊँ, तो भी। ऐसा सम्बन्ध तोड़ा है, जो मानों कभी अपना था ही नहीं। यहाँ तक कि Spirituality से भी सम्बन्ध तोड़ कर उससे भी अलग हो गया है। यही नहीं, कहाँ तो प्रियतम 'मालिक' का क़ैदी था, किन्तु अब तो फरार हो गया है। अब तो उसे (यानी मन को) अपना कहने में भी मुझे उससे कोई अपनायत नहीं रह गई है। किन्तु मेरे 'मालिक' उसने अपने गुनाहों के फ़न्दे में 'मालिक' को फाँस दिया है। इसलिये कि जब तक गुनाह (गलतियाँ) यानी तड़प की तड़प होती रहेंगी, 'मालिक' को उन्हें दूर करने के लिये स्वयं उसकी फ़िक्र करनी ही होगी। अब तो प्रभु ''बिना भक्ति तारो, तब तारिबो तिहारो है''। गुनाहों से मेरा मतलब अपनी कमियों, नासमझी से है न जाने क्या बात है कि अक्सर मुझे यहाँ यह भ्रम होने लगता है, कि मैं केसर के पास हूँ या कहाँ हूँ। यही हाल Train में था कि यदि बार-बार सामान को देखकर यह मानों कुछ ख्याल सा आता था कि ये मेरे साथ सामान है, बार-बार याद करना पड़ता था।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-703

प्रिय बेटी कस्तूरी बिलारी कैम्प

शुभाशीर्वाद! 20.5.59

पत्र तुम्हारा गुलबर्गा में मिल गया था। मैं 4-5 जगहें घूमता-घामता बिलारी पहुँच गया और बिलारी से 22 मई को तिरूपति जाऊंगा। तारीख 31 को मद्रास 2 दिन और त्रिचनापल्ली 4 दिन फिर लौटते में 2 दिन मद्रास रहकर 5 दिन विजयवाड़ा रहूँगा, फिर शाहजहाँपुर के लिये चल दूंगा। श्री राघवेन्द्र राव के ब्रांच में करीब-करीब 70 आदमी हो चुके हैं और आगे बढ़ने की उम्मीद है।

दूसरी मई को मैंने तुम्हें S1 के स्थान पर डाल दिया और वहीं की हालत को तुमने सादगी के रूप में पत्र में लिखा है। सादगी का भी अन्त होना है। अब तुम्हें थकान नहीं मालूम होती होगी। यह सुनकर खुशी हुई कि चौबेजी की तबियत अच्छी है।

अम्मा को प्रणाम। तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-704

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी लखीमपुर

सादर प्रणाम! 3.6.59

कृपा-पत्र आपका मिला। समाचार मालूम हुए। यहाँ भी सभी लोग कुशल पूर्वक हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूं।

अब तो भाई, यह दशा है कि न जाने क्यों अब कलम रूक गई है। लिखने बैठती हूँ, किन्तु कोई ख़्याल ही नहीं, तो फिर लिखूँ क्या? एक अजीब उदासी तो नहीं कह सकती, वरन् एक शून्य दशा ही मेरे अन्तर-बाहर व्याप्त हो गई है। यही नहीं, वरन् स्वभाव में भी एक स्वाभाविक शून्यता ही घर कर गई है। न जाने क्या बात है कि चाल में थकान आते ही मन उचटा उचटा सा रहने लगता है। किसी भी काम में तबियत लगती नहीं। एक अजीब बेबस और बेचैन दशा हो जाती है। किन्तु थकान दूर होते ही दशा में पुन: जिन्दगी आ जाती है और तबियत स्वभावत: ही स्थिर हो जाती है। मेरी तो यह दशा है कि जब तक 'आप' की याद रहे, या तो मेरी ओर से, या 'आप' की ओर से तभी तक मेरी ज़िन्दगी व चाल है, नहीं तो केवल राख ही राख है। लगता है कि दीन और दुनियाँ, दोनों को ही निचोड़ कर मेरी जिन्दगी में से, उसे किसी ने नीरस बना दिया है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-705

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 8.6.59

पूज्य मास्टर साहब जी के लिये आप का पत्र आया, पढ़कर प्रसन्नता हुई। मैं अपनी सेहत के लिए जरूर परिश्रम करूँगी। आप का लिखा हुआ एक-एक शब्द मेरी नस-नस में घुसकर ताक़त पैदा करता है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो दशा कुछ यह हो गई है कि मैं वह लिखती हूँ, जिसकी मुझे तमीज़ नहीं है। मैं वह कहती हूँ, जिसका अर्थ मुझे मालूम नहीं। जाने क्या दशा है मानों 'मालिक' ने अपनी ग़रीब बिटिया की चादर ज्यों की त्यों उतार कर रख दी है। मुझे तो यह भी भूल गया कि मुझे 'मालिक' को कुछ देना है, या लेना है, यहाँ तक कि मैं तो 'उन्हें' याद रखना भी भूल गई हूँ। अब तो यह दशा है कि भीतर-बाहर, रोम-रोम का Connection मुझसे टूटकर समाप्त हो गया है। ज्यों ज्यों दिन जा रहे हैं, बेचैनी को एक क्षण को भी करार नहीं मिलता है, बेचैनी बढ़ती ही जाती है। कसक मानों फोड़ा बन कर दुख रही है, मानों अपनी सारी माया समेट कर भीतर-बाहर, कण-कण में से, वह मायापति अंतर्ध्यान हो गया है। मेरे अन्तर-बाहर की कुल केंचुल उतार कर 'वह' छलिया मुझे छलकर न जाने कहाँ चला गया है। अब मैं कहाँ हूँ, क्या करती हूँ, या क्या करूँ, कुछ भी पता नहीं है, किन्तु हैरत होते हुए भी अब न जाने क्यों मुझे हैरत नहीं है। मानों सब रंग बनावटी था, जो धूप में उड़ जाता है, बस ऐसी ही दशा मेरी हो गई कि सब रंग उड़ गया और मुझे कुछ पता ही न चला। दशा में तो 'मालिक' की कृपा से परिवर्तन होता ही रहता है एवं उन्नति परन्तु साथ ही साथ एक बात मैं यह देखती हूँ कि एक दशा मेरे अंतर में ऐसी बराबर बनी रहती है, जो अपरिवर्तनशील है, बदलती नहीं, बल्कि अब जो दशा बदलने वाली होती है, वह बदल कर मानों उसी अपरिवर्तनशील दशा में मिल जाती है, उससे ही एकाकार हो जाती है। सब कुछ मानों अपरिवर्तनशील ही हो गया है। बस अन्तर में केवल कोई एक दशा ही ऐसी है जिसका रूख व रट दिन-दिन उन्नति करने पर ही उतारू रहता है और वही बेचैन है। किन्तु ये सब कुछ क्या है, यह मुझे बिल्कुल कुछ भी पता नहीं है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-706

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 22.6.59

मेरा एक पत्र जो पूज्य मास्टर साहब जी के हाथों भेजा था, सो मिल गया होगा। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो मेरी कुछ यह दशा है कि पता नहीं अन्तर में कहीं कोई अदृश्य पीड़ा ऐसी छिपी हुई है कि जिसको कोई आराम न तो अब अनुभव में ही शक्ति है, जो दे सके और कोई भी उपाय अब नहीं है।

मेरी तो कुछ न जाने दशा कुछ इतनी सुन्न सी हो गई है कि पैर में सुई गड़ गई, हाथ थोड़ा सा जल गया, किन्तु कुछ पता ही नहीं चलता कि किसका जल गया है, किन्तु होश पूरा बना रहता है। Absent Mind कभी होती ही नहीं। पता नहीं कुछ यह हो गया है कि काम-वाम में तो कोई कमी आती नहीं। एक न जाने यह क्या बात हो गई है कि 'मालिक' को याद करने की याद किसी तरह आती ही नहीं और अंतर का मुझे कुछ यह अन्दाज़ा लग गया है कि जल से निकलने पर मछली की कैसी दशा होती है। अब कुछ यह दशा है कि दिल और दिमाग़ एक हो गया है। कुछ ऐसी दशा, जहाँ पर संसार के कुविचार या कुव्यवहार या गुण-अवगुण कोई पहुँच ही नहीं पाते हैं। इतना ही नहीं, विचार भी बुरे, अच्छे, शुद्धता, अशुद्धता कुछ भी वहां पहुँच नहीं पाती। सांसारिक कीचड़ से परे एक अविचल व अविराम गति है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-707

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 12.7.59

मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। मेरी तबियत बिल्कुल ठीक है। आशा है आप भी स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो Sitting मुझमें आती नहीं। 'आप' से पूजा करने में भी यही दशा बनी रहती है, किन्तु एक नई बात देख रही हूँ कि अन्दर ही अन्दर मानों अपने आप ही अपने से Sitting या कुछ सहारा मिलता रहता है। दशा तो ऐसी है कि जैसे जल के बिना मछली तड़पती है और है भी यही कि यदि यह अन्दर ही अन्दर, जो कुछ मेरे होता रहता है, वह न हो तो प्राण एक सेकण्ड भी ठहर नहीं सकता है। कभी-कभी तो तड़प जब Limit Cross करने लगती है, तब तो 'आप' का स्वरूप एक क्षण को हृदय में आकर फिर तुरत ही गायब हो जाता है, किन्तु तब कुछ चैन मिल जाता है। याद की भी याद नहीं आती तो न आवे, परन्तु मैं कुछ नहीं कर सकती हूँ। सच तो यह है कि 'मालिक' ने मुझे ऐसा तरसाया है, लेकिन मेरी शिकायत तो यों अधूरी रह जाती है, जब मानों कहीं से 'मालिक' की आवाज़ आती है, कि ग़ल्ती तुम्हारी है, 'मालिक' के ख़्याल को ख़्याल में ला ही नहीं सकती हो कुछ ऐसी दशा है कि मानों जहाँ पर सारी जलन, खुजली व तकलीफ़ें बिलाकर समाप्त हो गई है।

भाई, अब तो यह दशा है कि न जाने कुछ ऐसा लगता है कि समस्त ईश्वरीय-शक्ति मेरी आज्ञा की प्रतीक्षा में रहती है। मैंने ऐसा देखकर, उस शक्ति को, सम्पूर्ण भारत वर्ष में, लखीमपुर में व समस्त पृथ्वी पर श्री रामचन्द्र मिशन का प्रचार हो जावे, घर-घर में डगर-डगर व नगर-नगर में मिशन का प्रसार हो इसमें ही लगा दिया है। जन-जन में उत्साह, प्रेम और दृढ़ता की बढ़ती हो, सारी शक्ति इसमें ही लगी है और ऐसा होकर ही रहेगा, इसमें संशय नहीं। दूसरे यदि हो सके तो शीघ्र से शीघ्र मुझे मेरे 'मालिक' तक पहुँचा दे, ऐसी ही मेरी प्रार्थना है। अजीब दशा है कि एक तरफ़ तो मालिकत्व है और दूसरी ओर विनती है, किन्तु है सो है ही ''मालिक'' जानें सब कुछ।

मेरी तो जीवन की डायरी 'उन्हीं' के हाथों में है, जो चाहें सो भर दें, जो चाहें, सो कर दें। किन्तु मानों जीवन की डायरी में अभी तक कुछ भरा नहीं गया है, ऐसा ही मुझे आभास होता है। मैं आपसे पूछती हूँ कि कहीं यह सूक्ष्म अभिमान तो अन्दर नहीं हो गया, किन्तु ऐसा भी हो नहीं सकता, क्योंकि आपने एक बार कहा था कि अभिमान तो बिटिया, तुम तक पहुँच ही नहीं सकता, तभी इसका डर ही नहीं, फिर दूसरे, यह सब कुछ होते हुए भी तबियत स्वतंत्र है। न कोई ख़ास ख़ुशी है, न कोई चिन्ता है। पता नहीं कब और क्यों रो देती हूँ, पता नहीं कब हँस देती हूँ।

अब तो देह धरने का भी दण्ड मुझे नहीं है, क्योंकि उसका तो नाता ही मेरा छूट गया है, क्योंकि मैं देखती हूँ कि मैं लाख कस्तूरी आवाज़ देती हूँ, परन्तु वह कभी उत्तर ही नहीं देती और मुझे क्या, किसी को भी कभी कोई उत्तर ही नहीं मिलता है। कुछ ऐसी अजीब दशा है कि कभी तो मास्टर साहबजी के लिए भी मानों मैं उनकी माता के सदृश अपने को पाती हूँ और वे बिल्कुल बालवत् मेरे लिये हो जाते हैं और कभी मानों मैं उनको आज्ञा भी प्रदान करने लगती हूँ, परन्तु कभी मानों मैं स्वयं उनकी छोटी बिटिया बन जाती हूँ। पता नहीं यह सब क्या है। मेरी आंतरिक स्थिति तो एक संसार में बिल्कुल ही अनुरक्त प्राणी की तरह है, जिसे उससे जागने का कभी होश ही नहीं आता है और न जिसे कभी कोई और तमन्ना चाहे सांसारिक व आध्यात्मिक ही होती है किन्तु इतना अनुरक्त होते हुए भी अंतर की एक कसक में मछली को पानी से निकाल देने की ही भाँति तड़प में कोई अंतर न होगा, यही दशा है। कुछ ऐसी दशा है कि हर आज्ञा प्रकृति को ही नहीं, वरन् सचराचर विश्व को ही मैं देती हूँ, यद्यपि देती मैं कुछ भी नहीं हूँ। अब कुछ न चाहते हुए भी मैं 'मालिक' से सब कुछ चाहती हूँ। जिसको जो कष्ट या कमी देखती हूँ, चाहे वह कोई हो उसी के लिये 'मालिक' से प्रार्थना करने लगती हूँ। ऐसी दशा है मानों शरीर में कोई तत्त्व ही नहीं रह गया है। आँख में देखने, कानों में सुनने इत्यादि का कोई मानों तत्व ही नहीं रह गया है। न जाने कब कैसे कुछ दिखाई पड़ता है, कब कैसे सुनाई पड़ता है, मुझे कुछ पता नहीं। यहाँ तक कि अनुभव तक में कोई तत्व नहीं रह गया है, चाहे आत्मिक दशा अनुभव करूँ या न करूँ। अब मुझे ऐसी दशा में यह फिक्र जरूर हो जाती है कि बड़े लोगों से कोई बेअदबी वाली बात न हो जाये। इसलिये यह अब बड़े लोगों पर ही है कि वे यदि मुझसे कोई ग़ल्ती बन पड़े तो क्षमा करते रहे, 'मालिक' से मेरी यही प्रार्थना है। अब तो 'मालिक' ही सम्भालेंगे, क्योंकि चारों ओर भीतर-बाहर, अपने कण-कण में एक नवीन शक्ति का संचार पाती हूँ, जिसमें स्वामित्त्व की खबर आती है, यद्यपि मैं मुख तो अपने 'मालिक' की ओर किये हूँ, 'वही' सब ठीक कर लेगा। बाकी सब आप जानें। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तुरी

पत्र संख्या-708

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 16.7.59

मैं एक पत्र आप को लिख चुकी हूँ, मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो ज्यों दिन बीत रहे हैं, कसक फोड़ा बनकर दुख रही है। किन्तु अब यह दुखन ही स्वप्न में फोड़ा निकलने की तरह होती है। कभी आभास होता है, कभी फिर शून्य दशा हो जाती है, किन्तु अब यह दुखन भी मानों मेरे स्वरूप में ही मिल गई है। इसका अनुभव होते हुए भी नहीं होता किन्तु कुछ भी हो, यह दुखन ही अब मेरे सुख के दीपक की लौ है। अब तो तबियत शून्य और सरलता का ही रूप बन गई है। इनके भी अस्तित्व का अब कहीं पता नहीं है। न जाने कैसी दशा है कि न मेरे में कोई रौ है और न लौ है जो कुछ भी हो, 'मालिक' ने तरसा-तरसा कर मुझे मार दिया है। अब तो तरस भी जाती रही। अब तो दशा एक अविचल व अविराम गति व अपरिवर्त्तनशील हो गई है। अब तो दशा में एक Natural Change अन्दर ही अन्दर होता रहता है, किन्तु अब मैं कभी-कभी तो कह ही नहीं पाती हूँ। लिखना चाह कर भी दशा को व्यक्त नहीं कर पाती हूँ, परन्तु फिर भी अन्दर ही अन्दर मानों 'मालिक' सब अपने आप ही सुनता रहता है। अब तो 'मालिक' का व मेरा अन्तर एक ही में समा गया है, मानों एक ही प्रशान्त सागर प्रवाहित है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव ही कृपा-कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-709

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 23.7.59

बहुत दिनों से 'आप' का कोई पत्र नहीं मिला। कृपया अपना समाचार जल्दी दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो प्रतिपल 'मालिक' से मिलने की छटपटाहट होती है। दूसरी तो स्वप्न में भी कभी इच्छा कोई होती ही नहीं और लगता है कि मानों मन ही गलकर समाप्त हो गया, सो इच्छा आवे कहाँ से। परन्तु यह इच्छा जाने कहाँ और न जाने क्यों हैरान करती है कि 'मालिक' मुझे अपना बना ले और यह रटना मन में ही नहीं वरन् मानों मेरे कण-कण में भिदी हुई है।

कुछ ऐसी दशा है कि यदि एक क्षण को कभी होश का अन्दाज धुएँ की तरह तबियत में आता है, तभी बेहोशी का भी अन्दाज़ होने लगता है। सारे विचार धुएं की तरह कुछ दिमाग़ में आते जाते रहते हैं। न उनकी कोई शक्ल होती है, न उनका कोई Impression होता है। ध्यान का यह हाल है कि जब तक यहाँ 'आप' के सामने बैठी 'आप' को देखती रहती हूँ, तब तक तो 'आप' की शक्ल का कुछ आभास मिलता रहता है, व कुछ एकता का भी कभी धुएँ की तरह अन्दाज़ लग जाता है, परन्तु जहाँ आप के कमरे से दूसरे कमरे में आई, तो फिर कोशिश किये जाने पर भी आप को Totally भूल जाती हूँ। यही नहीं अक्सर तो 'आप' को देखते रहने पर भी भूली ही रह जाती हूँ, परन्तु एक कोई होश बेचारा, मेरा जो साथी है, वह कभी-कभी झलक अपने 'श्री बाबूजी' की दिखा जाता है। इतना ही नहीं, 'आप' की सब बातें, आवाज़ कानों में पड़ती रहती

हैं, तो ऐसा कभी हो जाता है, जबकि पूर्णतय: Attentive रहने का प्रयत्न करती हूँ कि मानों आवाज़ जैसे कहीं दूर से सुनाई पड़ती है, ऐसी ध्वनि कानों में पड़ती रहती है, परन्तु वे धूमिल से आप की शब्द ध्वनि आप की वह प्रेममयी धूमिल सी ही छाया पर ही मैं बलिहार हूँ। जब मैं कोशिश करती हूँ कि मैं आप की बातों की अधिक ध्वनि सुन सकूँ, तो साफ़ मालूम पड़ता है कि मानों इससे अधिक कुछ नहीं हो सकता है। न इससे अधिक रोशनी और न इससे अधिक कानों में सुनने की शक्ति है। तब लाचार हूँ, किन्तु इतना आश्चर्य फिर भी है कि आप की बातों को लिखने बैठती हूँ तो लिख सभी लेती हूँ। कोई बात रह नहीं जाती है। इसमें मानों Sub-Conscious Mind मेरी मदद कर देता है, परन्तु वह भी मेरा साथ नहीं देता है, न मुझसे कोई सम्बन्ध ही रखता है। मैं उसे जोड़ना भी चाहती हूँ, आप के स्मरण व ध्यान व 'आप' से प्रेम करने के लिये, तो भी मेरी इस अच्छी नियत से भी वह समझौता करने के लिये तैयार नहीं होता है।

अब मुझे लगता है कि Sub-Conscious Mind की जगह Rough Conscious Mind 'आप' के आगमन पर कम से कम मेरी मदद कर देता है।

'आप' यहाँ रहे, किन्तु जाते समय मैं आप को Bus-Stand पर पहुँचाने नहीं गई, क्योंकि वहाँ सबके सामने मेरी कलई खुलने की पूर्ण आशा थी (आंसुओं से)। मेरी समझ में एक बात आज आई कि यदि दूसरे का दर्द व कसक पैदा हो जावे तो अपना दर्द व कसक समाप्त हो जाती है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं और केसर प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आप की ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-710

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी लखीमपुर
सादर प्रणाम! 1.8.59

कल पूज्य मास्टर साहबजी आ गये। उनसे समाचार तथा आप की तबियत का हाल जानकर प्रसन्नता हुई, परन्तु आप की साँस की तकलीफ़ अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुई, जानकर फिक्र भी है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो ऐसा लगता है कि अंतर की आवाज़ आती है, जीवन धन्य हो गया है। स्वत: ही यह गूँगी आवाज़ उठती है, किन्तु मुझे यह पता नहीं चलता कि ऐसा क्या हो गया है, जो अन्तर से स्वत: ही यह मूक, मौन आवाज़ आती है।

भाई, अब मुझे तो कुछ ऐसा लगता है कि मेरे अंतर-बाहर, शरीर व मन का भी कण-कण बिखर गया है और हर कण-कण में से मानों 'बाबूजी'-'बाबूजी' की ही ध्वनि स्वत: ही आ रही है। मैं यद्यपि उस पर भी दृष्टि नहीं जमा पाती हूँ, इसलिये भूल-भूल सी जाती हूँ, परन्तु यह ध्वनि सदैव एक समान गति से ही हुए जाती है, मेरी दृष्टि उधर जाये या न जाये, मानों मेरा कण-कण मेरी इस बात में सहायता करना चाहता है कि मुझे अपने 'बाबूजी' की याद आ जाये, परन्तु मैं तो चिकना घड़ा हो गयी हूँ। सुनते हुए भी नहीं सुनती बिल्कुल पत्थर हो गई हूं। सम्बन्ध नाम की तो मेरे अन्दर कोई चीज़ ही नहीं

रही है। यह शब्द अब मेरे लिये कोई महत्त्व ही नहीं रखता है। परन्तु मैं देखती हूँ कि दुनिया में मेरे सम्बन्ध का मानों फैलाव हो गया है। हर एक का अन्तर से मानों मेरा सम्बन्ध ही है। बहुत प्रयत्न करने पर भी व्यवहार को अन्तर की स्थिति से फ़र्क नहीं रख पाती हूँ। मेरे कण-कण में केवल श्री बाबूजी, श्री बाबूजी की ध्वनि ही नहीं निकल रही है वरन् मानों कण-कण आप की अनुपम शक्ति से भरपूर होकर आनन्द से विह्वल हो उठा है, परन्तु बस केवल एक मैं ही ऐसी हूँ, जो इस सब आनन्द से अलग दुनिया में जा बसी हूँ। जहाँ न कोई ठिकाना है, न बेठिकाना है, न पता है, न बेपता है, न कुछ है, न नकुछ है, वहां तो बिल्कुल साफ़ कोरा मामला है, न लाग है, न लपेट है।

अम्मा आपको प्रणाम कहती है। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेह सिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-711

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 2.8.59

आशा है मेरा पत्र पहुँचा होगा। आशा है आप सकुशल और स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कण-कण बिखरा पड़ा हुआ है और अथाह दिव्यानन्द से एक-एक ज़र्रा भीतर-बाहर सब भरा हुआ है। परन्तु मेरी यह दशा है कि मैं इसे देखकर प्रसन्न हो लेती हूँ, परन्तु मुझे लगता है कि मैं तो केवल देख-देखकर ख़ुश होने के लिये हूँ। स्वयं मुझे कोई भी दशा स्पर्श नहीं हो पाती है और मुझे लगता है कि इतना अथाह आनन्द मैं झेल भी नहीं सकती। ज़रा सा आनन्द अपनी ओर आते ही या यह कहिये कि एक-एक कण में इतनी अथाह चीज़ है, प्रकाश है कि उस एक कण के अनुभव को ही मुझे झेल नहीं है। मुझे लगता है कि अब तो हर चीज़ से, हर ज़र्रे-ज़र्रे से रोशनी निकल रही है। बस मैं ही अंधी हूँ, किन्तु आज से कुछ ऐसा लग रहा है कि यह सारी दशा व सारा Vibration मेरे हृदय में समाता चला जा रहा है और वहाँ सब कुछ हज़्म हो जाता है। मुझे तो अपने इस पत्थर हृदय के कारण यह तक पता नहीं चल पाता है कि ये मेरी दशा है या मैं सब केवल देख रही हूँ। पता नहीं मुझे इसका आनन्द भी आ पाता है या नहीं। खैर, न सही, 'वे' मेरे हैं और मैं उनकी ही हूँ।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार।

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-712

प्रिय बेटी कस्तूरी — मद्रास
शुभाशीर्वाद! — 8.8.59

पत्र तुम्हारा दिनांक 1 अगस्त का मिला, पढ़कर हर्ष हुआ। तुमने अपनी हालत लिखी है कि कण-कण ईश्वर की याद में मालूम होता है। यह हृदय की चौथी हालत है। यह सब हालत दिल

की हर जगह घूम फिर कर आती रहती है। फिर यह हालत रहते हुए भी आगे चलकर अनुभूति में नहीं आती। मैं तुम्हारे पत्रों का जवाब इसलिये नहीं देता कि अब तुम्हारी हालत का बयान करना बड़ा कठिन है। तुम लखनऊ चली गई तो वहां से शाहजहाँपुर आना बड़ा सहज है।

तुम्हारे चाचा जज साहब जब से रिटायर हुए, खूब मेहनत कर रहे हैं और प्रेम बढ़ रहा है। अगर इलाहाबाद में कुछ सत्संगी उन्हें मिल जायें तो मैं उनसे Training का काम लेना शुरू कर दूँ। मगर वे बेचारे इतने सीधे हैं कि सत्संगी बना नहीं सकते और Higher circle में जहाँ उनकी पहुँच है, वहाँ सीखने वाले कम मिलेंगे।

चौबेजी व अम्मा को प्रणाम। तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक

रामचन्द्र

पत्र संख्या-713

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 12.9.59

कृपा पत्र आप का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'आप' की तबियत यूनानी इलाज से अब कैसी है। कृपया 'आप' अपनी तन्दुरूस्ती पर ध्यान रखें, अधिक काम न करें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

दशा तो अब बिखरी हुई है, एकत्रित नहीं लगती है। इसलिये तबियत भी एकाग्र नहीं है, बेचैन सी रहती है, यद्यपि हाथ से बाहर नहीं है। दोनों मुट्ठियाँ खुली हुई हैं। बिखरी दशा या बिखरी तबियत को एकाग्र कर सकने की भी क्षमता व शक्ति नहीं रह गई है। जब आत्मा और अंतर ही मेरे पास अब कुछ नहीं है, तो आत्मिक-दशा व आंतरिक दशा भी क्या हो सकती है।

अब तो मानों दशा का ज़र्रा-ज़र्रा बिखरा पड़ा है और मेरे में उसे समेट सकने की गम्य ही नहीं रह गई है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-714

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहांपुर

आशीर्वाद! — 28.9.59

तुम्हारे दो पत्र आये-हालत ईश्वर की कृपा से अच्छी ही है। Point by Point तुम्हें चला रहा हूँ। एकदम से यूँ नहीं ले रहा हूँ कि Pressure कहीं ज्यादा Mind पर न पड़ जाये। जितना आगे बढ़ती जाती हो, हर समय पूजा में होती हुई, पूजा से अलग-ही रहती

हो। जहाँ दुई है, वहाँ पूजा है, और जहाँ एक भाव है, तो पूजा किसकी? वह तो अपनी ही पूजा हो जाती है।

अम्मा व चौबेजी को प्रणाम!

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-715

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 14.9.59

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। यहाँ सब सकुशल है। आशा है 'आप' भी अब स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

आज 'आप' ने मुझे S1 point Cross करवा दिया और T1 point पर खींच दिया। उसी घड़ी से मेरे अन्तर में मानों बहुत आराम आ गया और जो बिखरी-बिखरी सी दशा थी, वह भी अब नहीं रही, बल्कि एक बहुत आरामदेह साम्य व सरल सी एवं सूक्ष्म सी अवस्था हो गई है। मानों कुछ न भीतर आता है, न जाता है। ऐसी दशा है मानों बहुत दूर का चला फिरा मनुष्य एक आरामदेह जगह में पहुंचकर जब बेख़बर सो जाता है, तब उस सोने में उसे जो भी, जैसा भी आराम मिलता है, वही आराम मुझे 'आप' ने दो मिनट में दे दिया है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-716

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 30.9.59

नारायण दद्दा से आप का समाचार मिला। आप स्वस्थ हैं, जानकर खुशी हुई। यहाँ सभी लोग सकुशल हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो कुछ यह दशा है कि न तो मेरा कभी एकीभाव होता है और न दुई ही मालूम पड़ती है। और भाई, मैं तो जब पूजा से ही अलग हूँ और उसी में एकी, दुई है, तो फिर मेरे में कुछ लग ही कहाँ से सकता है। फिर मुझे तो ठीक से ज्ञान तक नहीं कि यह एकी-दुई या भाव-कुभाव हो कि से सकते हैं। यही नहीं, इसकी सत्यता भी मन में आती नहीं है। मेरा तो यह हाल है कि मैं तो सब भूल गई। अब तो दुई या एकी भाव सब मुझे ऐसी नई बातें लगती हैं, जो कि मैंने कभी सुनी नहीं है। बल्कि अन्तर में या घट-घट में अब तो एक ऐसी मानों सम शीतलता व्याप्त हो गई है, बस गई है, जिसमें अब कोई कुछ भी चर्चा करे, चाहे पूजा या बेपूजा की, सब वहाँ ठंढी ही रहती है। अब तो यह दशा है कि- ''भैंस के आगे बीन बजाई, भैंस बैठि पगुराये''।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-717

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 22.10.59

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। हकीम की दवा से आप को लाभ हुआ जानकर खुशी हुई। ईश्वर से हम लोगों को यही प्रार्थना है कि आप हमेशा स्वस्थ रहें। अब 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ यह दशा है कि यदि अंतर में आनन्द आये, तो भी मैं अपने जामे के अन्दर आ ही नहीं सकती। मुझसे कुछ सहा ही नहीं जाता है। बस जामे के बाहर से ही एक उड़ती नज़र, एक भूले पथिक की तरह से पड़ जाती है।

आज रात ऐसा हुआ मानों स्पष्ट 'आप' की आवाज़ आ रही है कि-''बिटिया, तुम्हारा तन-मन, प्राण व सूक्ष्म और कारण मैं हूँ। तुम इतनी उदास क्यों हो?'' किन्तु फिर भी मैं केवल आप की आवाज़ भर सुन सकी, स्वयं 'आप' के दर्शन न कर सकी। मैं भी अब 'आप' की कोई बात एवं कोई सांत्वना न सुनूँगी, जब तक 'आप' दर्शन न देंगे। वैसे, जैसी 'आप' की इच्छा। मुझे सब ज़ब्त है, परन्तु यह अवश्य है व मेरी 'आप' से शिकायत है कि मेरी उन्नति मेरे मन माफ़िक नहीं होती। आज पता नहीं क्यों वह पावन प्रेममयी ध्वनि मुझे बराबर भूलती जा रही है। तबियत में अथाह उदासी है, जो कि एक मिनट भी हटाने से भी नहीं हटती है। पता नहीं चाल रुकी हुई है, या क्या बात है, यह तो 'आप' ही जानें।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-718

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 9.11.59

कृपा-पत्र 'आप' का बहुत दिनों से नहीं आया है, सो क्या बात है। कृपया अपनी तबियत का हाल शीघ्र दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्या बात है कि जैसी दशा 'मालिक' मुझे देता है, मैं सत्संगी भाइयों को उसका आनन्द नहीं दे पाती हूँ। खैर, मुझे तो 'मालिक' की कृपा से उनकी उन्नति चाहिये, बस। सच तो यह है कि जो दशायें मुझे मृत्यु के बाद मिलनी चाहिये थीं, वे 'मालिक' मुझे अभी देता जा रहा है।

अब तो भाई, कुछ यह दशा है कि अक्सर जब ख्याल 'आप' की ओर ले जाती हूँ तो एक तो बड़ी कठिनाई से ख्याल पहुँचा पाती हूँ, दूसरे जब 'मालिक' के पास ख्याल पहुँचता है तो,

जितनी देर ख्याल रहता है, कुछ ऐसी तड़पन पैदा हो जाती है, जैसे मछली को जल में से निकाल लेने पर या साँप से मणि छीन लेने पर होती है किन्तु इसमें भी मुझे अच्छा लगता है, परन्तु ऐसा चार-पाँच मिनट से अधिक नहीं होने पाता है क्योंकि तुरत ही कोई शक्ति मेरे ख्याल को वापिस फेंक देती है। इसके अलावा भी न जाने क्यों विचारों का ताँता सा पूरा ही रहता है। यह तड़पन की दशा तो जब तक मैं ठीक से सँभल भी नहीं पाती हूँ कि चली जाती है। किन्तु ऐसी दशा में भी अंतर में एक समान स्थिति ही बनी रहती है। वहाँ कोई भी परिवर्तन होता ही नहीं। मुझे तो अब यह वह दशा लगती है, जैसा कि मैं पहले लिखा करती थी कि दो हालतें साथ चलती हैं। एक तो बदला करती है, किन्तु दूसरी एक समान दशा का स्वरूप ही बन गयी है।

यही नहीं, केवल अंतर ही नहीं, बल्कि भीतर-बाहर मेरा कुल System भी वही स्वरूप बन गया है। इस पर भी स्वरूप शब्द लगाकर तो दशा को मैंने मानो जामा पहिना दिया है, किन्तु दशा तो मेरी जामें से बाहर है। तबियत अब अथाह उदासी का ही स्वरूप बन गई है, परन्तु न जाने क्या बात है कि जब इस अथाह उदासी में मैं प्रवेश करती हूँ, तो वहाँ सिवाय महाशून्यता की दशा ही व्याप्त मिलती है। सच तो यह है कि पता नहीं मेरी दशा क्या है? जब 'आप' कुछ लिख देते हैं, तब कुछ समझ जाती हूँ, नहीं तो गाँठ की अक्ल का तो मेरे लिये प्रश्न ही नहीं उठता है, जबकि गाँठ तो सब खुली पड़ी है। उसकी तो सलवट का भी कहीं पता नहीं है। मुझे तो लगता है कि मेरा कण-कण Powerless पड़ा है। भिखारिन की झोली खाली की खाली ही पड़ी है, किन्तु मन में कुछ है। वह क्या है, यह भिखारिन भला क्या जानें। यह जानकर मैं मन को टटोलने का प्रयत्न नहीं करती कि यदि मन को टटोला और वहाँ भी शून्यता का अँधियारा ही व्याप्त मिला, जैसा कि धोखा मैं अक्सर खाती हूँ, इसलिये उदासीनता का स्वरूप बनी फिरा करती हूँ। फिर भी मेरे 'बाबूजी' मेरे जी में समा गये हैं, जो मैं किसी उदासीनता को भी 'उनके' पास जाते देखते ही बेचैन होने लगती हूँ।

दशा मेरी कुछ अच्छी नहीं है। चाल भी मन के माफ़िक नहीं है किन्तु 'मालिक' की जैसी इच्छा है, सब मुझे ज़ब्त है। पता नहीं क्या बात है कि कोई मेरे सिर पर हाथ फेरता है तो मुझे एकदम लगता है कि मानों 'आप' का हाथ सिर पर है और वैसा आनन्द भी आने लगता है। मेरी तो यह दशा लगती है कि 'मालिक' ने सारी ग्रंथि भी खोल दी हैं, तो भी वहां कुछ निकला नहीं और जगह भी चली गई। अब भला मैं 'उसे' कहाँ बैठाऊँ। सच तो यह है कि जो दशायें मुझे मृत्यु के बाद मिलनी चाहिये थी, वे 'मालिक' मुझे अभी दिये जा रहे हैं।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-719

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम!

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। इधर मेरी तबियत थोड़ी गड़बड़ हो गई थी, किन्तु अब ठीक हूँ। 'आप' चिन्ता न करें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, न जाने कुछ यह दशा देख रही हूँ कि मेरे अन्दर तो न ईश्वरीय- धारा और न ईश्वरीय-प्रकाश ही है, सब अंधेरा पड़ा है। बल्कि अंधेरा मेरा स्वरूप ही हो गया है, किन्तु यह आश्चर्य कि अपने चारों ओर एक दिव्य-ज्योति बिखरी पाती हूँ। यही नहीं, अब तो वही दिव्य-ज्योति कुल मानों ब्रह्माण्ड में, मानों एक समान ही व्याप्त हो गई है और अजीब है यह दिव्यता कि न तो मुझे इसमें कुछ ईश्वरीय-प्रकाश और न ईश्वरीय- धारा की ही महक मिलती है, परन्तु शब्द दिव्यता ही निकलता है,दूसरा नहीं, इसलिए जो है, सो है। कुछ यह बात मैं देख रही हूँ कि जो पत्र में मैंने आप को अपनी घोर उदासी की दशा के बारे में लिखा है, वह भी कोई दिव्य-अवस्था है। क्या है? यह मुझे पता नहीं और जानना चाहने पर एक शून्य दशा ही उसके अन्तर में व्याप्त मिलती है, जिसे चाहे नितान्त अँधेरा ही कह लीजिये। ऐसा लगता है कि दशा में कोई सार नहीं है, नि:सार हालत है, परन्तु अब हालत के लिये न जाने क्यों दिव्य शब्द ही निकलता है। क्या जाने यह 'मालिक' का क्या खेल है।

न जाने कुछ यह बात हो गई है कि जब मैं दूसरों को परोस कर खाना खिलाती हूँ तो उनके खा चुकने पर ऐसा लगता है कि मानों मैं ही खा चुकी हूँ। कुछ ऐसी दशा कह लीजिए कि यह केवल गुमान (ख्याल) ही मात्र होता है कि उजियाले का असर, बेअसर हो जाने के बाद, शेष कुछ नहीं, बल्कि यह कहते हुए भी अच्छा नहीं लगता है। ऐसा लगता है कि असलियत, चाहे वह कुछ भी हो, या न हो, के भी परमाणु घुल-घुलाकर अपनी असलियत खो बैठे हैं। न जाने क्यों अब तक ऐसा लगता था, बराबर से मैं किसी के साथ जा रही हूँ, चाहे यह ख्याल धूमिल ही क्यों न हो, परन्तु न जाने क्यों अब मैं ध्यान देने पर अकेला ही पाती हूँ और अकेलापन ही नहीं, वरन् मेरा तो अन्तर-बाहर, कुल स्वरूप ही यही हो गया है। यहां तक कि विचारों ने भी अब यही स्वरूप ले लिया है। यही नहीं, चाहे मैं किसी का हाथ पकड़े सड़क पर ही चल रही होऊँ, तब भी मुझे यह नहीं मालूम पड़ता है कि कोई मेरा हाथ पकड़े हुए है। नितान्त सूनापन ही दशा का रूप हो गया है, नहीं, नहीं, वरन् मेरा ही स्वरूप हो गया है। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-720

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 18.11.59

मेरा पत्र मिला होगा। आशा है 'आप' स्वस्थ होंगे। मेरी तबियत भी अब ठीक है। स्वास्थ्य लाभ हो रहा है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि जो कुछ अब तक देखा, यह सब मानों स्वयं अपना ही अपना करिश्मा था या भ्रम था, जो कि न जाने कब धुलकर साफ़ हो गया। कुछ ऐसी दशा है कि मानों अब तक की दृष्टि की धुँध साफ़ होकर अन्दर तबियत में कुछ आराम आ गया। यद्यपि अब ताज़गी का तो अनुभव नहीं होता, परन्तु जो है, सो है, या यों कह लीजिये कि जो है, सो नहीं है, जो नहीं है, सो है। जाने यह क्या दशा है। लिख तो दिया, किन्तु मेरी अब समझ में कुछ नहीं आता है।

मेरी तो अब यह दशा है कि जो मन में आता है, वह लिख नहीं पाती और जो लिखती हूँ, वह मन में आता नहीं। वह तो ज्यों का त्यों एक सार ही है।

भाई, अब तो मानों दिव्य-हालत का पर्दा फट गया है और वह दिव्यता चारों ओर छिटक रही है। पहले मैं जो लिखा करती थी कि आंखों के आगे अचानक एक दिव्य प्रकाश होकर फिर समाप्त हो जाता है। अब वही दिव्यता पर्दा फाड़ कर इधर-उधर, चारों ओर छिटक रही हैं। यही नहीं, कल से, जो भी लोग पूजा करते हैं मेरे पास, वे भी ऐसा ही बताते हैं कि आज तो एक दिव्य हालत, अद्‌भुत दशा का अनुभव हो रहा है। किन्तु मैं तो जैसे- ''भैंस के आगे बीन बजाई'' वाली बात, कि अब दिव्य-दिव्य सुनती हूँ, फिर भी न तो समझ ही दौड़ती है कि यह क्या है, और न कोई ऐसी खास बात ही लगती है। मैं तो यों ही लेती हूँ कि मेरे अंतर में और घट-घट में रमने वाले 'मालिक' ही नक़ाब खोलकर मेरी रग-रग में, नस-नस में व्याप्त हो गया है या मुझे ही चिपटा कर ऐसा बना लिया है।पता नहीं, 'उनकी' लीला, 'वे' ही जानें।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-721

प्रिय बेटी कस्तूरी | बेलारी कैम्प
शुभाशीर्वाद! | 3.12.59

तुम्हारा खत गुलबर्गा में मिला-यहाँ हर स्टेशन पर कुछ न कुछ सत्संगी बढ़े और गुलबर्गा और सेड़म में 100 आदमियों से अधिक हो चुके हैं। तुम्हारी आध्यात्मिक दशा बहुत निखरी हुई मालूम होती है।

मेरा प्रोग्राम दो महीने का था। अब मुकदमें के कारण कम करके एक महीने में पूरा करना है। कई जगह मैं जाना चाहता था, अब नहीं जाऊंगा।

अम्मा और चौबेजी को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-722

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी | लखीमपुर
सादर प्रणाम! | 4.12.59

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहाँ सभी लोग सकुशल हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो दशा कुछ ऐसा है कि ज़ीरो या शून्य रूपी दशा के दायें आप चाहें जो बढ़ाते जायें, तो कुछ नहीं, ठीक है, किन्तु यदि बायें बढ़ायें तो तबियत में तुरत घबराहट हो जाती है। इसलिये तबियत ज्यों की त्यों छोड़ दी है। तबियत शायद सरलता या नाजुकता का ही स्वरूप

बन गई है, या यों कहिये कि खुद मेरा ही स्वरूप बनकर छिटक गई है। अर्थात् दशा को कहने को अब आगे कुछ भी बढ़ाते जाओ, ठीक शब्द तो दिव्यानुभूति ही निकलता है। किन्तु उस ज़ीरो दशा के पीछे, कि बड़ी सरल या सूक्ष्म या सुन्न दशा है, तो ज़रा भी ठीक नहीं बैठता है। अब तो यों कहिये कि दशा खुद अपने से यानी दशा से ही उदासीन नहीं बल्कि खाली हो गई है। अब तो यों कह लीजिये कि ऐसी दशा है कि जो मैं अब तक लिखा करती थी कि बड़ी सरल सी दशा है, बड़ी विनम्र दशा एवं शून्य दशा है, तथा उदासीन दशा है, अब मुझे लगता हैं, यह सब कुल मिल गई है और खाली हो गई है। एक समान होकर मेरे चारों ओर एक दिव्यानुभूति की दशा के रूप में छिटक पड़ी है।

भाई, अब तो मैं देखती हूँ कि हर हालत में एक बेकैफ़ी की कैफ़ियत या बेदशा की दशा ही मेरे अन्तर में स्थित हो गई है। इधर-उधर कुछ सैर कर के फिर इसी Result पर या दशा पर आ जाती हूँ, बल्कि यूं कहना चाहिये कि 'मालिक' इसी दशा में कूट-कूटकर दृढ़ बना रहा है। नस-नस में भीतर-बाहर अब मैं यही बात पाती हूँ। वास्तव में तो पता नहीं कि ढोल के अन्दर पोल है या पोल के अन्दर ढोल है। मैं जो आकर्षण शक्ति के बारे में लिखा करती थी कि 'मालिक' हर क्षण मुझे खींचता रहता है, अब वह आकर्षण-शक्ति न जाने कहाँ चली गई। परन्तु मैं उस आकर्षण शक्ति की याद अपनी ओर खींचने की सदैव याद रखना चाहती हूँ, किन्तु सफलता पता नहीं कब मिल सकेगी और सफलता मिले भी कैसे, जबकि अंतर-बाहर का कण-कण यहाँ खुश्क पड़ा है। खुश्क याद के लिये अब ठहरने की जगह ही नहीं है, और खुश्क याद यदि लाई तो खुश्की ही लायेगी। मेरी दशा तो उदासीनता का पूरा स्वरूप ही बन गई है। अब तबियत में जूँ रेंगना भी चाहे तो रेंगती नहीं और रेंगें तो एहसास नहीं होता। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-723

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 16.12.59

कृपा पत्र आपका मिला। समाचार मालूम हुए। 'मालिक' की कृपा से ... आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, परसों से कुछ ऐसी दशा है, जिसे सिद्ध पुरूष कहते हैं, कि जो मन में आवे, वही होने लगे। किन्तु मैंने देखा कि यह दशा केवल दो दिन रही, उसमें भी अधिकतर उसकी (दशा की) याद भूली रही और अब मानों 'मालिक' ने उस पर पर्दा लगा दिया, किन्तु मेरी तो यह दशा हो गई है कि आध्यात्मिक दशा में भी मुझे कुछ अच्छा-बुरा नहीं लगता, सबका धन्यवाद ही दिल से निकलता है। यह भी Automatically (स्वत:) होता है। न जाने क्यों मैं तो केवल इतना चाहती हूँ कि 'उसकी' याद में हैरान व परेशान रहूँ। किन्तु मैं देखती हूँ कि मैं कभी कुछ होश आने पर जिसका अन्दाजा केवल 'उसकी' याद की याद के लिये, याद दिलाने के लिये

केवल एक परवाने मात्र की भाँति आता है, तभी कुछ आँख खुलती है, वरना कभी आँख ही नहीं खुलती। कभी इस बात की इतनी तकलीफ़ होती है कि हाय, इतनी बड़ी हस्ती सामने है, किन्तु मेरी आँखे ही नहीं खुलती। परन्तु कोई अपना वश नहीं। आँखे तो जबसे बन्द हुई, फिर खुली ही नहीं। हाँ, कभी उन खुली आँखों की याद का एक चित्र सामने से भागता निकल जाता है। क्यों? शायद याद की याद से मुझे परेशान करने के लिये। किन्तु मैं तो अब यह भी नहीं जानती हूँ कि मैं हैरान हूँ या खुश हूँ। अन्तर-बाहर, सारी दुनिया, मेरा Nature, सब खामोश ही खामोश है। दशा क्या है, न तो राहत है, न राह है। 'मालिक' मुझे दे भी तो कहाँ से, जबकि अपने पास न दिया है, न बाती। तेल तो यह तक पता नहीं कि कहीं मिलता भी है या नहीं परन्तु मुझे तो अन्धेरा ही मेरी रोशनी है। खामोशी ही मेरी तमाम चंचलता है (आगे बढ़ने की)। अब तो यह अंध-विश्वास ही मेरा सहारा है कि 'मालिक' मेरा है। मुझे 'उन' तक पहुँचना है। कहाँ, कैसे यह पता नहीं और यही मेरे अन्दर अब जीवन रहने का चिह्न है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-724

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 18.12.59

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। आशा है, आप सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, न जाने अब क्या बातहै कि ऐसा लगता है कि सच्चाई ही मेरा स्वरूप हो गया है। यही नहीं, मेरे भीतर-बाहर समस्त में सच्चाई ही व्याप्त है। मेरे नस-नस में, रोम-रोम में सच्चाई है, और ऐसी ही दिव्यता मानों मेरे सब ओर छिटकी हुई है। जो कुछ भी कहती हूँ, चाहे घरेलू बातें, व जो कुछ मुझसे होता है, मानों सच्चाई ही सच्चाई में बरत रही है। ऐसी हो दशा हो गई है। यद्यपि जब सच बोलने का मेरा प्रण था, तब भी मुझे यह बात कभी नहीं लगी। किन्तु अब तो मेरा स्वयं का कोई प्रण ही नहीं है और आश्चर्य तो यह है कि झूठ-सच मेरे लिये सब समान ही दशा लगती है, क्योंकि अब किसी के बारे में मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। जब से वह सिद्ध दशा की प्राप्ति वाली दशा का मुझे अनुभव हुआ, तबसे ही यह न जाने मुझे क्या हो गया है। सच तो यह है कि दशा 'मालिक' की कुछ हो, 'वही' जानें, परन्तु मेरी अपनी तो यह सच्ची दशा है कि मैं तो पत्थर की उस मूर्ति के समान हूँ, जिसमें जीवन और आत्मा का अभाव होता है। आँखें फटी की फटी हैं, साँस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे हैं।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-725

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 25.12.59

पूज्य ताऊजी कल यहाँ पहुँच गये। यहाँ सभी लोग सकुशल हैं। आशा है आप भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ ऐसी दशा है कि मानों अब अपने शरीर का स्वरूप क्या है, मैं ऐसी मूर्त्ति हूँ कि जिसमें न प्राण-प्रतिष्ठा हुई है और न जो जरा भी चार्ज की गई है। अब तो पूजा भी करवाती हूँ तो फैज़ का कहीं पता नहीं लगता। पता नहीं अब दूसरों की पूजा हो भी पाती है या नहीं। क्योंकि पूजा का प्राण फैज़ है और उसी का अभाव है।

इधर दो-तीन दिन दाहिनी भौंहों से लेकर ऊपर सिर तक एक कुल नाड़ी तमाम प्रकाश से जगमगाती अनुभव हुई। अब तो दशा यह है कि आँख खोलूँ तो और बन्द करूँ तो, कुछ फ़र्क नहीं पड़ता।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-726

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 8.1.60

आशा है, मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। मेरी कमज़ोरी अब ठीक है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई, कुछ यह दशा है कि अपने रोम-रोम में मानों एक संसार दिखाई देता है या जाने क्या है, जिसे मैं ठीक कह नहीं पा रही हूँ। रोम-रोम मानों शीशा हो गया है, जिसमें एक सरल या निर्दोष या नम्रता की दशा ही व्याप्त है। अपना कुल स्वरूप ही ऐसा ही बन गया है।

भाई, न जाने इधर करीब 8-9 दिनों से नींद बिल्कुल ही नहीं आती। बीच-बीच में जबरदस्ती की झपकी यदि आधा-आधा घंटे को आ भी जाती है, तो आँखों में या शरीर में ज़रा भी ऐसा नहीं लगता कि मैं सो गई थी। पहले दाहिनी भौंह के ऊपर से ऐसा लगता था कि एक नाड़ी मानों प्रकाश से जगमगा रही है, परन्तु अब तो न जाने क्या हो गया है कि कुल सिर व दिमाग़ की नसें जाग गई हैं और दिमाग़ रातभर, दिन भर कुछ करता रहता है। अच्छा या बुरा, यह मैं कुछ नहीं जानती। यही नहीं, कुल शरीर की नस-नस मानों जाग्रत हो उठी है। इसलिये शरीर में सोने का कोई चिन्ह कभी आने ही नहीं पाता है। अब तो 'मालिक' सुलावे, शायद तभी सोना हो सकेगा। न सोने की तकलीफ़ रात में तो कुछ मालूम भी पड़ती है, क्योंकि दिमाग़ में कुछ जो होता है, परन्तु दिन में जरा भी नहीं कष्ट होता है। जैसे दिन में यदि प्रयत्न करूँ तो सो भी जाऊँ, किन्तु रात में तो एक

मिनट को भी नींद या उसकी शिथिलता शरीर या दिमाग़ या आँखों में आती ही नहीं। पता नहीं यह सब मुझे क्या हो गया है और अब Occipital bone में बहुत जल्दी-जल्दी तेज दर्द उठने लगा है। वैसे थोड़ा तो होता हर समय है। न जाने क्या विचित्र दशा है कि मानों मेरे रोम-रोम में एक-एक ब्रह्माण्ड समाया हुआ है, किन्तु न जाने क्यों मेरी रास खिंची ही रहती है, कभी ढील नहीं आने पाती है। यही तकलीफ़ अधिक है। यह सब क्या है 'आप' ही जानें।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-727

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 9.2.60

आशा है 'आप' सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो यह दशा है कि लगता है कि जहाँ मिलौनी या प्रकृति का अन्त है, वही मेरी दशा है। यानी जिस स्थिति में मिलौनी के विचार का भी गम्य नहीं है, वही मेरी स्थिति है। वही मेरा स्वरूप है कि जहाँ कोई स्वरूप ही नहीं हो सकता है, अर्थात् मेरी तो यह दशा है कि Command मेरे हाथ में है, परन्तु काहे का Command यह तो मुझे कुछ पता नहीं है, क्योंकि दोनों मुट्ठियाँ खुली हुई हैं। कुछ ऐसी दशा है कि मेरी दशा में न आरम्भ है, न अन्त, न प्रारम्भ है, न भोग। बस जाने क्या है, जो मैं जानती नहीं। 'आप' ने एक बार मुझे लिखा था कि- ''तड़प अपना रास्ता खुद टटोल लेती है'' और मेरा यह हाल हुआ कि तड़प अपना रास्ता टटोलते-टटोलते स्वयं ही खो गई, बस मुझे एक चलचित्र की भाँति उसकी याद भर कभी आ जाती है। इससे अधिक मानों मेरा कोई हक़ ही नहीं है।

कुछ ऐसी दशा है कि बेचैन होते हुए भी अब बेचैनी नहीं होती। कहने को तो भाई, मैं यहाँ आ गई हूँ,परन्तु ऐसा आश्चर्य है कि मैं तो न यहाँ हूँ, न वहाँ, 'आप' के पास ही रह गई हूँ। यह अवश्य है कि अभी 'आप' मेरी आंखों में मेरे साथ चले आये हैं, किन्तु थोड़े दिनों बाद 'मालिक' मुझे अपना पता कहीं देंगे। क्योंकि इस समय तो जबरदस्ती मैं आँखों में 'आप' को बन्द किये हूँ। क्या करूँ, मेरे पास मन की कमी हो गई है, जहाँ 'आप' को बसा सकूँ। अब तो यहाँ वहाँ, कहीं भी पता नहीं मिलता और पते का भी पता नहीं, वह भी बेपता हो गया है। ता. 7 को सबेरे आप ने मुझे T_1 point से खींचकर U_1 पर कर दिया है। कुछ ऐसा है कि जब से एक Point की सैर समाप्त हो गई लगती है, तबसे फिर चाहे जितना प्रयत्न करूँ, हृदय पर बोझ सा ही रखा रहता है। यहाँ तक कि उत्सव में भी उत्सव के बाद जब तक आप ने Point Cross नहीं करवा दिया, वह बोझ हल्का नहीं हुआ और Cross करवाते ही मानों तुरत ही सारा बोझ उतर गया और एकदम सब हल्का हो गया। यह न जाने क्या बात है। यह तो आप ही जानें।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-728

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी लखीमपुर
सादर प्रणाम! 12.2.60

इधर बहुत दिनों से आप का कोई पत्र नहीं मिला। सबको चिन्ता लगी है। कृपया अपना समाचार शीघ्र देने की कृपा करें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ ऐसी दशा है कि जहाँ मन व विचारों की भी पहुँच नहीं है। बेहोशी की दशा में एक ऐसा होश है, जो कि बेहोशी की हालत को दबाये रहता है। बेहोशी की दशा का पता केवल उस समय लगता है कि जब कभी ठोकर लग जाती है और गिरते-गिरते बचती हूँ, उस समय उतनी ही देर को ऐसा लगता है कि बेहोश थी, किन्तु फिर होश ही होश रहता है, बेहोशी कभी आती नहीं है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-729

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी लखीमपुर
सादर प्रणाम! 22.2.60

आशा है 'आप' सकुशल होंगे। यहाँ भी सब सकुशल है। मेरा स्वास्थ्य भी अब ठीक है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

दशा के ऊपर मानों सपने का सा एक कुछ धुँआ सा सफ़ेद बादलों के समान रहता है, जो सरल ही सरल है। न जाने यह क्या दशा है कि चाहे शादी-ब्याह सबमें फिर आऊँ, तब तो एक समान ही दशा रहती है, परन्तु एक अजीब बात होती है कि यदि कभी ठोकर खा जाती हूँ या दीवार से लड़ जाऊँ तो एकदम से मानों एक प्रकार का होश आ जाता है और वह न जाने क्यों मुझे अच्छा लगता है। किन्तु मेरे ऊपर होश का ऐसा आवरण पड़ा है, जो बेहोशी भी नहीं आने देता और होश का पता भी केवल लड़ जाने पर ही एक क्षण को आकर फिर वापिस लौट जाता है, किन्तु होश में मुझे अपनी बेहोशी की दशा का अन्दाज़ मिलता है। मेरा तो सच में कहीं ठिकाना, पता ही नहीं मिलता है, न यहाँ, न वहाँ। बस कसक ही मेरा स्वरूप बन गई है,जो कि, जब कोई कस्तूरी को आवाज़ देता है, तो खुद कसक उत्तर दे देती है, जो जी में आता है। मुझे तो कसक भी अपने से दूर एक खोई हुई चीज़ लगती है। 'मालिक' ही मेरा हाल जाने, मैं तो बेहाल हूँ।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोट भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-730

प्रिय बेटी कस्तूरी | शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! | 27.2.60

पत्र मिला। ईश्वर का शुक्र है कि दक्षिण में चीज़ फैलना शुरू हो गई है। परन्तु मद्रास और Far South में अभी तक अच्छी कामयाबी नहीं हुई। मद्रास में मुझे जानते भी लोग 30-40 ही होंगे और यह देश भी बड़ा कट्टर हैं। मैं चाहता था कि कोई Editor अपना सत्संगी बने। चुनांचे एक Canarese पत्रिका के Editor मय अपनी धर्मपत्नी के सत्संगी बन गये। दोनों के खत आ रहे हैं और बड़े प्रेम के पत्र हैं। सारनाड जी का एक मज़मून "प्राणाहुति" उसी की पत्रिका में निकला है, जिससे Editor पर अच्छा असर पड़ा और वह अक्सर Canarees जबान में, इसी पत्रिका में Articles देते रहते हैं। यह अखबार Dharwar से निकलता है।

एक बात यह है कि जितनी जल्दी South India तरक्की कर रहा है, उतना ही कम North India के सत्संगी तरक्की कर रहे हैं। यह बात "लालाजी" साहब ने भी मुझसे कही थी। वहाँ तीन आदमी Central Region में पहुँच चुके हैं। दो अपने आप और एक को मैंने खुद भेजा है और यहाँ पर अभी तक सिर्फ एक, जिसको मैंने भेजा है। दक्षिण में अब चौथा आदमी Central Region से तो बहुत दूर है, मगर तैयारी जल्दी बढ़ने की कर रहा है। वहाँ के इतने उम्दा हाल मिल रहे हैं, कि यहाँ नहीं मिलते। चौबेजी अक्लमंद आदमी हैं। मेरी तरफ़ से उनसे कह देना कि इसकी वज़ह मुझे बतावें। तुमसे मैं यूँ पूछना नहीं चाहता (हलाँकि बताने में कुछ हर्ज़ नहीं) कि तुम वही जवाब दोगी, जो मैं जानता हूँ।

Point U_1 पर तो तुम पहुँच ही गई और तुम्हारे हाल बयान करने पर मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि यह शून्य-समाधि का स्थान है। गुरूनानक ने लिखा है- "नानक शून्य समाधि में, नहीं साँझ नहीं भोर"। आगे जाना क्या है? हर चीज़ सिमट-सिमट कर लय हो जाना है। लय अवस्था यहाँ तक बढ़ती है, मगर बहुत ऊँची हालत में कि Wisdom, Intelligence and Emotions, सब लय हो जाते हैं, यहाँ तक कि अनुभव भी। फिर उसमें से कोई चीज़ निकलती है, जो इन सब चीज़ों को फिर ताजा कर देती है। मगर इन सबका एक शुद्ध रूप हो जाता है।

अब मैं अपनी हालत पर गौर करता हूँ, तो नहीं मालूम यह सब चीज़े लय हुई या नहीं, क्योंकि मैं तो अपने आपको दुनिया में लटका हुआ पाता हूँ। आकबत की खबर नहीं, आध्यात्मिकता से पता नहीं कि कुछ चिमटाव भी है। मैं समझता हूँ, सब बातों का लिहाज़ करते हुए सही दुनियादार मुझसे बहुत अच्छे होंगे।

अम्मा व चौबेजी को प्रणाम। कोठी के बारे में क्या हुआ?

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-731

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 28.2.60

आशा है, मेरा एक पत्र मिल गया होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने यह क्या मेरी दशा है, कि अन्तर में मैं कैसे रहूँ व कैसे रहा जाता है, मैं ऐसा भूल गई हूँ कि बहुत सोचती हूँ, किन्तु याद नहीं आता है। शायद 'मालिक' याद दिलाये तो याद आवे और यही हाल दशा से चिपटने का है, व याद करने का है, कि मैं बहुत याद करती हूँ, कि कैसे दशा से चिपकूँ व 'उसकी' याद करूँ, तो खुद भी समझ में नहीं आता है, और सोचती हूँ, तो स्मरण भी नहीं आता है। जब कभी 'उसकी' याद व 'उससे' चिपटना ही नहीं तो याद क्या आवे, परन्तु मेरी जो भी दशा है, वह अन्तर में एक समान। दशा में भली ही लगती हूँ, क्योंकि जो 'मालिक' दे वही भला है। इसीलिए मीरा को सर्प व बिच्छू भी भला ही मालूम पड़ता था, क्या कहा जाय, उनकी परम दशा के लिये।

एक कुछ अजीब स्वप्न सा देखा, जो जागने की ही तरह अब भी स्पष्ट है कि मानों एक कोई आये हैं, तो मैंने दरवाज़ा खोला। मैंने पूछा- ''आप किसे पूछते हैं?'' वे बड़ी गम्भीर वाणी में बोले कि ''सुना है, यहाँ कोई संत है। उसे परम गति मिली है। इससे वह भी परम हो गये हैं''। मैंने कुछ सोचकर कहा कि- ''मैं उन्हें नहीं जानती'' कि अचानक जब मैंने सिर नीचे से ऊपर उठाया, तो देखा, सामने 'आप' प्रत्यक्ष खड़े हैं। मैं तुरत चरणों पर गिर गई, तो 'आप' ने बीच से ही मुझे उठाकर कहा- ''मैं तुम्हें ही देखने आया था''। फिर जब मैं आप को घर में लाऊं, तब तक आँख खुल गई। किन्तु वह दृश्य अब भी वैसा है सामने है और न जाने क्यों रह-रह कर मुझे रोमांच हो आता है। अंतर-बाहर में पता नहीं, एक कैसी आनन्द दशा कण-कण में व्याप्त हो गयी है। न जाने क्या बात हो गई है कि ईश्वरीय-प्रकाश इत्यादि का मानों मेरे लिये कोई मूल्य या विशेषता नहीं रह गई है। हाय, जो 'आप' सामने बैठे हुए भी मुझे नज़र नहीं आते, 'वे' परम प्रिय मेरे द्वार पर स्वप्न में ही जागृति के तौर पर दर्शन देने आये। कहाँ तक 'आप' को धन्यवाद दूँ। मेरे तो बस मुख से इतना ही निकलता है कि- ''ताहि अनूठी छवि पर, संध्या बार-बार बलिहार''। एक कुछ न जाने क्या बात हो गई है कि अब तक मैं पत्र में 'बाबूजी' लिखती आई हूँ, व कहती हूँ, किन्तु मुझे अब यह आभास नहीं मिलता कि यह किसके लिये लिखती व किसके लिये कह रही हूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-732

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 3.3.60

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। समाचार मालूम हुए। हमारा मिशन बढ़ रहा है जानकर बहुत खुशी हुई। केवल दक्षिण भारत ही क्या, हमारे मिशन को तो पूरी दुनियां में फैलना ही है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, सच तो यह है कि मेरी तो यह दशा है कि मानों 'उसकी' याद व दशा से कभी चिमटना था ही नहीं, तो विचार में कहाँ से आवे। अन्तर में कभी मानों रहनी हुई ही नहीं तो, उसकी याद कहाँ से आवे। मुझे तो ऐसा लगता है, ऐसी ठप या एक-साँ दशा है कि मानों वहाँ या उसमें कभी कुछ हुआ ही नहीं। न कुछ आना, जाना, न लहर, न हवा, न स्पन्दन, न कभी कुछ उठा है और न उठ सकता है। कुछ यह दशा है कि दशा के ऊपर तो मानों ऐसी ठप दशा की बन्दिश लग गई है, किन्तु भीतर ही भीतर मेरी गति या एक प्रकार का पैराव अविरल रूप से प्रवाहित है। यह बन्दिश ऐसी नक़ाब बनी हुई है कि इसके ऊपर देखिये तो कुछ नहीं और भीतर भी कुछ नहीं, किन्तु मैं वहाँ चल रही हूँ। मेरी गति प्रवाहित कहाँ हो रही है, यह मैं भी नहीं जानती हूँ। हाँ, बाहर से देखने वालों की दृष्टि इस बन्दिश के भीतर नहीं देख सकती है, न कुछ पहिचान सकती है।

कुछ ऐसी दशा है कि मैंने जैसा एक बार आप को लिखा था, कि जिस हालत की वजह से सब मेरी हालतें अब तक होती या बदलती चली आ रही हैं, वह हालत मेरा स्वरूप बन गई है, किन्तु अब तो कुछ यह है कि मैं देखती सब हालत हूँ, परन्तु मुझे अपनी कोई भी दशा नहीं मालूम पड़ती है। मैं तो सबसे अलग ही रहती हूँ। लय होने का माद्दा ही मैं अपने में नहीं पाती हूँ, न अपनायत का। मुझे कुछ ऐसा लगता है कि मानों मैं जाने क्यों तह में से अब बिल्कुल ऊपर आ गई हूँ। एक कुछ अब यह देख रही हूँ कि मेरी दिखाई पड़ने वाली शक्ल (शरीर) भी मानों 'आप' की ही शक्ल में बदलने का प्रयत्न कर रहा है और मुझे इसलिये प्रसन्नता है कि इस बहाने 'आप' को कभी-कभी देख तो लेने लगी हूँ, न अपनाइत, न चिमटपाना सही, इतनी ही कृपा सही। कुछ अब यह भी बात देखती हूँ कि बहुत कुछ पैरकर, चलकर जब देखती हूँ तो ठिकाना एक ही पर पाती हूँ। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-733

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 10.3.60

पत्र मिला ख़ुशी हुई। जितना आगे बढ़ते चले जाते हैं, सब रंग मिलते चले जाते हैं और फिर कोई रंग नहीं रहता। फिर रहा, सहा वह भी अपनी हालत खो बैठता है। बस यही हालत तुम्हारी हो रही है। जब चमक-दमक भी नहीं रहती, तो फिर अँधेरा कहा जाता है। मगर अँधेरा तो पहले से ही हट चुकता है। अब वहाँ क्या रहता है?

Dr. Vardhachari के खत आते हैं। वह बहुत ऊँचा जा चुका है, मगर विचारों के हमले और दुनियादारी की बातें उसे तकलीफ़ दे रही हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि इस हालत पर यह बातें कैसे मौजूद हैं और मैं उसे क्या लिखूँ, कैसे लिखूँ। यह समझ में नहीं आता है। उसने गीता के एक श्लोक के बारे में पूछा है, जिसका एक हिस्सा उसने लिखा है। वह इसलिये कि वह अपनी हालत को उससे अन्दाज़ा लगा सके। वह श्लोक अध्याय आठ का नवम् है जो हिस्से के माने पूछे हैं, वह यह है:-

''आदित्य वर्णम् तमस: परस्तात्'' यह एक पण्डित से दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि गीता

का श्लोक है। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या लिखूँ? क़ाबिल लोग तो लखीमपुर में है। खैर, सूरज प्रसाद से यह कह देना कि कुछ मुझको जल्दी से जल्दी इस पर लिखें और मास्टर साहब भी इस पर गौर कर लें, ताकि हमारी भद्द न हो जावे।

अम्मा व चौबेजी को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-734

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 7.3.60

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मैंने अपने पिछले पत्र में जिसे बन्दिश या नकाब लिखा है, वह वास्तव में कुछ नहीं है, बल्कि किसी शक्ति के पूरी मेरे में समा जाने की एक हल्की सी सफ़ेद धुएँ की तरह रोक है। जागने से सोते में यद्यपि नींद गहरी आती ही नहीं, अधिक अच्छा लगता है।

अब तो मानों शून्यता व अचलता ही मेरा स्वरूप हो गया है। अन्तर-बाहर, जहाँ गोता लेती हूँ, अपने कण-कण में सब मानों शून्यता ही शून्यता व्याप्त है। न कुछ बोलने को मन चलता है, न पढ़ने लिखने को। बस, चुप, अचल, चौबीसों घंटे ऐसे ही बैठे रहने की इच्छा होती है और काम-वाम कुछ करूँ, हालत तो बिल्कुल चुप, पूर्ण स्थिर ही रहती है। यह लगता है कि मानों भीतरी तह ही ऊपर आ गई है और अब न तह है कहीं, न सतह। स्वयं ही ज़रा सी खाली बैठते ही मानों आँखें स्वत: ही बन्द होकर शरीर निर्जीव या नि:श्चेष्ट सा हो जाता है।

ता. 5 को रात भर मानों 'आप' के साथ दक्षिण की कुल सैर करती रही व जाने क्या क्या काम 'आप' बताते गये और मैं करती गई, किन्तु मुझे कुछ पता नहीं कि क्या किया, क्या नहीं किया। जो किया वह नि:श्चेष्ट दशा में किया। ता. 6 की रात को एक अजीब स्वप्न देखा कि विश्वामित्र, अत्रि इत्यादि 8, 10 ऋषिगण खड़े हैं और आप मुझसे कह रहे हैं कि- ''बिटिया, इन्हें बताओ और पूजा कराओ''। मैंने करीब आधा घंटा कुछ बताया व पूजा भी करवाई, जिससे सब बहुत प्रसन्न हुए और तब उन्होंने जो फूल मेरे ऊपर चढ़ाये, वह मैंने देखा कि सब 'आपके' ऊपर चढ़े हुए हैं। एक भी फूल मुझे स्पर्श तक न हो पाया। कुछ अजीब बात है।

इस Perfect Calmness के स्वरूप में भी मानों न मेरी कोई रूचि है, न अरूचि। इस पूर्णतय: निर्जीव हालत में भी न बेआनन्द ही है कुछ, न आनन्द ही है। इस V1 point की सैर सब मानों निर्जीव ही निर्जीव है, किन्तु रात में, स्वप्न में अवश्य कुछ अच्छा रहता है। क्या अच्छा रहता है, यह मैं नहीं जानती हूँ।

एक यह बात मैं देख रही हूँ कि कोई चीज़ मुझे पूर्णतया से निर्जीव हो (या मर जाने) जाने से या अपनी दशा में समा जाने से रोके हुए है, वरना मेरा तो कण-कण, भीतर-बाहर व शरीर

भी बिखर कर दशा में समा गया है। यह मैं जानती हूँ, फिर भी मेरे मैं को कोई रोके हुए है, किन्तु वह रोक भी मेरे 'मालिक' की है, इसलिये मुझे भाती है। अब तो कुछ बुरा ही नहीं लगता, चाहे कोई गाली बरसाये, चाहे फूल बरसाये। मुझे तो ऐसा लगता है कि यह रोक ही मुझे अपनी दशा में समा जाने से रोके हुए है। मैं इससे हारी हुई है, वरना कोई शक्ति नहीं जो मुझे ज़रा भी कहीं रोक सके। कुछ ऐसा लगता है कि मानों Sub-conscious mind का कण-कण छिन्न-भिन्न हो गया है, बिखर गया है और उन कण-कण में से सारे विचार निकल निकल कर सब शून्य या खाली हुआ पड़ा है। अब जब Mind भी नहीं रह गया तो भला मैं क्या कर सकती हूँ। शायद इसीलिये नि:श्चेष्ट दशा ही मेरा स्वरूप हो गई है।

मेरे तो अन्तर की अब यह दशा है कि:-

> "कबिरा खड़ा बाजार में, सब की माँगे खैर।
> ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर॥"

बिल्कुल मानो लुटी हुई दशा है। यही नहीं, शरीर का कण-कण मानों सब लुटा हुआ पड़ा है किन्तु मेरी तो ऐसी नम्र व दीन दशा है कि मेरे पास से तो मानों न कुछ गया है, न आया है। बस टुकटुकी लगाये देखती सारी दशा हूँ, परन्तु इसमें भी मेरा मैं या अपनाइत कुछ भी नहीं शामिल है। मेरी तो यह दशा है कि- "कबिरा खड़ा...........।"

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-735

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 18.3.60

पत्र मिला-हर्ष हुआ। बाबू सूरज प्रसाद के पत्र से जो जवाब तुम सब लोगों का सोच समझकर लिखा गया है, वह बहुत अच्छा है। मास्टर साहब का खत आ जाने पर वही लिखकर भेज दूँगा।

डा. वार्धाचारी के लिये जो तुम दुआ करती हो, वह ठीक है। उसने मुझसे बहुत मेहनत ली और अब भी ले रहा है और मुरब्बत में मैं करता चला जा रहा हूँ। मगर विचार वगैरह आते रहते हैं और दुनियादारी की बातों से परेशान अब भी हो जाता है। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या किया जावे, जिससे इसको इत्मिनान हो जावे। कहीं ऐसा न हो, गो इसकी आशा उससे नहीं है कि आखिर को वह यह समझ बैठे कि इस मार्ग में ज्यादा तत्त्व नहीं है। तुमने यह उदाहरण बड़ा अच्छा दिया है कि- "स्वर्ग में अगर हम नरक का विचार लिये रहें तो स्वर्ग भी दुखदायी हो जावेगा" और मैं यह Quotation तुम्हारे ही नाम से इबारत में गढ़करभेज दूँगा।

तुमने जो लिखा है कि उनके उन्नति के Point से विचारों की ओर एक दृष्टि से देखें तो भी ठीक हो जावेंगे। यह बात मेरी समझ में नहीं आई कि इसका क्या मतलब है और मैं किस दृष्टि से देखूँ।

तुम U_1 स्थान पर हो, जहाँ तक मुझको याद है। इसको साफ़ करके V_1 स्थान पर जल्दी पहुँचा दूंगा। क्या विचार तुम्हारे भी आते हैं? अगर आते हैं तो कम या ज्यादा या एकाधा? केसर अच्छी उन्नति कर रही है।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-736

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 18.3.60

कृपा-पत्र आप का मिला। समाचार मालूम हुए। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी न जाने क्या दशा हो गई है कि अन्तर व बाहर की दशा में इतना साम्य व ख़ालिसपना आ गया है कि खुली व बन्द आँखों में भी कोई अन्तर मालूम नहीं पड़ता है। कुछ ऐसी दशा है कि मानों कण-कण, रोम-रोम, सब खुद अपने ही में समा गया है। कोई जरूरत, कोई इच्छा, कोई मन नाम की तो कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं मिलती। सब खाली पड़ा है। अब यह देखती हूँ कि अपने से कुछ ऐसी मिली दशा रहती है कि कोई दशा है, यह यदि ख़ास तौर से न टटोलूँ तो कभी पता ही नहीं लगा सकती हूँ।

पहले दशा मेरे सामने खुद आती थी और अब दशा को मैं टटोलती हूँ, तब अन्दाज़ मिलता है, परन्तु मुझे इसकी भी कोई परवाह नहीं है। यह अवश्य है कि 'मालिक' की याद मुझे तरसाती है, कभी आती ही नहीं और यही नहीं, याद की भी तो याद आ जावे- यह भी नहीं होता। पता नहीं यह क्या बात हो गई है। मेरी चाल इतनी धीमी रहती है कि जैसे कण्डे की आग। कुछ ऐसी कठपुतली की दशा है कि चाहे जो काम मुझसे करा लें। Submission मानों मेरा Nature ही बन गया है, किन्तु फिर भी दशा तो निरंकुश, अबाध है। न कहीं इसकी थाह मालूम होती है, न अथाह की तमीज़ आती है। मुझे तो न जाने क्या हो गया है कि ख़्याल या बेख़्याल की भी तमीज़ ही नहीं रह गई है। दोनों सुनने में एक ही दशा लगती है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। 'केसर' आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-737

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 24.3.60

कृपा-पत्र आप का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। यहाँ सभी लोग सकुशल हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरी तो यह दशा है कि कुछ रेले की तरह बराबर जारी रहता है किन्तु ऐसा कब मालूम पड़ता है कि जब दशा के बाहर झाँकती हूँ या ऐसा कहते हैं कि मानों बाहर रेला आ रहा है और मैं भीतर बन्द हूँ, तो कोई उसका प्रभाव नहीं, चाहे वह विचारों का रेला हो या कुछ भी हो। मुझे तो ख़्याल या बेख़्याली के अन्दाज़ की कोई तमीज़ ही नहीं रह गई है। उस रेले का असर दिमाग़ तक तो पहुँच पाता है, किन्तु दिमाग़ से परे मेरी दशा तो बिल्कुल अछूती है।

Submission तो मानों मेरा Nature ही बन गई है, किन्तु फिर भी दशा अबाध व निरंकुश है। मेरी तो यह दशा है कि घर से बाहर झाँकने की मेरी तबियत ही नहीं होती कभी, चाहे वहाँ बियावान हो या खाली हो। बस घर से मिली-जुली दशा ही मेरा स्वरूप हो गया है। घर भी कहने को कह लिया है, घर-बाहर, कुल एक ही है, जहाँ समझ काम नहीं देती है, इसलिये मैं क्या वह कैसे समझाऊँ उसे। यही कह लीजिये कि कण-कण, रोम-रोम, सब ख़ुद ही में समा गया है। विचार या शब्द भी ख़ुद ही में समा गये हैं या यों कह लीजिये कि ख़ुदी ख़ुद में समा गई है। मैं अब भी अपनी ठीक दशा नहीं कह पाई हूँ, बस अपने से मिली-जुली दशा ही मेरा स्वरूप बन गई है, यही कहती हूँ।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-738

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 25.3.60

कल ही एक पत्र मैंने 'आप' को भेजा है, मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि मानों मन, मन ही में या अपनी स्थिति में ही समा गया है और गति उससे परे हो कुछ और हो गई है। इसी कारण शायद अब जो भी गति या मति प्राप्त होती है, मानों उसमें परिवर्तन होते हुए भी सतत् या लगातार ही रहती है। क्योंकि मन को कुछ अच्छा या कुछ कम अच्छा लगना, चाहे आत्मिक-स्थिति में ही हो, कुछ Disturbance लगता है। गति को साम्य नहीं रहने देता है, किन्तु इससे परे जो भी गति है, वह सतत् है और लगता है कि अब मानों कोई सतह नहीं रह गई है। आंतरिक तह भी ऊपर ही आ गई है और सतत् हो गई है और यह भेद भी मुझे अब मालूम पड़ा, नहीं तो अब तक भी मुझे लगताथा कि मानों मेरे में कोई Disturbance ही नहीं होता, अविचल, अविरल गति ही रहती है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-739

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी लखीमपुर
सादर प्रणाम! 30.3.60

मेरा एक पत्र जो मैंने पूज्य मास्टर साहब जी के हाथों भेजा था, सो मिल गया होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो अब यह दशा है कि विचार आये या न आये, तथा मन की गति की, इस सबकी कोई तमीज़ ही मानों नहीं रह गई है और तमीज़ नहीं है, इसका भी अन्दाज़ा, यदि दशा अपने 'श्री बाबूजी' को लिखूँ, न तो भी अनुभव में नहीं आती है। मेरी तो यह दशा है, मानों मेरी निज की तो अब कोई Nature (प्रकृति) ही नहीं रह गई है। निज की कोई आदत ही नहीं रह गई है। कुल Submission ही मेरा स्वरूप बन गया है। किन्तु वह भी मेरा नहीं, वरन् कुछ स्वत: ही हो गया है। मेरी तो दशा है कि मानों मेरी कोई दशा ही नहीं है। दशा बदलते हुए भी मानों नहीं बदलती।

भाई मेरी तो यह न जाने क्या बात है कि कुछ ऐसी दशा है कि "श्री बाबूजी" से अपना कोई सम्बन्ध ही नहीं लगता और मैं बार-बार प्रयत्न करती हूँ, किन्तु एक मिनट बाद ज्यों की त्यों रह जाती हूँ। जो 'आप' ने एक बार मुझसे कहा था कि- "तुम्हारी उन्नति बराह-रास्त हुआ करेगी, तुम्हें मैंने किसी का मोहताज़ नहीं रखा"। यह बात तो नहीं पैदा हो गई। यद्यपि मेरा तो ख़्याल आज तक एक बार भी इधर नहीं पहुँचा। पता नहीं यह मुझे क्या हो गया है, किन्तु मैं तो 'आप' के ही चरणों में पड़ी हूँ। 'आप' को तो मुझे ही देखना ही पड़ेगा। सदैव मुझे तो बराह-रास्तगी से कोई मतलब नहीं है। मैं सम्बन्ध की वह लड़ी ही नहीं पाती हूँ, फिर कहाँ से लाऊँ, कैसे उसे जोड़ूँ। किन्तु मैं 'आप' की हूँ, और आप की ही रहूंगी। शायद मन व विचारों ने मेरा साथ छोड़ दिया है, जो कि आप से सम्बन्ध रखने के औंजार थे मेरे पास, परन्तु फिर भी मैं तो आप की ही हूँ।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-740

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी लखीमपुर
सादर प्रणाम! 3.4.60

'आप' का कृपा पत्र जो पूज्य ताऊजी के लिये आया था, उसी से आप का समाचार मालूम हुआ। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि मेरे अन्दर-बाहर जाने क्या हो गया है और अन्दर बाहर ही क्या, कुल में मुझे कहीं पवित्रता व ईश्वरीय धारा या ईश्वरीय नाम तक की कहीं बू नहीं मिलती है। मेरी तो एक अजीब हैरत सी दशा रहती है और हैरत सी भी क्या, वह भी भूल-भूल जाती है और खाली फिरा करती हूँ, मानों न कोई मुझे कभी काम था और न अब कोई काम ही नहीं है। मैं क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता। शायद इसी निठल्लेपन के कारण दशा की वह चहक, जो मेरे में

चहक व उत्साह बनाये रखती थी, वह जाती रही एवं तबियत में कोई ऐसी उदासीपन या खालीपन घर कर गया है कि यदि यहाँ मन लगाये रखने का प्रयत्न न करूँ तो दुनिया में एक क्षण भी रहना मुश्किल हो जाये। दुनिया की कोई ख़ुशी व कोई जगह नहीं है, जहाँ मेरा मन बहलाया जा सके। बार-बार तबियत ऐसा उदास होने लगती है कि यदि बार-बार बहलाने का प्रयत्न न करूँ तो दुनिया में एक क्षण भी रहना असम्भव हो जाये। न जाने क्या बात है कि न विशुद्धता, न ईश्वरीय फैज़ और आंतरिक आनन्द की ही बू तक कभी नसीब नहीं होती है। मानों शरीर दुनिया का है, इसमें दुनिया ही कूट-कूट कर भरी है। यद्यपि पता तो न दीन का, न दुनिया का कहीं मिलता ही नहीं। कुछ ऐसी निठल्ली व निष्क्रिय दशा ही मेरे भीतर-बाहर ही नहीं, वरन् कुल में छाई हुई है कि एक गहन उदासीनता ही सब ओर व्याप्त हो गई, जो बार-बार प्रयत्न करने पर भी मानों अपनी चीज़ है, जो हटाये हटती नहीं, रोके से रूकती नहीं, वरन् इसका रेला सा उतरता ही चला आता है, मानों ऊपर की यह दुनिया सारी नीचे ही उतर आयेगी और मेरे में व्याप्त हो जायेगी, कूट-कूट कर भर जायेगी। खैर, मुझे भी क्या परवाह, 'मालिक' जानें, 'उन्हीं' की शक्ति में मेरे मन को दुनिया में बार-बार बहलाने की ताकत है और 'वही' बहलाते हैं, वरन् मेरे में तो अब अपने को बहलाने की तो क्या, वरन् धोखे में या भुलावा देने तक की गम्य या शक्ति नहीं रह गई है। मैं तो इतनी निष्क्रिय, निठल्ली एवं उदासी से भरी हुई हूँ, या यही तो मेरा स्वरूप हो गया है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-741

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 16.4.60

तुम 13 अप्रैल को एक बजे दोपहर V1 के स्थान पर पहुँच गई। हालत में कुछ परिवर्तन जरूर होगा।

अम्मा व चौबेजी को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-742

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 15.4.60

आशा है 'आप' शाहजहाँपुर पहुँच गये होंगे। यहाँ सब सकुशल हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

अब तबियत का उदासीपन या खोखलापन नहीं रह गया है। अब तो फिर कुछ सुहावनापन या क्या कहूँ दशा में है। अब न जाने क्यों वह Submission की दशा, जो सबसे कहती थी,

अब उसका भी पता नहीं चलता। मैं आनन-फानन चलकर अपने 'मालिक' को प्राप्त करना चाहती हूँ। देरी मुझे सहन नहीं होती और हाथ-पैर बेकार हो गये, फिर भी अपने को एक मोहताज़ अनुभव नहीं करती, बल्कि एक ज़ोर अन्तर में रहता है, वह क्या है, यह मैं नहीं जानती। यदि 'मालिक' उसे ज़िद कहें तो हो नहीं सकती, क्योंकि विनम्रता ही मेरा स्वरूप बन गया है। अब तबियत को चलने की जगह मिल गई है, इसलिये ख़ुशी है। शायद इसीलिये वह गहन उदासीनता अब कम हो गई है। मैंने जो एक रेला सा उतरता 'आप' को लिखा था, वह उदासी का नहीं, बल्कि वह एक दशा एवं शक्ति का है, जो पता नहीं, कहाँ जाती है, क्या करती है किन्तु पता नहीं।

कुछ एक बात यह हो गई है कि मानों यह रेला 'मालिक' की दुनिया मेरे में उतारे दे रहा है, जो मेरे रोके से नहीं रुकता, थमता नहीं। एक बार 'आप' ने कहा था कि- "बिटिया, मेरी सी शक्ति इस दुनिया में एक ही रहेगी"। इसलिये मैं सच कहती हूँ, मुझे 'मालिक' का कुछ नहीं चाहिये, मुझे तो बस 'वही' चाहिये। 'वे' ही मेरे जीवन के परम सर्वस्व व प्रियतम हैं। 'वे' कब मेरे होंगे? कब मैं 'उन्हें' प्राप्त कर सकूँगी? न जाने क्यों, वह हैरत की दशा व Submission की दशा, जो सबके प्रति रहती थी, अब वह नहीं रही।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-743

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम। — 29.4.60

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। 'आप' की कृपा इस गरीबनी पर सदा इसी तरह बनी रहे, यही मेरी प्रार्थना है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो ऐसी सूखी हालत है कि मानों सूखकर भी मर या झड़ चुकी दशा है, कि न सरलता, न सादगी, न विनम्रता तक मेरे में, अब सब कुछ समाप्त हो गया। समाप्त ही नहीं बल्कि न जाने क्यों, इसका नामों-निशान तक दशा से ऐसा मिट गया कि यह सब बातें मुझे सुनी सुनाई लगती हैं। यद्यपि ये बातें मुझे अच्छी लगती हैं, तो मैं इन्हें लाने का प्रयत्न करती हूँ, परन्तु बिल्कुल बेकार। ऐसा लगता है, न जाने क्यों, कि मानों आध्यात्मिकता के साथ ही साथ आध्यात्मिक शिक्षा का भी मानों मुझ पर कोई असर पड़े, ऐसी गुंजाइश भी नहीं मिलती। मुझे यह सब क्या हो गया? मेरी तो कुछ समझ में ही नहीं आता है।

एक यह न जाने क्या बात है कि मुझे लगता है कि वह कसक, जो जान या अनजान में भी मेरा मानों एक अंग बनी हुई थी, वह भी विदा हो गई है। मेरी पकड़ से अब वह भी बाहर हो गई है या यों कहिये कि अपने से विदा हो गई है और मैं कुछ भी कर नहीं सकी।

हालत क्या है, चिकना घड़ा है और हालत भी नहीं, बेहालत ही फिर रही हूँ। 'मालिक' का भी कहीं पता नहीं मिलता, तो फिर कहूँ तो किससे कहूँ? और कहूँ भी तो क्या कहूँ? ज़ुबान ही बन्द हो गई है। जब कुछ पास पल्ले नहीं, तो बात किसकी करूँ? यही नहीं, जब ईश्वरीय

सम्बन्धी व आत्मिक-सम्बन्धी बातें मेरे सामने चाहे कितनी होती रहें, तो भी मेरी ऐसी दशा रहती है, मानों सब कुछ मेरी समझ के बाहर की बातें हैं और बात भी सही ही है, मैं भला जानूँ भी तो क्या जानूँ? परन्तु न जाने क्या बात है कि यदि मुझसे ही कोई बातें करने लग जाये, तब तो जाने कहाँ से पूजा-सम्बन्धी विचार ऐसे-ऐसे चलते चले आते हैं, कि मैं स्वयं आश्चर्य में पड़ जाती हूँ और बात समाप्त होते ही विचार ज्यों के त्यों। अब तो सोते या स्वप्न में भी कभी 'मालिक' का एहसास नहीं पाती हूँ, फिर कैसे चैन आवे। अब तो लगता है कि मेरे में अब अनुभव तक नहीं रह गया है। हाँ, जब 'मालिक' के काम की ओर दृष्टि जाती है, तो अनुभव व शक्ति सब कुछ कहीं से आ जाता है, वैसे मैं ज्यों की त्यों रहती हूँ। खैर, और कुछ भी क्यों न हो, बस 'मालिक' की मैं तलाश में हैरान हो जाती हूँ, परन्तु 'वह' तो एक क्षण को भी कभी अपनी अनुभूति नहीं होने देता। न जान, न् अनजान तक में मैं सूखी खाली ही फिरती हूँ, परन्तु 'वह' न जाने क्यों कभी दूर या पास अनुभव में ही नहीं आता है।

नींद अब मुझे नींद की तौर पर नहीं आती, पता नहीं क्या रहता है, जो मैं समझ यदि कुछ लेती भी हूँ, तो लिख तो मिलता ही नहीं है। अब तो यह दशा है कि पतझड़ के बाद आँखें आशा की ओर देखती रही, लेकिन अब कोई आशा या निराशा के लिये भी मेरे में स्थान नहीं रह गया है। न जाने क्यों आध्यात्मिक-शिक्षा तक की मानों मेरे लिये समाप्त हो गई है। जो भी हो, वही मंजूर है। किन्तु 'मालिक' कहाँ है? मैं 'उन्हें' कैसे प्राप्त करूँ? यद्यपि मैं जानती हूँ कि अब मेरे में यह कसक भी नहीं, परन्तु फिर भी कोई चीज़ आ कर कभी क्षणिक ताज़गी देकर फिर ज्यों की त्यों छोड़ जाती है। किन्तु यह चीज़ क्या है, यह मैं नहीं जान सकी, क्योंकि अब मेरे में जब कोई हालत ही नहीं है तो फिर हालत की वज़ह ही कहाँ से आवे।

'अम्मा' आप को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-744

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 2.5.60

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। मेरी तबियत बिल्कुल ठीक फिर हो गई। 'मालिक' की कृपा से मेरी कमज़ोरी बहुत शीघ्र ठीक हो गई। अब 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो यह दशा है कि दशा के लिये जो कुछ कहती हूँ, वह कुछ हो जाता है, इसलिये उससे दशा की वास्तविकता में कमी पड़ जाती है। यहाँ तक कि उसका अनुभव भी उसमें कुछ जोड़ लगा देता है और वह बेजोड़ है तो क्या कहूँ। मुझे न जाने क्या हो गया है कि अपने परम प्रिय 'श्री बाबूजी' का रंग, रूप, बोली, वाणी, जब सभी कुछ भूल गई तो तलाश भी कहाँ और कैसे कर पाऊँगी। परन्तु खैर, 'आप' जैसे भी हो, जहाँ भी हों, मेरे हैं, मैं आप को खोजूंगी। 'आप'

की फोटो देखती हूँ, किन्तु घंटों चाहे देखती रहूँ, यह पहिचान नहीं पाती कि किसकी है। जब कभी कोई दूसरा बताता है, तो बड़ी शर्म आती है।

अब तो कुछ यह दशा है कि यदि सेवकाई है तो वह भी क़ैद और बन्द से आज़ाद है। मेरे पास कुछ नहीं है। मेरी दशा तो एक बिल्कुल साधारण से दुनिया के आदमी की तरह है, किन्तु इतना भी समझ के पास रहे, वह भी नहीं, बल्कि इस समझ से भी अनजान दशा ही रहती है। इस बन्द से भी आज़ाद ही दशा रहती है और आज़ादी के बन्द से भी आज़ाद है। कुछ कह लो दशा के लिये या न कहो, कोई इससे मतलब नहीं पड़ता है, न कोई विशेषता आती है, दोनों ही बातें बराबर हैं।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-745

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 14.5.60

आशा है 'आप' सकुशल और स्वस्थ होंगे। पूज्य मास्टर साहबजी भी वहाँ पहुँच गये होंगे। 'आप' को उनसे बहुत आराम मिल जाता है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो यह दशा है कि आँखों से दशा भी दिखाई नहीं पड़ती, तो फिर लिखूँ क्या और यदि प्रयत्न करती भी रहूँ, तो आँखें व दशा एक ही रहती है, सो फिर समझ में कुछ नहीं आता कि क्या लिखूँ। मेरे हाथ में कुछ रहा नहीं। प्रियतम 'मालिक' के दर्शन व मिलन की सूखी तड़प व आशा लिये फिरती हूँ, यद्यपि आँखों में अब 'उनके' दर्शन पाने तक की ज्योति नहीं रह गई है। वे अब कुछ देखते नहीं। मेरी दशा तो एक दुनिया के साधारण जन की ही भाँति हूँ, जिसे बस खाना-पीना व काम इत्यादि, यही करते दिन बीत जाता है, किन्तु 'मालिक' की याद का पता तक नहीं मिलता। मेरा तो स्थूल व सूक्ष्म, सब ही बिल्कुल एक हो गया है। सूक्ष्म से सूक्ष्म उपाय से भी 'मालिक' तक दृष्टि पहुँच ही नहीं पाती और जब उपाय से नहीं पहुँच पाती तो दिन भर निठल्ली व खाली घूमने की तो भला बात ही क्या सोचूँ, किन्तु मैं ख़ुश हूँ, क्योंकि 'मालिक' की ख़ुशी इसी में है, तो यही सही। या, यों कह लीजिये कि न अब कुछ सूक्ष्म है, न स्थूल है। सब ज्यों का त्यों चल रहा है। न कुछ अदली ही बदली, जो है, उसी में ख़ुश हूँ। मुझे तो विष और अमृत एक समान ही प्रिय है और प्रिय व अप्रिय, ख़ुशी व नाख़ुशी, शान्ति व अशान्ति सब मेरे लिये एक ही समान है। Conscious और Sub-consciousness, आत्मा-परमात्मा, मैं और तुम, इसका कोई मेरे लिये प्रश्न ही नहीं रह गया है। सारे प्रश्न समाप्त हो गये हैं। कहीं कोई गुत्थी का पता नहीं। कोई उमंग नहीं, कोई उफान नहीं। कोई समुद्र नहीं, कोई मैदान नहीं। मुझे अब कुछ अनुभव नहीं होता। बस, एक कोरी, खाली, निष्क्रिय दशा लिये सब दिन मानों, अब तक ऐसे ही गुजर गये और जब कुछ मुझे पता नहीं, तो फिर क्या लिखूँ। मैंने तो भाई, ऊपर जो कुछ लिखा

है, वह दशा नहीं लिखी है, बल्कि उसका हवाला ही दिया है कि यह नहीं, वह नहीं, इत्यादि। दशा तो मेरी आप ही जानते हैं। यदि 'आप' बता दें, तो मैं समझ सकती हूँ, वरना वह भी नहीं।

मेरी तो कुछ यह दशा है कि 'आप' ने लिखा है कि- "तुम्हारी हालत के लिये ईश्वर का धन्यवाद है" किन्तु मुझे तो यह आश्चर्य है कि जब सच ही मुझे दशा 'मालिक' को धन्यवाद देने की लगती थी, तब तो 'आप' ने ऐसा नहीं लिखा और अब, जब मेरे 'मालिक' का ख़्याल के ख़्याल तक को छीन लिया, तब 'उन्हें' धन्यवाद दिया जावे। खैर यह तो 'उनकी' मर्ज़ी है। हालत तो जो कुछ भी मेरी है, या हो रही है, उसके लिये तो शब्द ही लिख पाने को नहीं बने हैं। बस इधर-उधर शब्दों से मैं उसका हवाला ही 'आप' को दे पाती हूँ।

मैं देखती हूँ कि एक कोई ऐसा Check या रोक लगी है, जो मुझे अपने 'श्री बाबूजी' में पूर्णतय: शीघ्र से समा जाने में बाधक है, वरना कोई शक्ति ही नहीं जो मुझे रोक सके। किन्तु न जाने क्यों यह Check भी मुझे प्रिय है। बस 'मालिक' प्रियतम से यह इतनी सी दूरी है, जो मुझे बेचैन किये है और दशा यह है कि नाम तो कस्तूरी या 'बाबूजी' मेरे लिये दोनों ही बेकार हो गये हैं। इन नामों से मैं किसी को पहिचान नहीं सकती हूँ। अब तो 'आप' ही मुझे अपने पास, अपने में खींच ले तो खींच लें और 'आप' कृपा करेंगे, वरना मेरे हाथ में तो कुछ भी नहीं है। दोनों मुट्ठियाँ खुली हुई हैं। दिल में कहीं कोई 'मालिक' की याद की गठरी भी नहीं बँधी पड़ी है। चाल भी बहुत धीमी है और मैं बेचैन हूँ। किन्तु मैं क्या हूँ, कौन हूँ, यह कुछ पता नहीं। यह सब तो 'आप' ही जानें।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-746

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 27.5.60

मेरा पत्र पहुँचा होगा। मास्टर साहब से आप के समाचार मिले। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ ऐसी दशा है कि कहीं किसी गुत्थी या बंधन का पता नहीं मिलता और आज़ादी का भी निशान नहीं- आत्मिक दशा का आस-पास तक में कहीं पता नहीं। कुछ ऐसी दशा है कि मेरे जीवन का भार 'आप' पर है, तो न जाने क्यों कोई भार भी नहीं मालूम पड़ता और न हल्केपन का ही कहीं कभी कोई पता लगता है।

ता. 19 की रात ज़रा देर को आँख लगते ही रात को करीब साढ़े ग्यारह-बारह बजे एकदम ऐसा लगा कि मानों 'आप' आये हैं-मुझे अपनी गोद में लिये न जाने क्या-क्या बता रहे हैं। मैंने बस एक बार कहा कि- "बाबूजी", 'आप' मेरे बोझ से दब रहे होंगे, तो 'आप' हँसने लगे। किन्तु उसी क्षण से मेरा यह ख़्याल कि मेरे बोझ से आप दबे हैं एकदम साफ़ हो गया और मैं बैठी रही। मेरा तो अब कुछ नहीं। अपनी रूखी-सूखी हालत लिये भी 'मालिक' तक पहुँचना चाहती हूँ और

कोई चाह नहीं। मेरे पास तो अब न कोई प्रश्न है, न फरियाद है और न कोई उत्तर है, न समाधान। सब 'आप' ही जानें। चाहे कुछ भी हो, मेरे 'मालिक', दिल चाहे डूब गया, परन्तु दिल की लगी यह दिल्लगी मुझे अंतर के किसी कोने में कचोटती रहती है। अब तो उन्नति कर रही हूँ। इस चले का या न चलने का भी एहसास नहीं होता। अब तो यही दशा है कि- ''बिना भक्ति तारो, तब तारिबो तिहारो है'' किन्तु यह भी नहीं है, क्योंकि तरने-तारने की भी तमन्ना का पता नहीं।

भाई, मेरी तो अब न जाने क्या दशा है कि मुझे लगता है कि मैं 'आप' के साथ, आप के हर काम में पीछे लगी रहती हूँ। यद्यपि न तो मुझे उन कामों का ही पता कुछ है और न मैं स्वयं कुछ करती ही हूँ। बस, ख़ुद ही कुछ ऐसा न जाने क्यों कभी मालूम पड़ने लगता है। न मालूम क्यों इधर मुझे ऐसा लगता है कि मानों मेरे अंतर में कुछ थकान सी हो जाती है। शायद इससे ही अक्सर अब सब लोग कहते हैं कि मैं उदास सी ही रहती हूँ, परन्तु मैं तो यह भी नहीं जानती हूँ। मेरा तो अनुभव भी अब साथ ही नहीं देता है। अब तो 'आप' को पत्र लिखना मानों अपनी हालत को याद करने की याद दिला देता है।

एक यह न जाने क्या बात है कि कुछ ऐसा मज़ा, जो गहरी नींद में मुझे मिलता है, वह दिन में चाहे कितनी पूजा करूँ या करवाऊँ या रात में भी, किन्तु वह मज़ा नहीं आता है। गहरी नींद के अलावा चाहे वह थोड़ी ही देर को ही क्यों न हो, तबियत फीकी ही बनी रहती है परन्तु इस फीकेपन में भी एक अनजानी-पहिचानी कुरेदन सी बनी रहती है। 'मालिक' की याद तो मुझे लगता है कि मैं चाहे जितना यत्न करूँ, चाहे जितनी पूजा करूँ, चाहे जितनी 'उसकी' बातें करूँ, किन्तु कभी नहीं आती, इसका मुझे दुख है। पूजा व अभ्यास सब बेकार है। 'मालिक' की ऐसी ही मर्ज़ी मान लेने से दिल कुछ बहल जाता है, परन्तु मानता नहीं और ऐसे दिल की अब कोई दवा नहीं है मेरे पास और दवा क्या हो, जब मेरी तो पहुँच ही न तो मर्ज़ तक है, न दिल तक है। एक अन्दाज़ा बात ही बनी रहती है, चाहे उसे दर्द कह लीजिये, चाहे दवा कह लीजिये या दिल समझ लीजिये। 'मालिक' ने मुझे क्या या कैसा कर दिया, यह दोष भी मन को गवारा नहीं होता। अब तो 'आप' ही सब जानें। मैं तो हार गई हूँ।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-747

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 12.5.60

तुम्हारा तथा केसर का पत्र आज ही प्राप्त हुआ। तुम्हारे पत्र का उत्तर क्या दूँ? जो कुछ हाल है, सब अच्छा है। उसके लिये 'मालिक' का धन्यवाद। मैंने लिखा था तुम्हारी पहुँच U_1 या V_1 पर है। ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती जाओगी, दशायें सब ख़त्म होती चली गई-आखिरी में जो रह जाता है, वह तो वही जान सकेगा, जिसमें वह हालत पैदा होगी। कहने से उसकी वह वक़त नहीं रहेगी।

अम्मा व चौबेजी को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-748

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी लखीमपुर
सादर प्रणाम! 15.6.60

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। समाचार मालूम हुए। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने यह क्या दशा है कि लगता है कि मानों सारे सुखों व आनन्द का अन्त हो गया। सारे आनन्द, चाहे आत्मिक हों या ऐहिक, सब अनन्त सागर में विलीन हो गये। अब मैं तो एक उदासीनता की हद लिये एवं वीराने से भी वीरान हालत में खड़ी हूँ। इसी से हाथ से बेहाथ भी हो गई हूँ। यदि कोई मुझसे कभी बात न करे तो आजीवन मुझे बात करने का मौका ही न लगेगा। लेकिन अब तो फिर भई दशा संभाले नहीं संभलती है।

कुछ ऐसी दशा है, जैसी कि बिना नमक का भोजन, फिर भी तबियत सधी ही रहती है। सब कुछ सिर माथे है। चाहे मैं ऐसा सोचूँ या न सोचूँ, स्वत: ही यह दशा रहती है। तब भी तबियत के किसी कोने में एक खटक खटकती है। मेरे ऊपर तो बहार की तो बात ही क्या, वीराने का भी असर नहीं पड़ता। उदासी भी कोई रंग नहीं ला पाती है। एक एकाकी दशा ही मेरा स्वरूप बन गई है, किन्तु अकेलापन ऐसी कोई बात नहीं है। 'मालिक' जाने क्या है।

न जाने यह क्या बात है कि इतने सब लोगों के एकत्रित होने पर भी तबियत में कोई ख़ुशी व उमंग नहीं उठती है। न जाने क्यों तबियत कभी-कभी अन्दर ही अन्दर सिसकने लगती है। मेरी तो यह दशा है कि मेरे ऊपर तो कभी कोई बहार व वीरानेपन का असर पड़ता ही नहीं, एवं सूनापन भी कोई नहीं ला पाता है। तबियत को उदासीपन की हद कह लूँ, तो वह भी ठीक नहीं बनता है। अब तो दशा क्या है, मानों बिना नमक का भोजन, किन्तु तबियत को इसकी भी कुछ परवाह नहीं है। ऐसा लगता है कि मानों न कोई बात आती है, न कोई काम। यदि कोई जीवन में अंत तक मुझे कोई काम करने को न कहे, तथा मुझसे बात न करे, तो मैं कुछ कर ही नहीं सकती हूँ। मुझे कुछ आता ही नहीं है। बात तक करने का शऊर नहीं है। न जाने मुझे क्या हो गया है कि मुझे किसी से प्रेम ही पैदा नहीं हो पाता है। अपने प्रियतम 'मालिक' तक से भी नहीं। इसलिये तबियत में कोई ख़ुशी व उमंग पैदा नहीं हो पाती है। दुनिया का हर आदमी मुझे अपना गुरू-तुल्य मालूम पड़ता है। यद्यपि तब भी मुझे प्रेम अन्तर में कभी किसी के लिये आता ही नहीं। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-749

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी लखीमपुर
सादर प्रणाम! 25.6.60

कृपा-पत्र 'आप' का पूज्य ताऊजी के लिये आया। सुनकर प्रसन्नता हुई। यहाँ सब लोग कुशल से हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने यह क्या बात है कि सब हालतें देखते हुए भी अनदेखी सी दशा रहती है। सब दशायें खुली हुई होते हुए भी न जाने क्यों मुझे ऊपर कुछ बंदिश या आवरण मालूम पड़ता है। उसके भीतर दशा बिल्कुल साफ़ व खुली हुई लगती है। जब Point Cross कर जाती हूँ, तब ऐसा लगता है कि उस पर एक आवरण पड़ गया है। न जाने क्या बात है कि हर आदमी (सत्संगियों की भी) की दशा मुझे पूज्य मालूम पड़ती है। घर से शाहजहाँपुर जाने की इतनी तड़प थी, किन्तु वहाँ जाने पर बिल्कुल मामूली बात लगती है, मानों कोई विशेष जगह नहीं गई हूँ। न जाने क्या बात है कि मेरे अन्दर तो कोई शक्ति ही नहीं रह गई है, न बनने की, न बिगड़ने की। मन में न Devotion कर सकने की शक्ति है, न प्रेम कर पाने की। न याद कर पाने की शक्ति है, न भूल पाने का ही सामर्थ्य है, 'मालिक' को भी।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-750

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 1.7.60

मेरा एक पत्र मिला होगा। आशा है,अब आप की तबियत ठीक होगी। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने यह क्या बात हो गई है मुझे कि जब कोई नया आदमी पूजा के लिये मेरे पास आता है तो मैं चुप ही बैठी रहती हूँ। मुझे कुछ बातें आती ही नहीं। समझ में नहीं आता कि उस समय अपने को कैसे जगाकर सचेत और तेज़ करूँ। ऐसी चुप होती हूँ कि प्रार्थना तक 'आप' से करने की भी याद नहीं आती। इतना भी मैं नहीं कर पाती। ऐसी निष्क्रिय दशा है। जब पूजा के लिये आने वाला स्वयं ही मुझसे बातें करने लगता है, तब भी दो-एक कुछ बातों का सिलसिला चालू होने पर ही मैं सचेत होकर कुछ कह पाती हूँ।

अब तो दशा यह है कि अब तो नेत्रों में न अपने श्री बाबूजी को देख पाने की शक्ति है, न नहीं देख पाने का सामर्थ्य है। कोई चीज़ ही नहीं है। न तो दुनिया को ही याद रखने की शक्ति है और न भूल पाने का सामर्थ्य है। कुल भीतर-बाहर का ज़र्रा-ज़र्रा ज्यों की त्यों दशा में रह गया है। 'मालिक' के पास न तो अब उन्नति कर पाने की शक्ति है और न कोई शक्ति, न सामर्थ्य ऐसी है, जो मुझे उसके पास उन्नति कर पाने में पूरा कर सके। न तो 'मालिक' से मिलन की शक्ति है और न बिछुड़ पाने का सामर्थ्य है। दोनों मुट्ठियाँ खुली हुई हैं। हृदय ही क्या, भीतर-बाहर सब कुछ Open पड़ा है। हर कण-कण एक साधारण सी स्वाभाविक अवस्था (Natural) का ही रूप हो गया है। आज प्रात: सात बजे 'आप' ने कृपा करके मुझे U_1 point cross कराकर V_1 पर डाल दिया है। शरीर का रोम-रोम तक सब एक स्वाभाविक स्थिति को प्राप्त हो गया है। न जाने क्या बात है कि वैसे तो तबियत

उथली ही रहती है, परन्तु कभी गहराई पर जाने में सब लोग के प्रति मेरी दशा झुकी रहती है। सभी मुझे पूज्य मालूम पड़ते हैं।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-751

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 18.7.60

आशा है 'आप' सकुशल होंगे। यहाँ भी सब सकुशल हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ ऐसी दशा है कि न सन्नाटा, न भन्नाटा है, सब कुछ चुप दशा है। सब कुछ भीतर-बाहर, कुल शरीर का रोम-रोम तक चुप ही चुप है। अब इस दशा या गति के लिये शान्त या शान्ति है, यह कुछ भी कहना ग़लत है। बस चुप ही चारों ओर छाई हुई है और मैं चुप कत्तई बैठना नहीं चाहती हूँ। मुझे तो 'मालिक' तक पहुँचना है, चाहे कैसे पहुँच लूँ। किन्तु यह भी है मेरे 'मालिक' के हाथों बात और वे बराबर कृपा करेंगे ही यह मेरा विश्वास है। एक कुछ यह बात है कि जैसा मैंने लिखा था 'आप' को एक बार कि पता नहीं, मन भी कहीं समाकर समाप्त हो गया है। परन्तु अब मैं देखती हूँ कि ऐसा नहीं है। क्योंकि मन मुझे कुछ याद दिला देता है। क्या याद दिला देता है, यह तो मुझे नहीं मालूम है 'श्री बाबूजी'। किन्तु यह याद मुझे कुछ अच्छी लगती है। यह होश़ दिला देती है। यद्यपि क्या अच्छा लगता है, यह तो मुझे कुछ भी पता नहीं है। किन्तु 'वे' मेरे 'श्री बाबूजी' ही होंगे, जिन्हें मैं भूल गई हूँ, जो मुझे याद ही नहीं पड़ते हैं। क्योंकि सिवाय आपके मुझे कुछ अच्छा लग सकता है, ऐसा मैं न जाने क्यों कह नहीं सकती हूँ। भाई, मुझे जब ख़ुद अपने (अपनी उन्नति) से चैन नहीं, क्योंकि तबियत में आराम नहीं तो फिर मैं क्या करूँ।

अब तो यह न जाने क्या दशा है कि उसमें अब Nature या प्रकृति तक की खबर नहीं मिलती कि वह भी है या नहीं, उसका कोई काम है या नहीं। न कहीं कोई हरक़त है, न कुछ जाने सब ओर, या मुझे ही क्या हो गया है। सब चुप ही चुप है। यदि यही हाल व चाल रहा तो मैं बिल्कुल बेकार ही हो जाऊँगी। मैं तो दिमाग़ व दिल को ख़ुद ही चलाया करती हूँ, नहीं तो सब ठप ही हो जायें, परन्तु सच तो यह है कि चलाना भी मेरे वश का नहीं है, बल्कि यह भी 'मालिक' की ही कुछ कृपा व गति है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-752

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 28.7.60

बहुत दिनों से 'आप' का कोई पत्र नहीं मिला है। चिन्ता लगी है। कृपया अपना समाचार शीघ्र पत्र द्वारा दीजिये। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

पता नहीं, यह क्या बात हो गई है कि ख़ुद बोलते रहने पर भी चुप ही मालूम पड़ती हूँ। गाते रहने पर भी भीतर-बाहर सब चुप ही चुप नज़र आता है। रग-रग में कोई खटक, नस-नस में कोई हरकत, कहीं कुछ मालूम ही नहीं पड़ता है और मालूम क्या पड़े, जब होती ही नहीं है। अब तो यह कह लीजिये कि बेकार रहते हुए भी बेकार नहीं होने देती हूँ। स्वयं ही अपने को उलझाये रखती हूँ, किन्तु फिर भी सब हालत देखती हुई भी अनदेखी सी दशा रहती है। मेरे पास एक केवल अन्दाज़ा मात्र ही साथ देता रहता है, चाहे आध्यात्मिकता की ओर हो, चाहे दुनिया में। हर बात के लिये केवल एक अन्दाज़ा मात्र ही काम देता रहता है।

न जाने यह क्या बात हो गई है कि लगता है, हर समय 'आप' के साथ हर Work में, मैं पीछे-पीछे स्वत: ही लगी हुई हूँ। मुझे कोई 'आप' का Work, आप की रहनी, आप की गति, कुछ भी पता नहीं है, लेकिन फिर भी मैं मानो Natural ही 'आप' के पीछे लिपटी हुई हूँ। 'आप' क्या करते हैं, क्या नहीं, इसका तो मुझे कुछ पता नहीं। लेकिन मानों मेरे अन्तर की वरन् तन-मन की शक्ति सब 'आप' से ही लिपटी हुई है। 'आप' ही में मानों एक हो गई है, क्योंकि मैं देखती हूँ कि सब स्वत: ही खिंचा रहता है। उधर यद्यपि मुझे इस खिंचाव का भी कभी पता नहीं लगता है, बल्कि जब बेहोशी में भी कभी होश के होश की कौंध सी आती है, तब ऐसा ही लगता है। सच तो यह है कि यदि 'आप' कृपालु मुझे न अपने से अपनायें तो मेरा तो रहना भी वश नहीं। मेरे में तो इतना भी सामर्थ्य नहीं है कि मैं 'आप' से लिपट ही सकूँ। मैं नहीं जानती हूँ कि मुझे किसी से भी अपनापन है। क्योंकि मुझे तो मानों कुछ पता ही नहीं रहता है, यद्यपि सदैव ही होश हवास में रहती हूँ किन्तु जब किसी सत्संगी भाई का नाम आता है, तो लगता है मानों मेरे सबसे अपने का नाम लिया गया है। कुछ यह सब अजीब रीति की अनोखी बाते हैं, जो मैं न जानती हूँ, न समझती हूँ, बस लिख जाती हूँ, जाने क्या-क्या। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-753

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 10.8.60

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो यह न जाने क्या दशा है कि मैं चल रही हूँ। मुझे 'मालिक' तक जाना है। ऐसा अब मुझे कुछ ज़रा भी अनुभव ही नहीं होता है। यही नहीं, दुनियाँ में भी कभी मैं चलती हूँ या नहीं, इसका भी कोई ज्ञान नहीं। कुछ ऐसा लगता है कि निगाह की मानों हद टूट गई है, जिससे आँखे बन्द हो या खुली, सब

एक समान ही रहता है। प्रकाश हो या अन्धेरा, सब एक समान ही रहता है, बल्कि हद नामक तो कोई चीज़ ही मेरे अन्दर-बाहर नहीं रही, और न बेहद की ही दशा मालूम पड़ती है। सुख-दुख, कष्ट व आराम सबने भीतर-बाहर, आंतरिक हो या बाह्य, केवल एक कुछ धुँधला सा खुद ही बना रहता है।

मेरा तो यह हाल है कि मैं तो इस अन्दाज़ के पते से भी बेपता रहती हूँ। कभी मैंने एक रेला सा उतरता 'आप' को लिखा था और अब मानों कण-कण, रोम-रोम, उस रेले का ही स्वरूप बन गया है। सम्पूर्ण भण्डार का ही अविचल, अचल स्वरूप बन गया है। यही नहीं, मेरा रोम-रोम, कण-कण तब मानों बिखर-बिखर कर फैल गया है। मेरी नस-नस मानों एक कुल में नहीं, वरन् स्वयं ही कुल एक समान गति हो गई है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-754

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 20.8.60

कल विष्णु यहाँ आ गये। उन्हीं से आपका समाचार मालूम हुआ। यह जानकर ख़ुशी हुई कि 'आप' स्वस्थ्य हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्या बात है कि कल रात को एक बजे मुझे जब मद्रास की ओर फैलने की तवज्जोह कर रही थी, तो एक धुंधला-धुँधला सा कुछ गाढ़ा कोहरा सा छाया हुआ लगा। मैंने 'मालिक' की कृपा व शक्ति से उसे साफ़ करना शुरू कर दिया। कई घंटे लग गये, परन्तु सबेरे आठ बजे मुझे एकदम से विश्वास आ गया कि अब साफ़ हो गया। तब मुझे मन में संतोष आ गया, किन्तु मैं यह न जान सकी कि वह चीज़ क्या थी, क्यों आई और सिर दर्द के कारण अब अभी ऐसा concentration नहीं कर पाती हूँ, जिससे ठीक Point पता लग जाये। जब चीज़ सामने आई तो ऐसी बात मन में नहीं आई कि यह क्या है क्या नहीं। तब तो केवल उसे करने मात्र की धुन थी। मेरी तो V_1 की सैर पूरी हो चुकी है। इसीलिये तबियत के लिये अब स्थान चलने को नहीं मिल पाता है, फिर भी तबियत का रूख़ ऊपर ही भरपूर प्रयत्न में लगा रहता है। फिर भी न जाने क्यों मुझे ऐसा लगता है कि 'मालिक' के हर शक्ति में, हर Work में समाई हुई है। यद्यपि मेरे में अब स्वयं न कोई शक्ति, न सामर्थ्य ही है। न भक्ति कर पाने की, न Devotion कर पाने की और न कुछ लेने की, न देने की ही शक्ति व सामर्थ्य मेरे में है। बस 'मालिक' देता जाता है। वह सब 'उसी' की कृपा से मैं ले लेती हूँ। यद्यपि सम्भालता भी 'वही' सब है। मुझे तो यदि कोई काम करने को न कहे, तो जीवन के अन्त तक कोई भी काम कर पाने का सामर्थ्य ही मुझ में न आयेगी।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-755

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 31.8.60

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। इधर दो-तीन दिन से टौंसिल के पक जाने के कारण मैं बीमार पड़ गई थी, परन्तु आज बिल्कुल ठीक हूँ। 'आप' चिन्ता न करें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्या बात है कि मेरे अब सारे Points इत्यादि सब फैल कर 'मालिक' में समा गये हैं। मेरे में अब कोई point इत्यादि कुछ नहीं एहसास होता है। इसलिये मैं समझती हूँ, वह सब कुछ मेरे 'मालिक' के पास, 'उन्हीं' में समा गया है। मेरा तो न जाने यह क्या हाल हो गया है कि मैं एक तरफ़ तो न किसी Circle में हूँ और न मेरा कुछ Point ही है, कोई बंधन नहीं है और दूसरी ओर मैं यह भी लिखती हूँ कि V_1 की सैर पूरी हो चुकी है और यह सत्य भी है और वह भी सत्य है। 'मालिक' जाने यह कैसी हालत है।

भाई, न जानें क्या बात है, कुछ ऐसा लगता है कि कुल हालत पर मानों हल्की धुँध सी, भूल की सी दशा छाई हुई है, बिखरी हुई है। और एक न जाने कैसी Craving हर समय रहती है, जो न कुछ चाहती है, न कुछ। बस मुझे उदास कर देती है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-756

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 7.9.60

नारायण दद्दा से आप के समाचार मिले। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

2.9.60 को रात में पूजा करते में अचानक पूरा माथा एक अपूर्व ज्योति से जगमगा उठा था और बिल्कुल खाली हो गया था। हड्डी-माँस कुछ नहीं रह गया था। बस Vibration इतना तेज़ रहता था कि प्रथम तो मैंने चीटियाँ चल रही हैं, ऐसा जानकर, कई बार झाड़ना शुरू किया, परन्तु वह तो कुछ और ही निकला। वैसे Vibration कुल पीछे सिर से लेकर कुल पीठ भर में ही रहता था। हर रीढ़-रीढ़ मानों सब ढीली पड़ गई है, एवं मानों हड्डी कहीं रह ही नहीं गई है, इतना मुलायमपना छा गया था। कुल शरीर का कण-कण मुलायमपने का मानों स्वरूप ही हो गया था। पीठ में बाईं ओर अधिक Vibration रहता था। वैसे तो Vibration कुल शरीर में, नस-नस में ही रहता था। कभी जान में, कभी अनजान में बना रहता था। सिर में पीछे दर्द भी कुछ अधिक बना रहता था और ज़रा भी ध्यान या Concentration करते ही तेज़ तुरत ही होने लगता था। इसलिये मैं अपनी जान में तो कुछ भी नहीं करती, अनजाने में भी 'मालिक' जाने 'वे' क्या करते हैं।

मेरी तो दशा बिल्कुल खाली-खाली हो गई है व मृदुता की सीमा को भी सब पी गई है। हर कण-कण मानों मृदुता (मुलायमता ही) का स्वरूप ही हो गया है। भीतर-बाहर, कुल शरीर तक मृदुता का ही स्वरूप हो गया है या यही कहना ठीक है कि ख़ुद मृदुता या मुलायमता ही मेरा स्वरूप बन गया है। किन्तु फिर भी एक आश्चर्य है, ऐसी मेरी यह दशा होते हुए भी मानों अब मेरा सम्बन्ध किसी से नहीं रहता। सब ही दशा मेरी है, किन्तु मैं किसी की नहीं हूँ। मैं तो अपने 'मालिक' की हूँ।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-757

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 11.9.60

आशा है 'आप' सकुशल होंगे। मेरी तन्दुरूस्ती अब बिल्कुल ठीक है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, न जाने क्या बात है कि इधर 3-4 दिनों से अपने अंतर-बाहर कुल शरीर के कण-कण में कुछ ऐसा होता है, जैसे धीमी-धीमी चीटियां सी काट रही हैं। इस एहसास से पहले तो कुछ थोड़ी सी सिहरन सी या कुछ आराम सा तबियत में आता है, किन्तु इसका एहसास दो मिनट ही कायम रह जावे तो तबियत बिल्कुल घबरा उठती है। इसलिये 'मालिक' ने कुछ ऐसा कर दिया है कि ऐसा एहसास होते ही मैं खट से मानों कहीं खो गई। किन्तु इस खो जाने के माने अब मुझे आपे में आ जाने के लगते हैं। अब सब कुछ उलट गया। मेरी तो दशा मृदुता व नम्रता की सीमा को भी पी गई है और ऐसी हो गई है कि जैसा मैं अक्सर 'आप' को लिख देती हूँ कि देखते हुए भी अनदेखती सी दशा रहती है। उस अनदेखने में जो कुछ रहता हो, वही मेरी दशा है। अब जो कुछ भी दशा लिखती या अनुभव करती हूँ, तो भी न जाने क्यों यह एहसास नहीं होता कि अनुभव करती हूँ, तो भी न जाने क्यों यह एहसास नहीं होता कि यह मैं अपनी दशा या अपनी बातें लिख रही हूँ या किसी और की हालत देख व लिख रही हूँ। अब तो मानों कुल System कुल तबियत, सभी कुछ उलट कर सब नया हो गया है। परन्तु इसमें नयापन का मुझे एहसास नहीं होता है। अब तो लिखते हुए भी दशा तो मानों ज्यों की त्यों ही रहती है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-758

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 19.9.60

आशा है 'आप' सकुशल होंगे। यहाँ भी सब लोग सकुशल हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

'आप' ने कल मुझे V1 से Cross करवा कर Point W1 पर कर दिया, इसके लिये मैं किन शब्दों में आप को धन्यवाद दूँ, मेरे पास शब्द नहीं हैं। अब तो दशा ऐसी सुधरी है कि उसमें माया का तो लेशमात्र कहीं Touch तक नहीं है, यद्यपि मुझे मोह हर एक का है और ख़्याल हर एक का है। हालत बिल्कुल निश्चल बन चुकी है और ऐसी कि उसे बाह्य एवं आंतरिक स्थिति तक भी मानों स्पर्श नहीं कर पाती हैं, यद्यपि मुझ पर तो हर असर पड़ता है। मैं तो बिल्कुल एक साधारण जन की ही भाँति हूँ। परन्तु न जाने कैसे मेरी उस निश्चल व निःछल हालत को कुछ भी स्पर्श तक नहीं हो पाता है। मैं तो जैसी भी हूँ, 'आप' की हूँ। एक कुछ यह होता है कि Point Cross कर जाने पर मानों अंतर की बेचैनी में कुछ Rest सा आ जाता है, किन्तु 'आप' के पास बार-बार पहुँच जाने को तबियत होती है। न जाने क्या बात है कि आनन्द का एहसास मुझे अब कभी भी नहीं होता है, जो कि अंतर में हमेशा ही मौजूद रहता था।

एक कुछ यह है कि जो भी मेरी दशा है, उससे भी चैन नहीं है, और न चैन है, न बेचैनी है। कुछ यह है कि शान्ति कभी मालूम नहीं होती है और Disturbance कभी अंतर-बाहर होता ही नहीं है। एक ओर तो दशा बिल्कुल Masterly रहती है, और दूसरी ओर इतनी झुकी रहती है कि मैं यही नहीं समझ पाती हूँ कि आखिर मेरी हालत इनमें है कौन सी? ऐसी दोतरफी हालत ही रहती है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन-विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-759

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

आशीर्वाद! — 10.10.60

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारी चाल मद्धिम यूँ दिखाई देती है कि सूनसान जगह में फैलाव हो रहा है, जिसकी वजह से हाल बेहाल हो रहा है।

यहाँ सैलाव दो आ चुके हैं। एक अभी 1 अक्टूबर, 2 अक्टूबर को आया। मकान के चारों ओर दो फीट से तीन फीट तक पानी था और फाटक के अन्दर 10-12 फीट लम्बाई में पानी आ गया था, उससे आगे नहीं बढ़ा। न कमरे में गया और न बैठक के सामने आँगन में। खेत में जरूर सब फसल चली गई। अब पानी मकान को छोड़ गया है और दरिया भी धीरे-धीरे घट रहा है और कोई अन्देशा नहीं है।

यहाँ सब कुशल है। अम्मा व चौबेजी को प्रणाम और तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-760

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 9.10.60

आशा है, मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। आज ताऊजी लखनऊ जा रहे हैं। फिर वहां से आप के पास पहुँचेंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

दशा के बारे में मैं क्या लिखूँ। इतनी धीमी चाल मुझे लगती है कि मुझे स्वयं पर बहुत खिझलाहट आने लगती है। न जाने क्यों अब मुझे कुछ एहसास हो, यह तबियत ही नहीं होती है। बस, अपने 'मालिक' के पास पहुँच चलूँ, यही धुन लगी है, फिर भी मैं देखती हूँ कि एक प्रकार की कुछ दशा मेरे चिपक सी गई है और वह स्थिर नहीं, बल्कि रेंगती सी रहती है। एक इधर न जाने क्यों मुझे लगता है कि मेरी हालत को सफ़ाई की ज़रूरत झट पड़ जाती है। शायद इसीलिये तबियत में कुछ खीझपन सी आ जाती है। कुछ भी हो मुझे तो अपने जीवन के परम धन 'आप' को जीवन में समेट लेना है और ऐसा होगा ही, क्योंकि तब तक मैं जिन्दा रह नहीं सकती हूँ।

मेरा हाल तो बेहाल है। अब तो हाल का भी अन्दाज़ा नहीं लगा पाती हूँ। यह भी पता लगा नहीं पाती हूँ कि तबियत गहरे में कभी जा पाती है या उथले ही उथले में रहती है। मैं तो बिल्कुल एक संसार के मामूली प्राणी की ही भाँति हूँ। अब तो ईश्वर से मिलने की भी चाह है या नहीं, यह भी तो मुझे पता नहीं। 'मालिक' अपना पता भी मुझे नहीं देते हैं और मैं भी बेपते ठिकाने सी हूँ और को भी कोई चाह नहीं है। मेरी सारी चाह सांसारिक एवं आत्मिक, सब कहीं चली गई है। बस कलम मेरे हाथ में रह गई है और लिखने को कुछ रह नहीं गया है। साधना में ध्यान भी मुझे कुछ रहता नहीं है। मेरे हृदय की खाली गागर अपने 'श्री बाबूजी' के प्रेम में लहलहा उठे, ऐसा मैं क्या उपाय करूँ? सच तो यह है कि मैं तो जी भरकर अपने प्रभु से प्रेम भी नहीं कर सकी।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-761

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 12.10.60

आशा है 'आप' सकुशल होंगे। मेरी तबियत भी अब ठीक है। आप के कहे अनुसार मैं अपने स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान रखती हूँ। 'मालिक' की कृपा से जा आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, यह न जाने क्या हाल है मेरा कि इतनी साधारण से भी साधारण हालत है मेरी कि यदि नौकरों के घर बच्चों व स्त्रियों से बातें करने लगती हूँ तो अपने में उनसे ज़रा भी अन्तर नहीं मिलता। भीतर-बाहर, मानों सब एक ही हो गया है। यदि मेहतर के बच्चों से बात करती हूँ तो उनसे भी मानों मैं उनकी और उन सी ही हो जाती हूँ और यदि किसी संत महात्माओं की बात चलती है,

तो मैं उनकी ही भाँति ऊँची हो जाती हूँ। असली बात तो यह है कि इसका भी पता नहीं है कि आखिर मैं हूँ क्या? एवं मेरी हालत तो कुछ भी नहीं है। हालत तो बेहालत हो गई है। हवास ठिकाने लग गये हैं, बद-हवास हो गये हैं। एक कुछ यह बात है कि हालत का पता नहीं चलता कि कहाँ तक फैली हुई है, और जैसी फैली है, वैसी फैली है। कभी सिमट कर मेरे सामने आती नहीं, जो मैं उसका कुछ पता पा सकूँ। एक कुछ न जाने यह क्या बात हो गई है कि पहले 'आप' को देखती थी तो मानों 'आप' के अन्दर मैं ही कुल में समाई मिलती थी, एवं अपना ध्यान आने पर 'आप' को अपने में छाया हुआ पाती थी। तब बड़ा अन्दर अच्छा सा लगता था। परन्तु अब तो यह सब बातें भी न जाने कहाँ और क्यों गायब हो गई हैं।

बात तो सारी यह है कि साधना या ध्यान तो मुझसे कुछ बनता नहीं है। अन्तर में प्रेम या पसीजन कभी उमड़ती नहीं। शायद इसीलिये सब कुछ गायब हो गया। हालत कुल साफ़ ही साफ़ है, यही 'मालिक' की कृपा है। मेरे अन्दर की वृत्तियां सब मानों कहीं लीन या लोप हो गई हैं। किधर भी, कैसी भी कोई वृत्ति नहीं रह गई है। यह सब क्या है, यह तो 'आप' ही जानें।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-762

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 23.10.60

कृपा-पत्र 'आप' का पूज्य ताऊजी के लिये आया। समाचार मालूम हुए। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो यह दशा है कि मैं तो हाथ पसारे ही आई थी, सो हाथ पसारे ही रह गई। मुट्ठी खुली की खुली रह गई। अंतर में कोई ताकत, कोई सामर्थ्य ही मानों नहीं रह गई है। जब तक उसे जगाऊँ न, उकसाऊँ न, तब तक कोई दशा ही नहीं होती। अब मेरा अंतर ही नहीं, भीतर बाहर, कण-कण मानों सो-सो जाता है। ख़ुद जगाने से ही कुछ चेत आता है, फिर सो जाता है। मेरे 'मालिक' न जाने क्यों मुझे नहीं सँभालते हैं। यद्यपि वे मेरा ही दोष देंगे इसमें और मैं उसे मानती हूँ कि मैं अपने जीवन, सर्वस्व, 'मालिक' की याद नहीं करती हूँ, किन्तु दोषी होते हुए भी मैं लाचार हूँ। इसलिये निर्दोष भी हूँ कि मुझमें अपने प्रिय को याद कर पाने का सामर्थ्य ही नहीं है। 'वह' इतने अच्छे इतने प्रिय से भी प्रिय और मधुर हैं कि मुझ सी तुच्छ बिटिया की याद में 'वह' समा ही नहीं पाते है, किन्तु फिर भी 'वे' मेरे हैं, मैं 'उनकी' हूँ।

न जाने अब अपनी तबियत को नम्रता का ऐसा स्वरूप हो गया पाती हूँ कि अब प्राणी मात्र मुझे अपना परम पूज्य ही दिखलाई पड़ता है। किन्तु हालत पर मानों नहीं, बल्कि मानों मेरे अन्तर-बाहर, कुल स्वरूप पर फिर हल्का सफ़ेद बादल के सदृश धुआँ आकर फिर हट जाता है। यद्यपि धुआँ शब्द हालत के लिये बहुत भारी व घना शब्द मालूम पड़ता है, परन्तु लिखने के लिये कोई उचित शब्द नहीं मिल पाता है। हृदय में तो ऐसी झुकन या नमन रहती है, परन्तु सिर तो किसी

के आगे मानों झुकना ही नहीं जानता है। 'आप' मेरे सामने रहें और मैं जी भर कर आप को प्रेम कर सकूँ एवं आप को अपने हृदय में समेट लूँ, ऐसी ही उमंग व इच्छा से मैंने पूजा प्रारम्भ की थी और देखती हूँ कि वही उमंग व इच्छा उसी मात्रा में अपने में रह गई है यानी दशा में, तब में और अब में ज़रा भी अन्तर नहीं आया है। बस, किसी बात में जो कुछ है, वह मुझे पता नहीं कि मेरे में है या 'मालिक' में है। जाने मेरी हालत में है, या 'मालिक' में, दोनों एक समान ही दिखलाई पड़ता है, फिर क्या कहूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-763

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 2.11.60

तुम्हारे पत्र सब के सब मिल गये। हालत तो तुम्हारी अच्छी चल रही है। मैं देखभाल सत्संगियों की यहाँ करता रहता हूँ, मगर नहीं मालूम क्यों मेरा दिल Sub-Consciously दक्षिण-भारत के लोगों पर रूजू रहता है। मैं 15 नवम्बर को साढ़े चार बजे शाम की गाड़ी से देहली जा रहा हूँ और वहां से 17 नवम्बर की शाम को दक्षिण-भारत रवाना हो जाऊँगा और वापसी 15-16 जनवरी को होगी। ता. 20 जनवरी सन् 1961 से मिशन का वार्षिक उत्सव शुरू होगा, 21 तारीख़ को बसन्त है।

तुम केसर को लिख देना कि वह कुछ समय रात्रि में ऐसा कर ले कि ईश्वर से प्रार्थना भी करे और ख़्याल भी बाँधे कि दक्षिण-भारत के लोग सब मिशन में आ रहे हैं और कुछ समय जब तबियत ठीक हो, तुम भी इसी के लिये दे देना। मैं प्रोग्राम तुम्हारे लिये भेज रहा हूँ।

अम्मा और चौबेजी को प्रणाम।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-764

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 30.10.60

आशा है, मेरा एक पत्र मिला होगा। कल नारायण दद्दा भी आप के पास पहुँच जायेंगे, जिससे यहाँ की याद एक बार पुन: आप को ताजी हो जायेगी। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो न जाने कैसी हालत से खाली फिरा करती हूँ कि मुझे तो अब यह अन्दाज तक नहीं लग पाता है कि मुझे ख़्याल आते हैं या बेख़्याल ही फिरा करती हूँ। बस दशा एक सी ही चलती रहती है। मझे यह तक अब पता नहीं लग पाता है कि आख़िर मैं ख़ाली क्यों फिरा करती हूँ, जबकि काम सभी करती हूँ। मुझे यह भी नहीं मालूम पड़ता है कि अब मैं चैन में

रहती हूँ या बेचैन रहती हूँ। हालत क्या है, कहने को यह कह लीजिये कि सादगी खुद ही उतर आई है और वह मेरा स्वरूप व हालत बनकर रह गई है। यद्यपि अब न कुछ जाता है, न आता है, परन्तु मैं कहूँ तो कहूँ क्या, कुछ समझ में नहीं आ पाता है। शायद हालत इतनी हल्की रहती है कि स्वभाव में अब न जाने क्यों ऐसी बात आ गई है कि झट से नरम और झट से गरम और अपने हाथ में कुछ रह नहीं गया है।

मेरे तो अब अंतर में न विरह की व्यथा ही रह गई है और न मिलन का आनन्द ही है। दशा क्या है? चाल चलती रही, गोट पिटती रही और अब चाल चल पाने को मानों नौबत ही नहीं आती है। क्या करूँ, कैसे करूँ? अपने 'श्री बाबूजी' को कैसे पाऊंगी। कब और कैसे 'उनकी' अनुपम रूप माधुरी का दर्शन कर कृत्कृत्य हो पाऊँगी। जबकि चाल चलती ही नहीं है। हाँ, पाना तो 'उन्हें' है ही, क्योंकि 'वे' मेरे हैं और मैं 'उनकी' हूँ। दशा क्या हो गई है, मानों अँधेरे ने मुझे निगल लिया है, या मैं ही अंधेरे, उजेले, सबको निगल कर अब बैठी हूँ। न कहीं राह दिखलाई पड़ती है, न कोई कहीं रहबर ही दिखलाई पड़ता है। कुछ समझ में नहीं आता है कि कैसे पहुँचकर 'उन्हें' मिल पाऊँगी। पहले जब शाहजहाँपुर जाने को सोचती थी, तो लगने लगता था कि 'आप' मुझे मिलेंगे, कितनी ख़ुशी होगी और 'आप' कितने ख़ुश होंगे, परन्तु अब शाहजहाँपुर चलने की सोचने पर भी अन्दर कुछ अच्छा तो लगने लगता है, परन्तु मिलन की उमंग व बात तब भी सामने नहीं आती है। तब एकदम से ख़्याल आता है कि क्या 'आप' वहाँ है? या दक्षिण चले गये हैं। तो ऐसा भी नहीं लगता है। सब 'आप' ही जानें। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-765

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 12.11.60

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। आप मिशन के काम से दक्षिण-भारत जा रहे हैं और मुझे तथा केसर को जो काम आपने दिया है, वह जरूर करूँगी। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो यह दशा है कि 'आप' तो लिखते हैं कि दशा अच्छी चल रही है और मेरा हाल यह है कि कुछ भी परिश्रम तो दूर रहा, याद तक मुझे कभी नहीं आती है और न जाने क्यों जब मैं 'मालिक' की याद करती भी हूँ, तो भी मुझे यह नहीं लगता है कि मैं याद कर रही हूँ। शायद इसीलिये अब, पहले जो मुझे हर समय अपने में से अपने चारों ओर पवित्रता की किरणें सी फैली लगती थी, वह भी अब मुझमें समा लगती है। मैं तो साधना के हर अंगों से अपने को बिल्कुल ही Nil पा रही हूँ। हर तौल में मैं अपने को Nil ही पा रही हूँ। एक कुछ यह बात है कि 'आप' मुझे जो भी काम के लिये कहते हैं, उसमें आप के दिल में सदैव मार्जिन रहता है। इसलिये मेरी उस अपार शक्ति में, जिसका केन्द्र 'आप' ही हैं, मेरे में सदैव मार्जिन ही बना रहता है। शरीर जरूर मेरा कमज़ोर है, किन्तु मन व दिमाग को तो ताकत अपने केन्द्र ('आप') से ही मिलती है। फिर उसमें कमज़ोरी कहाँ से आ सकती है। मेरा दिल Sub-consciously कहीं काम में रूजू रहता

है, किन्तु मैं यह नहीं जानती कि कहाँ और किस काम में रूजू है। पता नहीं यह सब, जो कुछ भी मैं लिखती हूँ, यह अपनी हालत लिखती हूँ या 'आप' की ही लिखती हूँ।

भाई, अब तो कुछ ऐसी दशा है कि शरीर का मन एवं इच्छाओं का Connection ही नहीं वरन् मेरा रोम-रोम का Connection मुझसे दूर हो गया है। अपने भीतर व बाहर की कुछ ऐसी दशा है कि कोई कुछ भी किसी से सम्बन्ध ही नहीं लगता है और काम सभी चलते जाते हैं। सारे सम्बन्धों व सारे लगावों की मानों एक साम्य गति होकर फैल गई है जो सतत् थी, सदा है और सदा रहेगी और जिसकी स्वयं न कोई विशेषता है, न महत्व ही है। न मालूम मुझे क्या हो गया है कि या तो स्वयं मुझमें कोई विशेषता नहीं है। शायद इसीलिये या क्या कि मैं ईश्वर व 'मालिक' इत्यादि सब कुछ कहती रहती हूँ व शरण में पड़ी हूँ, परन्तु मुझे अब किसी की कोई विशेषता या महत्ता का अनुभव ही नहीं हो पाता है। बस, कुछ भी हो, 'मालिक' मेरा है, मैं 'उसकी' हूँ,भले ही मैं निर्गुणी हूँ। पता नहीं, यह मेरा हाल है या हाल का हाल है या मुझ बेहाल का हाल है। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-766

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 12.11.60

भाई पुत्ती बाबू द्वारा आप के समाचार मिले। उनसे आप के स्वास्थ्य तथा तमाम बातें सुनकर बड़ा हर्ष हुआ। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, 'आप' कहते हैं कि मनुष्य को इन्तहाई पहुँचने के बाद राहत व राह का अन्दाज़ मिल पाता है और मेरा न जाने यह क्या हाल हो गया है कि पहुंच शब्द भी मेरे लिये मानों कहीं खो गया है। उसकी तह में जब मैं अपने को पैठाती हूँ तो मुझे कुछ मिलता ही नहीं है, तब फिर भला मैं कैसे 'मालिक' से मिलने की राह तक पहुँच पाऊँगी, जबकि पहुँच में मेरी समाही ही नहीं हो पाती है और पहुँच में समाही की बात तब हो, जबकि अभी तो मुझे लगता है कि आध्यात्मिकता में अभी मेरा कदम ही नहीं उठ पाया है। न जाने क्या बात है कि मेरे अन्दर की वह खिंचन, जो कि मुझे मेरी हालत का पता देती थी, नहीं, बल्कि जो चीज़ स्वयं उसका पता देती थी, वह सब मानों सिमटती चली जाती है। मैं तो 'मालिक' से कुछ फरियाद लेकर चली थी परन्तु अब मुझे वह फरियाद ही याद नहीं आती है। बहुत याद करती हूँ, परन्तु कोई याद ही अन्तर में नहीं जाग उठती। सब कुछ मानों अन्तर-बाहर का सो गया है। कण-कण मेरे भीतर-बाहर का मेरा रोम-रोम सब मानों सोया पड़ा है, जाग्रत ही नहीं होती। हाँ, कहीं ठोकर या चोट लगने पर एक क्षण को जाग्रति सी मालूम होकर पुन: तबियत सो जाती है। मैं यह जानती हूँ कि जाग्रति से ही मेरे अन्दर वह तड़प, वह पावन याद, वह मधुर मूर्ति,सभी जाग उठेगी। परन्तु मुझे कुछ अपना भेद ही नहीं मिलता कि क्या हो रहा है। यह सब तो 'आप' ही जानें।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-767

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली
सादर प्रणाम! 2.9.61

आशा है, 'आप' सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो 'आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने मुझे कुछ ऐसा हो जाता है कि जो काम मुझे 'आप' सौंप देते हैं, उसकी कुछ हर समय की ऐसी धुन सी बँध जाती है कि फिर मुझे अपनी दशा को Read कर पाने तक की सुधि नहीं रह जाती है।

मेरी तो कुछ ऐसी दशा है कि लगता है कि तबियत को वही तवज्जह अच्छी लगती है एवं आराम देती है, जिसकी उसे ख़बर व खटक न मिल सके। कुछ यह दशा है कि पहले तो 'मालिक' की याद न आने पर तबियत ऐसी बेचैन होती थी कि जैसे मछली को पानी में से निकाल लेने पर होती है। किन्तु अब यह दशा है कि जब याद करने की याद आती है, तब ऐसी घबराहट होती है, जैसे मछली को जल से निकाल लेने पर होती है। अब तो लगता है कि Point की सैर तो पूरी हो चुकी है, किन्तु अपनी मेहनत काम नहीं देती है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इदि:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-768

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली
सादर प्रणाम! 16.9.61

आशा है मेरा एक पत्र आप को मिला होगा। यहाँ सब सकुशल हैं, आशा है आप भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब न जाने यह क्या बात है कि अपने अन्दर जब भी 'मालिक' को याद करने की याद आती है, तब एक प्रार्थना वैसी हालत पाती हूँ, किन्तु क्या प्रार्थना है, यह मुझे कुछ पता नहीं मिलता है। बहुत ख़्याल करने की कोशिश करती हूँ, किन्तु कोई ख़्याल ही नहीं आता। यही सोच लेती हूँ कि शायद पहले कोई प्रार्थना की होगी, किन्तु वह तो अब भूल गई है। बस हालत रह गई हो या क्या है, यह 'मालिक' ही जानें। मेरे तो तन, मन,ध्यान एवं प्रार्थना, सबका केन्द्र एकमात्र 'आप' ही हैं। मेरी तो सुधि-बुधि भी आप ही हैं।

भाई, मेरी तो कुछ ऐसी दशा है कि अब दशा को बुद्धि स्वयं ही नहीं समझ पाती है। न प्रयत्न से समझ पाती हूँ। बस, सहज ही कभी समझ में आ पाती है, सोई लिख लेती हूँ। इसीलिये 'आप' को पत्र देर में ही डाल पाती हूँ। कैसे क्या लिखूँ, कुछ समझ में नहीं आता है।

भाई, दशा तो अब कुछ समझ में ही नहीं आती है। जब जन्माष्टमी पर 'आप' के पास गई थी, W_1 point की सैर तो तभी समाप्त हो चुकी थी। अत: हाथ-पैर चलाने को सामने मैदान

ही नहीं है। तबियत अक्सर बिल्कुल मरी-मरी सी रहती है। पहले मैंने लिखा था कि फ़नाइयत भी फ़ना हो गई लगती है, परन्तु अब तो मुझे कोई दशा ही नहीं मालूम पड़ती है। इसीलिये 'आप' को अब क्या लिखूँ? यह नहीं सोच पाती हूँ। तबियत अनमनी सी रहती है। ऐसा क्यों हो गया, यह कुछ समझ नहीं पाती हूँ। हाँ, मन में दृढ़ता कहूँ या विश्वास कहूँ, उसकी भी सीमा टूट चुकी है और 'मालिक' की आज्ञा के इशारे पर अपने में हर प्रकार की शक्ति मौजूद मिलती है। इसलिये मैं तो केवल यही कह सकती हूँ कि 'मालिक' की आज्ञा अथवा इशारा ही मेरी शक्ति का केन्द्र है।

दशा को अब मैं आध्यात्मिक-दशा तो नहीं कहूँगी, वरन् एक परिपक्व दशा ही मेरे अन्दर समाकर लीन हो रही है। ऐसा मैंने पहले भी लिखा था आपको किन्तु अब मुझे बिल्कुल सपाट दशा ही लगती है। यह सपाट दशा ही मेरा स्वरूप हो गई है। न जाने इतनी मरी सी नीरस दशा के ही कारण लेख इत्यादि लिखने बैठती हूँ, तो लगता है कि मेरे अन्दर कोई विचार ही नहीं रह गये हैं, फिर कैसे लिखूँ? मेरा मन, अंतर व शरीर सब मेरे 'श्री बाबूजी' का ही स्वरूप है। यह दशा तो सहज ही जाने या अनजाने में भी दशा में मिल गई है, समा गई है। परन्तु और कोई ख़्याल ही नहीं उठता है। लगता है कि विचारों का Origin ही कहीं नहीं है। इधर-उधर कोई यदि जोश के ख़्यालात बोलने लगता है, तब मेरे अन्दर भी वैसे ख़्याल कुछ उठने लगते हैं, परन्तु फिर समाप्त हो जाते हैं। वैसे मैं देखती हूँ कि मेरी अनजाने में भी ख़ुद-ब-ख़ुद विचारों का तांता सा जुड़ा रहता है, परन्तु मेरा उससे ज़रा सा भी सम्बन्ध नहीं हो पाता है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या--769

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 20.9.61

बहुत दिनों से आप का कोई समाचार नहीं मिला। चिन्ता लगी है। कृपया अपना समाचार शीघ्र दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरे अन्दर विचार शक्ति नाम की भी कोई चीज़, कोई हालत ही नहीं रह गई है। मेरे में तो निर्बलता, सबलता कोई चीज़ भी अनुभव नहीं होती है। बस शरीर हल्का-फुल्का चला-फिरा करता है, वरना सम्बन्ध उससे भी मेरा किसी प्रकार का भी कुछ अनुभव ही नहीं होता है। मुझे लगता है कि दशा में कुछ हल्की-फुल्की सी बदली अन्दर होती भी रहती है, किन्तु मैं तो ज्यों की त्यों बनी रहती हूँ। कभी कोई Change आता ही नहीं।

भाई, न जाने क्या बात है कि मुझे अपनी दशा पर ज़रा भी संतोष एवं धीरज नहीं आता है। तबियत प्रतिक्षण कुरेदती है। वैसे अपने भीतर से बाहर तक सब घूम आती हूँ। कहीं कोई

Disturbance नहीं। सब ओर शरीर का कण-कण तक मानों एक शान्त, सहज अवस्था में स्थिर हो गया मिलता है, परन्तु तबियत कुरेदती है। चैन नहीं लेने देती। मुझे तो 'आप' तक पहुँचना है। यह मन की कुछ स्वाभाविक धुन लगी हुई है। अब तक तो यह दशा थी कि मानों सीन बदल जाता है, स्टेशन ज्यों का त्यों रहता था। परन्तु अब यों कहिये कि जिस हालत की वजह से हालत होती थी, वही अविचल गति मेरे कण-कण में भिद चुकी है। मुझे अब आगे हाथ-पैर चलाने को स्थान नहीं मिल पा रहा है। अब 'आप' ही संभालेंगे, अपनी बिटिया को। कुछ ऐसा लगता है कि मैं दशा के लिये स्वाभाविक या सहज शब्द लगाती हूँ, किन्तु दशा मेरी उससे भी हल्की है, जहाँ मैं शब्द नहीं लगा पाती हूँ। हल्की, शब्द भी कहने को कह लिया है, वरना यह शब्द हल्का तो शरीर के लिये भले कह लिया जावे, क्योंकि न जाने अब शरीर भी अब सूक्ष्म हो गया है या क्या, 'आप' ही जानें।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-770

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली
सादर प्रणाम! 20.9.61

कल पूज्य ताऊजी के लिये आप का पत्र आया। समाचार मालूम हुए। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने अब तो कुछ ऐसा लगता है कि तबियत उदासीनता जहाँ पर अथाह चली गई है, वहीं जाकर डूब गई, वापिस ही नहीं आती है। यद्यपि मुझे उदासीनता इत्यादि का कुछ पता नहीं मिलता है। हाँ, कभी जब कहीं मुझे झटका लगकर या वैसे भी जब कभी तबियत का अन्दाज़ा मिलता है तो उदासीनता मालूम पड़ती है। हालत भी तुरत ही फिर जहाँ से आती है, वहीं फिर वापिस लौट जाती है और फिर क्या, दशा मेरे सामने आई थी, यह मैं भूल जाती हूँ। मेरी नींद का भी यही हाल रहता है कि उचाट सी रहती है, कभी गहरी आती नहीं है। मुझसे तो अब Self-Surrender इत्यादि, कोई भी अभ्यास नाम की चीज़ ही नहीं पाती है। अच्छाइयों को देख[illegible] हूँ और अपने में लाने का प्रयत्न करती हूँ, किन्तु मुझसे अब कुछ भी नहीं सधता है। यद्य[illegible] मैं तो इतनी अब हीन हूँ कि अपने में कोई गुण, कोई बात ही नहीं पाती हूँ। मुझमें तो भाई, अब न बनने की शक्ति है, न बिगड़ने का सामर्थ्य है और व्यवहार में भी जैसे के संग तैसा ही करने का भी सामर्थ्य नहीं है। बस जो और जैसा हो रहा है, सो हो रहा है। मैं अपनी ओर से कोई अपना दखल उसमें दे सकूँ, ऐसा नहीं हो पाता है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-771

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली
सादर प्रणाम! 14.10.61

कल नारायण दद्दा आये। उन्हीं से 'आप' का समाचार मालूम हुआ। 'आप' को साँस की तकलीफ़ फिर हो गई है, सुनकर चिन्ता हो गई है। ईश्वर करे आप शीघ्र स्वस्थ हो जाये। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने अब तो कुछ यह हाल हो गया है कि कोई भी 'मालिक' का काम Seriously बस दो-तीन मिनट से अधिक कर ही नहीं पाती हूँ। बार-बार ख़्याल से करती हूँ तो कुछ नहीं, नहीं तो, दो-तीन मिनट से अधिक नहीं कर पाती हूँ। यही हाल पूजा करवाने में हो जाता है कि Cleaning को छोड़कर वह चाहे जितनी देर हल्के-हल्के ख़्याल से करती रहूँ, पूजा Seriously दो-तीन मिनट से अधिक कर ही नहीं पाती हूँ, जी घबड़ा उठता है। अब मुझसे Seriously तो कोई काम हो ही नहीं पाता है।

न जाने यह क्या दशा है कि सब साधना का फल, मन की एकाग्रता एवं स्थिरता ही होना चाहिये, किन्तु मेरा तो उल्टा हाल है कि यदि कभी ध्यान में एक मिनट को भी मन बिल्कुल एकाग्र या स्थिर होने लगे तो ऐसा लगता है कि शरीर मानों समाप्त हुआ जा रहा है और तभी कोई शक्ति तुरत कुछ Disturbance पैदा कर देती है। मुझे अभी तक अंतर में चैन या संतुष्टि नहीं मिल पाती है। कोई कसक हर समय कसकती है। यह भी अजीब बात है कि मेरी वास्तविक दशा व रहनी-सहनी का स्थान केवल वही स्थिर सतत् दशा है, जिसमें मैं एक मिनट चैन से रह भी नहीं पाती हूँ। कोई शक्ति मुझे वहाँ से खींचे रहती है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन-विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-772

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली
सादर प्रणाम! 23.11.61

आशा है आप स्वस्थ होंगे। यहाँ भी सभी लोग सकुशल हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मुझे लगता है कि मेरी दशा व रहनी-सहनी का स्थान एक स्थिर व सतत् दशा ही रहती है, किन्तु कोई शक्ति मुझे खींचे रहती है, परन्तु उस खिंचाव का रूख सदा ऊपर की ही ओर रहता है। कितनी महान कृपा 'आप' की है कि मेरे जैसी बालिका को, जिसकी प्रवृत्ति बस एक साधारण संसारी जीव की तरह संसार के कामों में ही व्यस्त रहती है। 'मालिक' का स्मरण अब जिसे दिलाने से भी नहीं आता है, उसे भी अपने वरद्-हस्त कमलों द्वारा अनजान में भी अपनी ओर खींचे हुए हैं। यही नहीं, न जाने यह क्या एक कुछ मेरी दशा है कि मुझे अपने आप ही अचम्भे की सी दशा लगती रहती है और लगता है कि अब उसमें मेरा भिदाव होता जा रहा है। यह सब बातें तो 'आप' ही बता सकते हैं।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-773

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 16.12.61

इधर मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं चल रही है। लेकिन 'आप' चिन्ता न करें। दवा खा रही हूँ, जल्द ही ठीक हो जाऊँगी। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने मेरी कुछ ऐसी दशा है कि अब जहाँ जाती हूँ, जो कुछ चलती हूँ, केवल मानों Negative (नहीं) ही Negative मिलता है। मन Positive (अपने प्रियतम) को अधिक से अधिक चाहता है, बेचैन होता है, किन्तु केवल Negative के कुछ हाथ नहीं लगता है। अक्सर मैं यह ज़रूर तबियत को तौलने को प्रयत्न करती हूँ कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि मेरा अपने प्रभु से मिलने के प्रयत्न में तो कमी नहीं है, परन्तु अन्तर में अब हालत ही Negative की मिलती है। वैसे कभी तो मुझमें है, और 'मालिक' जाने वे कैसे सब स्वयं ही सम पर आकर विलीन होती जाती है। यद्यपि ध्यान मेरा इधर भी नहीं जाता। सब मेरे 'मालिक' स्वयं ही कुछ न कुछ अन्तर में बैठे किया करते हैं। तबियत की वह विनम्रता, गलाव एवं टिघलन, जो स्वत: ही अन्तर में रहती थी, अब कहीं नहीं मिलती है। शरीर से अपने मिशन एवं अपने 'श्री बाबूजी' की ही सेवा होती है। ऐसे भाव अपने आप ही अंतर में बने रहते थे, किन्तु अब न जाने क्या हो गया है कि मुझे प्रयत्न से भी Negation ही मिलता है। हर कोशिश का, हर विचारों के मूल में Negative ही उत्तर मिलता है। एक यह अजीब बात पाती हूँ, कि हर साधनों में एकान्त की बड़ी विशेषता बताई जाती है, व बताई गई है, किन्तु मैं एक अजीब बात अपने में पाती हूँ कि एकान्त में मानों मन उचाट सा रहता है, भरे में कुछ अच्छा लगता है। यद्यपि क्या अच्छा लगता है व क्यों, यह अंतर (भेद) मैं नहीं जान पाती हूँ। यह तो 'आप' ही जानें।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-774

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 24.12.61

'आपका' कृपा-पत्र पूज्य ताऊजी के लिए आया। उसी से मालूम हुआ कि अब 'आप' स्वस्थ हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने कुछ ऐसी बात है कि दशा पहले दशा लगती थी, अब दशा कोई दशा नहीं लगती,

अर्थात, अपने से कोई मार्क नहीं होती, बल्कि ऐसे, जैसे अपनी आदत या स्वभाव अपने से फ़र्क चीज़ नहीं महसूस होती, उसी प्रकार दशा एक Natural चीज़ है, जिसकी अपनी कोई विशेषता या पृथकत्व नहीं है। इसीलिये दशा की Reading अब कोई सरल बात नहीं है किन्तु विशेष बात भी नहीं रह गई है। एक अजीब प्रकार की उदासीनता ही मानों मेरा स्वभाव बन गया है, एक स्वाभाविक, साधारण। यद्यपि उसे उदासीनता कहनी भी बिल्कुल सही माने नहीं देता है, बल्कि एक Negligence की स्थिर दशा ही स्थिर रहती है। दशा को अब स्थिर कहना उतना ठीक नहीं लगता, जितना कि एक शून्य एवं सम हालत का ही विस्मृत-क्षेत्र पाती हूँ। अब आंतरिक दृष्टि के विपरीत एक ऐसी दृष्टि लगती है, जो नितान्त शून्य है। अपनी निगाह का जब कभी होश आता है तो न वाह्य पाती हूँ, न अंतर में, बल्कि बिल्कुल शून्य पाती हूँ। ऐसी ही मन की भी दृष्टि से मानों मिली दशा रहती है। एक बात न जाने क्यों यह पाती हूँ कि जैसी निगाह शून्य रहती है, किन्तु अपना System वैसा नहीं पाती हूँ। System दशा या दृष्टि से कुछ भारी पड़ता है, इसीलिये उस पावन शून्यता का उतना आनन्द कुल में शीघ्र नहीं व्याप्त या भिद पाता है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-775

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 17.4.62

बहुत दिनों से 'आपका' कोई समाचार नहीं मिला। चिन्ता लगी है। कृपया अपना समाचार शीघ्र दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

न जाने क्या बात है कि 'आपके' पास चले जाने पर लगता है कि मानों मरहम सा लग जाता है। तबियत में बहुत Rest आ जाता है। यद्यपि पूजा तो मुझसे नहीं होती है। हाँ, मैं बैठती जरूर हूँ। अब न जाने क्या बात है कि अब तक मन में एक अजीब दृढ़ता सी रहती थी, किन्तु फिर कुछ उससे भूली सी तबियत रहने लगी और अब मिलती ही नहीं। न तो कोई कमज़ोरी ही है, और न दृढ़ता ही लगती है। मैं तो बिल्कुल लुट चुकी हूँ। मैं तो बिल्कुल खाली व गुमसुम फिरा करती हूँ। अपनी ख़ामोश, सादी व ख़ाली हालत को दाब कर दुनिया से मिली रहने का प्रयत्न करती हूँ। कुल System तक बिल्कुल उजाड़, वीरान पड़ा है। अब तो न दीन की, न दुनिया की कोई इच्छा या असर होता है। मैं तो सुनसान हो गई हूँ।

अब मुझे ऐसा लगता है कि X_1 point पर मैं आ गई हूँ। भाई, न जाने क्या बात है कि ऐसा लगता है कि बीमारी के बाद मैं काफ़ी हल्की हो गई हूँ। एक यह न जाने क्या बात हो गई है कि मैं अब ध्यान इत्यादि मैं बैठती हूँ, तो मुझे सब कुछ aimless लगता है। जैसे सांसारिक काम होते रहते हैं, वैसे ही ध्यान इत्यादि का हाल है। यही नहीं, बल्कि ऐसे ही अपना जीवन मानों aimless हो गया है। बहुत सोचती हूँ कि जीवन तो मेरे मिशन की सेवा के हित है, परन्तु न जाने,

जी भरकर उसकी कुछ सेवा कर नहीं पाती या क्या। अब यह बातें केवल कुछ उत्तेजना देने के फिर ठप हो जाती हूँ। एक कुछ करीब 12-14 दिन से नाभि के ऊपर 6-7 अंगुल में तथा लम्बाई में एक बालिश्त तक बड़ी ज़ोर-ज़ोर से फड़कन तथा हल्की गुदगुदी या सिहरन होती है कि कभी-कभी तो मैं हाथ रख लेती हूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-776

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 28.5.62

आशा है 'आप' सकुशल होंगे। इधर मेरी तबियत भी ठीक चल रही है। 'मालिक' की कृपा से आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्यों इधर मुझे लगता है कि मेरी दशा अब इतनी हल्की है कि मैं उसे पकड़कर भी उसमें एक होकर नहीं चल पाती हूँ। किन्तु विचार से तो उस हालत रूपी अपने 'श्री बाबूजी' से चिपटी ही रहने का प्रयत्न करती हूँ और 'आपने' कहा था कि प्रयत्न कभी निष्फल नहीं जाता है। यह बात मेरे अंतर में घर कर गई है।

इधर न जाने क्यों मुझे कुछ ऐसा लगने लगा है कि बरेली में भी ईश्वरीय-शक्ति, ईश्वरीय-धारा, प्रवाहित कर देगी। मुझे लगता है कि कोई स्वच्छ- दशा मेरे अंतर-बाहर सब ओर फैली हुई है, जिसकी तह में मुझे 'आपका' ही आभास मिलता है। एक न जाने यह क्या बात हो गई है कि सब लोग जब कहते हैं कि सब एक मात्र ईश्वर का ही पसारा है, तो मुझे न जाने क्यों पसारा शब्द बहुत भद्दा लगने लगता है। मुझे तो केवल स्वच्छ शीशे की भाँति फैला, जिसमें केवल एक मेरी ही तस्वीर दिखाई पड़ती है, कुछ और पता ही नहीं लगता है और मेरे कहने में मानों कोई जान ही नहीं है।

दशा क्या है, जिसमें किसी तत्व की उपमा भी नहीं दी जा सकती है। आकाश तत्व भी दशा से बड़ा भद्दा लगता है। बस एक ही बात कहने से दशा की थाह मिल सकती है कि 'श्री बाबूजी' की है, बस लगता है कि X_1 point की सैर 'आपकी' कृपा से शुरू हो गई है परन्तु ऐसी कुछ हालत होते हुए भी मेरा मन संसार में अत्यधिक उचाट रहता है। सच पूछा जाये तो मैं मन को बहलाती हूँ, नहीं तो दुनिया में रहना कठिन हो जाये। मन किसी को अपने में समेट लेने के लिये अपने में समा लेने को अधीर रहता है। बुद्धि खोई-खोई सी रहती है। निगाह शून्य रहती है। बस, जितनी देर अपने 'मिशन' के लेख इत्यादि लिखने में, उसके फैलने की प्रार्थना में लगती है, उतने समय तो बहुत अच्छा लगता है, नहीं तो घर में चाहे जितने लोग हों, मेरा मन खोया सा अधीर रहता है।

कुण्डलिनी का Function कुछ ऐसा लगता है कि मानों जीव को ब्रह्म से योग करने के बीच की शक्ति है और सहस्त्र दल जहाँ वह स्थित होती है, वह भी मनुष्य की गुरू शक्ति द्वारा अपनी शक्ति से पहुँच का अन्तिम Stage है, जहाँ वह अपने से ऊपर उठ जाता है। फिर गुरू शक्ति ही उसे आगे बढ़ाती है। शिष्य की शक्ति या लगन का केवल उसमें योग रहता है। इसीलिये कुण्डलिनी

के जगाने के बाद से लगता है कि प्राणों का रूख ऊपर ही रहने लगता है। कुण्डलिनी की रहनी की दशा वैसे अधोमुखी होती है, इसीलिये यदि वह मन के ऊर्ध्वमुखी होने से पहले जग जाये या जगा दी जावें तो मनुष्य की वृत्ति बजाय ऊर्ध्व के अधोमुखी हो जाती है। योग्य सत्‌गुरू तभी इसे जाग्रत करते हैं, जब मन को ब्रह्माण्डी मन बना देते हैं। मेरी समझ में जो आया, सो मैंने लिख दिया, बाकी 'आप' जानें आप का काम जानें।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-777

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 20.6.62

पत्र तुम्हारा आया। Dr. Vardhachari ने मुझको लिखा था कि मैं जल्द ही कस्तूरी के लिये दवा भेजूँगा, वह शायद आ गई हो।

तुम्हें अपनी हालत लिखने में नहीं आ रही है और मुझे भी तुम्हारी हालत लिखने के लिये शब्द नहीं मिलते। इसके माने यह है कि तुम उस शुद्ध अवस्था में हो, जिसके बाद से शब्दावली शुरू होती है।

बच्चों को दुआ।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-778

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 2.8.62

आशा है 'आप' कुशल पूर्वक होंगे। Dr. Vardhachari की भेजी हुई दवा मिल गई। अब मेरी तबियत ठीक है, चिन्ता मत कीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, कुछ ऐसा स्वप्न देखा कि मानों कोई Plannet भागते चले जा रहे हैं। एक Plannet फट गया है, और तमाम आग फैल गई है। फिर उसमें से तमाम पानी ही पानी सब ओर फैल गया है। स्वप्न में पहले तो देखा कि 'आप' ने मुझे कोई बहुत बड़ी शक्ति प्रदान की है। वह मैंने अपना ली है। फिर उस शक्ति की कुछ बातें 'आपने' मुझे समझाई और मैं समझ गई। फिर वह Plannet वाला दृश्य देखा। सबेरे उस शक्ति की बातें, जो मुझे 'आपने' समझाई थीं, बहुत याद करती रही, किन्तु याद नहीं आई।

अब न जाने मुझे यह क्या हो गया है कि बाहर मैं बराबर अपने 'श्री बाबूजी' का ध्यान करती

रहती थी, तो चाहे 'उनके' पावन रूप को मैं नहीं अनुभव कर पाती थी, किन्तु ख़्याल बँधा रहता है कि मानों 'आप' मेरे साथ हैं, परन्तु अब, बाहर सामने पावन स्वरूप तो दूर रहा, चाहे कितना ख़्याल में लाऊँ, आते ही नहीं, और बाँधे भी रहूँ तो कोई विशेषता मालूम नहीं पड़ती है। न कोई पूजा तक का अनुभव कभी हो पाता है। न ख़्याल अब अंतर ही में ठहर पाता है। बस, मानों ख़्याल का ख़्याल बाँधे रहती हूँ, ऐसा लगता है अब न जाने मेरा क्या हाल है कि अब तक भजन मीरा, कबीर इत्यादि के गाने में मुझे कुछ तन्मयता सी आती थी, तो मन गाने का रहता था, परन्तु इधर बहुत दिनों से भजन इत्यादि गाने का मन ही नहीं होता है। न तन्मयता आती है, न प्रेम। बिल्कुल सूखा कीर्त्तन सा मालूम होता है। इसलिये गाने का भी मन नहीं होता है। न गाने से कुछ असर ही मुझे लगता है। लगता है Nature मुझसे कोई मानों Destruction Work सा चाहती है, ऐसी ही बातें सामने रहती हैं।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-779

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 2.9.62

आशा है मेरा एक पत्र मिला होगा। **यहाँ सभी लोग कुशल पूर्वक हैं। आशा है, आप भी स्वस्थ** होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

आपने कृपा करके मुझे X1 point cross करवा कर Y_1 point पर डाल दिया, इसके लिये धन्यवाद कैसे दूँ, मेरे पास शब्द नहीं है। 'आपके' पास से आने पर तबियत अत्यन्त विशुद्ध है। न जाने अब भाव तो कैसे भी कभी भी उठते ही नहीं हैं। भावनाओं की तो मानों सीमा ही समाप्त हो गई है। किन्तु मेरा मन कुछ तड़पता सा रहता है। किन्तु यह तड़प मेरे प्राणों में प्राण फूँकता रहता है। बस तबियत दृढ़ है और 'मालिक' के काम में कभी भी कच्चापन नहीं आने पाता है। एक कुछ यह देख रही हूँ कि जबसे आपने आसाम जाने का निश्चय किया है, वहाँ का आकर्षण मिशन की ओर मानों झुक सा रहा है। एक न जाने क्या मुझे कुछ ऐसा अनुभव होता है कि मानों मैं अपने श्री बाबूजी की आँखों में समाकर खो गई हूँ, विलीन हो गई हूँ। 'मालिक' की शून्य आँखों में मेरा अब पता नहीं मिलता है, क्योंकि ऐसा लगता है कि मानों मेरी दृष्टि भी शून्य हो गई है। दशा अब तो मानों शून्य से भी शून्य होती चली जा रही है।

भाई, मेरा तो अब यह हाल है कि कोई हाल ही नहीं है। कोई उमंग, कोई भाव, कोई गुण, कुछ अन्तर में उठते ही नहीं हैं। पहले मेरा कुछ ऐसा हाल था कि जैसे सब एक साँ हो गया लगता था। प्राणी मात्र मुझे कुल एक ही सा लगता था, किन्तु अब तो सब मानों जैसा है, वैसा ही है। कोई विशेष बात नहीं लगती है। अपने 'श्री बाबूजी' की महानता एवं विशेषताओं का स्मरण बार-बार करके चिमटने का प्रयत्न करती हूँ, किन्तु दशा में कोई अन्तर नहीं आता है। सब मानों सहज

एवं स्वाभाविक बातें हैं। कोई भाव नहीं उठता है। सब मानों जैसा है वैसा ही रहता है। कोई दशा में परिवर्तन नहीं आता है। वह तो जैसी चलती है, वैसी चलती है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-780

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 29.9.62

कृपा-पत्र 'आपका' बहुत दिनों से नहीं आ रहा है, सो क्या बात है। कृपया अपनी तबियत का हाल शीघ्र दीजिएगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

हाल तो भाई, अब यही है कि कोई हाल नहीं है। न कुछ सोचते बनता है और न समझ में आता है, किन्तु सच बात तो यह है कि समझ में आने योग्य कुछ हो भी, तब समझ में आवे। या समझ हो, तब समझ में आवे। अब तो बेसमझी है, ऐसा अन्दाज़ भी नहीं लगता। बस, यही कह मिलता है कि दशा वैसी ही है, जैसी है। कस्तूरी तो जैसी थी, वैसी है, कोई अन्तर नहीं। मेरा सारा होश, जैसे वापस आ गया हो। बस एक बात थोड़ी सी इतनी है कि चाहे पूजा पर न भी बैठूँ, तो भी कोई बस कर दे तो अन्दर ही अन्दर कुछ ऐसा धक्का सा पहुँच जाता है, परन्तु मुझ पर मानों कोई असर ही नहीं पड़ता है। मुझे कुछ ऐसी बेचैनी, मानों कुल अंतर बाहर, नस-नस में अन्दर ही अन्दर व्याप्त रहती है कि मैं पूजा करूँ भी तो 'मालिक' से जुड़ नहीं पाती हूँ और 'मालिक' की दूरी है, ऐसा ख़्याल अन्दाज़ में लाने की भी मानो कहीं गुंजाइश ही नहीं है, किन्तु अन्दर ही अन्दर एक कुरेदन मुझे चैन से बैठने नहीं देती है। परन्तु अब तो मुझे मेरे 'श्री बाबूजी', चैन और बेचैनी मानों सब एक साँ ही लगते हैं। यही नहीं, कुछ ऐसा हो गया है कि दर्द दवा और दवा दर्द सब मानों एक साँ ही हो गये हैं। बिल्कुल सादी दशा है। अब तो अन्दर-बाहर सब एक ही है। बनावट कहीं नहीं है। यही नहीं, मैं बनी हूँ, मुझे किसी ने बनाया है, ऐसा भी मुझे नहीं लगता है। कोई मेरी जननी है, कोई पिता है, ऐसा भी नहीं लगता है।

भाई, न जाने क्या बात है कि केवल तबियत ही उदासी का स्वरूप नहीं बन गई है, वरन् भीतर-बाहर, शरीर का रोम-रोम, कण-कण से मानों उदासी निकलती मालूम पड़ती है। तबियत मानों रह-रहकर, मानों अपने ही में डूबी-डूबी जाती है। शरीर का कण-कण मानों छिन्न भिन्न हुआ जाता है। तबियत ऐसी डूबी जाती है, मानों शरीर, प्राण, सब निष्प्राण हुआ जाता है किन्तु कोई शक्ति मुझे पूरी तौर से ख़ुद मुझे अपने में डूबने से मानों बाहर उबार-उबार देती है। ऐसा लगता है कि यदि मुझे मेरे में से बाहर न निकाल दे, पूरा जी भरकर डूब जाने दे, तो प्राण निर्जीव हो जायेंगे। यह घोर उदासीनता मानों मेरे घर में से पैदा होकर निकल रही है। उचाट एवं उदास मन बस ऐसा चाहता है कि आँख बन्द किये पड़ी रहूँ, परन्तु तो भी जब स्वयं मेरे घर में से ही मानों यह निकल रही है, तो फिर चैन कैसे आ सकता है। तबियत में कुछ ऐसी तड़फड़ाहट है, जैसे मानों प्राण खिंच कर निकलते जा रहे हैं। स्पन्दन रहित मैदान

में मानों एक छटपटाता सा प्राण की तरह मेरी दशा है। किन्तु मुझे लगता है कि यह छटपटाहट भी स्पन्दन रहित है, इसलिये कुछ अजीब बात है, मेरे कण-कण में।

आज पूरी रात ऐसा लगा कि स्वप्न में 'आपके' साथ आपके चरणों में रही। देखा, 'आप' बड़े प्रेम से रोटी खा रहे हैं, तथा मैं भी लगन से 'आपको' खिला रही हूँ। इसी से आज दिन भर तबियत मेरी अत्यधिक प्रसन्न रही। ऐसा लगता है कि जैसे सूखे मरूस्थल में रस की एक फुहार गिर गई, कुछ ऐसी दशा हो गई है। किन्तु एक बात का अचरज मुझे है तथा मैं सोच में भी हूँ कि मैं दौड़-दौड़ कर 'आपको' देती जा रही हूँ, और 'आप' खाते जा रहे हैं, किन्तु मुझसे क्या माँग रहे हैं और मैं क्या दे रही हूँ, एवं क्या 'आप' खा रहे हैं,यह पता नहीं। बल्कि, कुछ खाना तो था ही नहीं, तो क्या मेरी उमंग में 'आप' भूखे तो नहीं उठ गये? मैंने आपको आप का माँगा हुआ दिया था या जो कुछ सामने आया, दे दिया। इसका मुझे दुख है कि मुझे तो कुछ होश नहीं रहा, परन्तु आज न जाने क्यों तबियत में मानों भीतर-बाहर, आनन्द भर-भर आता है। ऐसी दशा हो गई है, मानों जैसे सूखे मरूस्थल में रस की एक फुहार बिखर गई है। क्या मेरे 'मालिक' मुझे सौभाग्य प्रदान करके मेरे यहाँ पधारेंगे एवं कुछ जी भरकर खिला सकूँगी? दुनिया की चीज़ तो 'आप' के योग्य चरणों में रखने योग्य कुछ है ही नहीं, बस जो कुछ 'आपने' ही करूणा करके मुझे दिया, वही है, और वही 'आप' के चरणों में 'आपके' हवाले है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-781

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 15.11.62

आशा है, मेरा एक पत्र मिला होगा। आशा है 'आप' स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि हर समय ऐसी Dull हालत रहती है कि कुछ सोचने तक की इच्छा नहीं होती है। इतनी Dull हालत रहती है कि मै बैठी हूँ, चल रही हूँ, या लेटी हूँ, यह ख़्याल कर पाने तक की इच्छा नहीं होती। लगता है कि Y_1 point की सैर पूरी हो चुकी है। अब कुछ ऐसी दशा है कि न जाने क्यों ऐसा लगता है, कि न मेरे पास मन है, न बुद्धि, न चित्त है, और न आत्मा है। बस अहं ही अहं है। न 'मालिक' की याद है, न प्रेम, न तड़प है और यह अहं कुछ इस ढंग का है कि उसमें मैं प्रधान हूँ, या कुछ मेरी शक्ल का ख़्याल है और ऐसा कुछ भी नहीं है, न बुद्धि का आभास है। विशेषता नाम का तो महत्व ही मुझे कुछ नहीं लगता है, किन्तु बस अहं, अहं ही रहता है, उदास एवं निष्क्रिय हालत में।

भाई, इधर तो न जाने क्यों मुझे 'मालिक' से मानों कोई Work मिले, कोई आज्ञा मिले, ऐसी प्यास लगी हुई है और यह चैन से बैठने नहीं देती है। ज़र्रे-ज़र्रे में से, मेरे नस-नस में से मानों Commanding शक्ति निकल रही है। कुछ ऐसा स्वभावत: होता चला जा रहा है

कि मानों सब ओर सब पर Command होने की सी दशा लगती है। ऐसी विरोधी दशा मैं अपने में देखती हूँ कि एक ओर तो Dull हालत यह है कि कुछ सोचने या समझने की भी इच्छा नहीं होती है, परन्तु दूसरी ओर ज़र्रे-ज़र्रे में मानों Commanding सी शक्ति है और वह रोशनी 'आप' की ओर देखती हुई मानों कुछ आज्ञा चाहती रहती है। यह कह लीजिये कि यह एक नई प्रकार के अहं की रोशनी निकलती है, परन्तु इस अहं में न मैं हूँ, न मेरा कुछ है, न कोई शक्ल है। यह क्या है, यह तो आप ही जानें।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-782

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 5.12.62

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें जो दुआ करने के लिये बताया है, उसे करती रहना। अभी बहुत थोड़ा असर हुआ है। मेरा ख्याल है कि मैंने तुम्हें बरेली स्टेशन पर अगले Point पर जो X_1 हो या Y_1 यह तुम्हें मालूम होगा, घसीट दिया था। ज़रा इसे जाँच कर लिखना। कहीं मैं भूल तो नहीं गया हूँ।

तुम्हारे भाई बहिनों को दुआ और अम्मा व चौबेजी को प्रणाम। इतिः-

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-783

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 14.12.62

कृपा-पत्र 'आपका' मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'आप' ने जो काम बताया है, वह मैं अवश्य करती रहूँगी। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

तारीख 16 या 17 नवम्बर को आप ने कृपा करके मुझे Y_1 point cross करवा कर Z_1 point पर डाल दिया है। अभी मुझे सैर शुरू हुई नहीं मालूम पड़ती है। आज से कछ साफ़ तो मालूम पड़ती है। कल रात ऐसा सपना देखा कि मानों मुझे चैन नहीं है और मैं रेल पर बैठी बहुत तेज़ उड़ी जा रही हूँ। केसर भी मेरे पीछे आने को उत्सुक चल रही है। कुछ अब यह एक बात देख रही हूँ कि वैसे तो मुझमें न सूक्ष्म शरीर है, न स्थूल शरीर है, न कारण शरीर है, न आत्मा है, कुछ एहसास में नहीं आता है परन्तु यदि कहती हूँ कि मेरा सूक्ष्म, स्थूल या कारण शरीर या आत्मा तो लगता है एक मात्र 'आप' हैं। वह भी न वह माधुरी प्रिय छवि या शक्ल है, न कुछ। बस लगता है कि मानों 'आप' पिघल कर मेरे कुल में घुल गये हैं और ऐसे एहसास से यदि मैं ख़ुश होने लगती हूँ,तो लगता है कि ख़ुशी मानों कोई अलग चीज़ है, जो मुझ में नहीं है, अलहदा

चीज़ है। बस केवल एक ऐसी आंतरिक परेशानी या तड़प के अतिरिक्त मुझे अब कुछ अपने में एहसास नहीं होता है जिसके बारे में मुझे स्वयं कुछ पता नहीं कि यह कैसी है।

"नसीहत करना बहुत अच्छी चीज़ है,बशर्ते कि वह खुद को दी जावे", इस पर लेख लिखना है।

'अम्मा' आप को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहाना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-784

प्रिय बेटी कस्तूरी शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! 7.3.63

तुम्हारी सैर अब A2 पर है और सैर शुरू हो गई है। अनुभव तुम्हारा ठीक ही है।

तुम्हारे माता-पिता को प्रणाम। भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-785

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली
सादर प्रणाम! 14.3.63

कृपा-पत्र आप का मिला। पढ़कर समाचार मालूम हुए। कृपया ऐसी ही कृपा इस गरीब बिटिया पर बनाये रखियेगा। अब 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, कुछ ऐसी दशा है कि न जाने क्या बात है कि इतना सब काम करने पर भी कुछ ऐसा लगता है कि खाली-खाली फिरा करती हूँ और कुछ तबियत में ऐसा सूनापन घर कर गया है कि हर समय उजड़ी सी, उजड़ी सी, हैरान सी तबियत रहती है। न जाने क्यों 'मालिक' मेरे ख़्यालों में खोया है। अब तक कभी ऐसी दशा मालूम पड़ती थी, परन्तु अब मुझे एक पल को ऐसी भी ख़बर नहीं मिलती है।

तारीख 14.2.63 को 'आपने' कृपा करके मुझे Z_1 point cross करवा कर A_2 point पर डाल दिया। कुछ ऐसा लगता है कि श्रद्धा, विश्वास, सब कुछ एक स्वत: स्थिर स्थिति में लय हो गया है या यों कहिये कि कुल आध्यात्मिकता का केवल यही परिणाम हो गया है।

अब तो लगता है कि A2 point की सैर हो रही है। पता नहीं कुछ ऐसी दशा है कि मानों अंतर-बाहर, मेरा कण-कण, सब उदासी एवं सूनेपन का रूप हो गया है। चाहे कितनी चहल-पहल में बैठी होऊँ, किन्तु यही लगता है कि सब ओर उदास, उजाड़, सूनापन ही, अन्धेरा ही व्याप्त है। तबियत मानों जाने कहाँ डूबी हुई है कि सब ओर उजाड़ सूनापन ही मानों मेरा होश है।

लगता है कि मेरी A2 point की सैर आधी हो चुकी है। न जाने कैसी सैर है कि जैसे मरे हुए स्थान की दशा है। जीवन का तो एहसास मुझे अन्दर बाहर कहीं लगता ही नहीं है, किन्तु इसके बीच 'मालिक' ने कृपा ऐसी दी है, कि जिससे ऐसी सैर में भी आगे बढ़ते चले जाने की प्रबल इच्छा बेचैन किये है। मुझे तो हर जगह, हर स्थान की सैर नहीं, बल्कि अपने 'मालिक' से कुछ और मिल जाने की मानों आभास लगता रहता है। वैसे मैं नहीं जानती कि मेरा 'मालिक' कैसा है? मेरे श्री बाबूजी मुझे कब और कैसे मिलेंगे। अजीब मिलन और बिछोह, दोनों की एक मिली-जुली सी दशा रहती है। अनुभव अब अनुभव की तरह से नहीं, बल्कि एक मानी हुई बात की तरह से होता है। भूल-भूल जाता है। ऐसा सादा अनुभव है कि अनुभव कह लूँ तो तैसा, न कहूँ तो तैसा ही लगता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-786

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 25.4.63

मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। अम्मा की तबियत अब ठीक है। मेरी तन्दुरूस्ती भी अब ठीक हो गई है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

इधर पाँच-छ: दिनों से कुछ ऐसी दशा है कि दिन भर मानों नींद सी लगी रहती है। यद्यपि सोने पर दशा सोने की नहीं होती है। ऐसा लगता है कि नींद है, किन्तु सुस्ती या लेटने की इच्छा व आवश्यकता ज़रा भी नहीं होती है। कुछ नशा-नशा सा ज़रा भी नहीं, वरन् दुनिया में कोई रौनक नहीं, आकर्षण नहीं। अक्सर यह भी एक वहम् सी दशा लगती है कि मरी हुई दशा में जी रही हूँ। सच तो यह है कि न जाने क्यों ज़िन्दगी नाम की चीज़ मुझे कहीं भी, अब अनुभव में ही नहीं आती है। सब सूना-सूना, खाली-खाली सा नज़र आता है। गाने-बजाने में मुझे अच्छा लगता था, किन्तु अब न कुछ गाने-बजाने की रूचि ही नहीं और कुछ सुनाई पड़ता ही नहीं या सुनते हुए भी भूल जाती है। कुछ ऐसा लगता है कि मानों कुल एक सन्नाटेमय गोले के अन्दर में हूँ, चलती चली जा रही हूँ, मुझे चैन नहीं है। बिल्कुल सुन्न हालत सी रहती है कि जहाँ ज़िन्दगी नहीं, रौनक़ नहीं और न सैर। न जाने क्या और कहाँ की सैर हो रही है कि जहाँ ज़िन्दगी नहीं, रौनक नहीं और न सैर में ही ज़िन्दगी है। किन्तु फिर भी 'मालिक' की देन कुछ भी बुरी नहीं लगती है। सब कुछ हृदय से लगा रहता है। एक कुछ ऐसा लगता है कि मानों मैं एक circle के अन्दर ही रहती हूँ। ताज़गी रहती है, किन्तु नींद सी लगी रहती है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-787

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली

सादर प्रणाम! — 9.5.63

आशा है, मेरा पत्र पहुँचा होगा। बहुत दिनों से आप की तबियत का समाचार नहीं मिला- इस कारण कुछ फिक्र है। अम्मा अब अच्छी हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी आत्मिक दशा तो 'मालिक' की कृपा से 'उनके' कदमों की ओर ही अग्रसर होती हुई मालूम पड़ती है। इधर अब न जाने क्यों बिल्कुल ख़ाली सी दशा रहती है। मानों एक ऐसा फ़कीर कि जिसके पास कुछ अपना नहीं है। शरीर के रहते हुए भी शरीर अपना नहीं मालूम पड़ता है। इसे छूती हूँ, खाती हूँ, कपड़े पहनती हूँ, कुछ भी लेकिन तब भी अपना कुछ छूती हूँ, ऐसा आभास एक क्षण को भी नहीं लगता। पहले खोई सी दशा रहती थी, किन्तु अब तो हर समय पूरे होश की हालत रहती है। 'आप' मेरे प्राण धन हैं, किन्तु, तन से, मन से, विचार में भी देखती हूँ तो मानों मैं रट लगाये हूँ, परन्तु मेरापन 'आप' में भी नहीं लगता है। किन्तु 'आप' मेरे जीवन हैं, यही दशा समझ लीजिये। तन के, मन के, एवं अंतर-बाहर के कण कण में कभी dirty न हो सकने वाली स्थिरता बसी हुई है, परन्तु मेरा मन अब बेचैन सा अधिक रहने लगा है, जिसका कहीं कुछ भी पता नहीं लग पाता है। लगता है A2 point की सैर समाप्ति पर है और आँखें आगे के नज़ारे देखना चाहती है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-788

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली

सादर प्रणाम! — 24.7.63

'आप' का समाचार नारायण दद्दा से मालूम हुआ। यहाँ भी सभी लोग कुशल पूर्वक हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने कुछ ऐसी दशा है कि जब से आदरणीय मास्टर साहब के पत्र से 'आप' की तबियत खराब पढ़ी है, प्रार्थना कर रही हूँ और 'मालिक' की शक्ति के साथ अपने शरीर पर कुछ लेने का ख़्याल करती हूँ, तो न जाने 'वे' और ये दोनों शरीर एक ही लगने लगते हैं। यद्यपि 'आप' परम पूज्य एवं प्रिय मेरे जीवन-सर्वस्व हैं, किन्तु मैं कुछ भी सेवा 'आपकी' नहीं कर पाती हूँ।

भाई, मैं तो अपनी आत्मिक-दशा के बारे में अनजान हूँ। कुछ समझती हुई भी नहीं समझ पाती हूँ। लिखना चाह कर भी कुछ नहीं लिख पाती हूँ। मुझे न जाने क्यों ऐसा लगता है

कि मैं धीरे-धीरे चल पाती हूँ और मेरा जी बहुत छटपटाता है। A2 Point की सैर समाप्त हो चुकी है। इससे जी और भी छटपटाता है। हाल तो बेहाल है, फिर क्या लिखूँ? अनुभव केवल मानी हुई सी बात की भाँति लगता है। फिर क्या समझूँ? यह तो केवल 'आप' ही समझ सकते हैं।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-789

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 3.9.63

मेरा एक पत्र 'आपको' मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

तारीख 15.8.63 को 'आपने' कृपा करके मुझे B2 point पर कर दिया है। अब तो मेरी कुछ ऐसी दशा है कि अंतरतम् तक मानों, सूक्ष्म से सूक्ष्म तक में कहीं कोई गाँठ, कहीं माया का लेश मात्र नाम नहीं रह गया है। सब भीतर से भीतर जहाँ तक विचार एवं अनुभव तक की पहुँच हो सकती है, एवं जो कुछ अनुभव गम्य नहीं है मेरे, वहाँ तक कोई लगाव कहीं कोई सूक्ष्म तक कुछ नहीं रह गया है। सब एक समान हो गया है। हाँ, जहाँ कभी कोई प्राण-शक्ति का अनुमान करूँ, तो भी वह मानों एक 'आप' की श्वाँस मेरी श्वाँस होकर बह रही है, ऐसा ही मालूम होता है। मेरे अन्दर न जाने क्या है। अपने अन्दर एक दृढ़ता जैसी उत्पन्न हो गई है। यद्यपि मानों वह सोई सी रहती है या मैं ही उसकी ओर से असावधान रहती हूँ, क्योंकि उसका आभास केवल तभी बहुत पाती हूँ, जबकि 'आप' का बताया छोटे से छोटा काम करने को उठाती हूँ। मेरे सामने अब चलने को मैदान सामने पड़ा है। यद्यपि न जाने क्यों लगता है कि उसके भी ज़र्रे-ज़र्रे से मैं परिचित हूँ।

न जाने इधर कुछ ऐसी दशा है कि मानों कुछ अंतर के अंतर में ही समाता चला जा रहा है। अन्दर का मानों कुछ अन्दर भिदता ही जा रहा है। इधर परसों बिजली का थोड़ा current मुझे लगा तो मानों एकदम मुझे कुछ थोड़ा सा एक क्षण को होश आया, किन्तु उस होश में चेतना होते हुए भी मानों वह बेहोश था। वह क्षणिक होश मुझे ही होता हुआ भी मानों मेरा न था। वैसे मैं तो पूजा के सर्व गुणों से हीन हूँ। एक बात मुझे लगी कि उस क्षणिक होश में जागकर मुझे न मालूम कुछ बड़ा अच्छा लगा था, किन्तु जब तक मैं उस होश को सम्भालूँ, तब तक मेरी हालत फिर ज्यों की त्यों हो गई थी। वैसे तो अब ऐसी हालत रहती है कि जैसे कोई आध्यात्मिकता से अछूता मनुष्य हो। यही मेरी एक सादी सी हालत रहती है न जाने क्यों इधर मुझे झुँझलाहट एकदम से और जल्दी आ जाती है। यद्यपि मैं इसमें सचेत रहने का प्रयत्न करती हूँ, किन्तु बिना 'मालिक' की कृपा मैं तो अब बिल्कुल मानों हार चुकी हूँ। जब 'आप' के पास पहुँच जाती हूँ, तब कुछ ऐसा समझ में आ जाता है कि मानों

आध्यात्मिकता से मेरा कुछ सम्बन्ध है, नहीं तो फिर कुछ नहीं। यद्यपि मेरा अपनी रटना एवं ध्यान यही रहता है कि 'मालिक' के चरणों में ही हूँ और आध्यात्मिकता से सम्बन्ध क्या, बस यों कह लीजिये कि उतने समय मुझमें कोई समझ एवं Reading Power खुल जाती है। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-790

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली

सादर प्रणाम! — 24.9.63

'आप' का कृपा पत्र पूज्य ताऊजी के लिये आया। समाचार मालूम हुए। 'आप' स्वस्थ हैं, जानकर खुशी हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने दशा तो मानों एक दबी हुई सुरंग की तरह खुलती जा रही है। अंदर ही अंदर मानों कुछ खोता चला जाता है, नहीं, बल्कि भीतर ही भीतर भिदता जाता है। यद्यपि अन्दर भी Material नहीं, बल्कि सूक्ष्म से भी सूक्ष्म सब कुछ समाता, गलता चला जा रहा है। क्या दशा है, यह 'मालिक' ही जानें। एक नई स्थिति है, जो अनुभव से परे है, बस इतना ही पता पाती हूँ। तत्त्वों से परे, सूक्ष्म से भी परे है। अन्दाज में न घुस पाने वाली दशा है, जो अव्यक्त है।

एक दिन कुछ ऐसा स्वप्न देखा कि उसकी याद में अंतर मानों हल्केपन का कुछ नमूना हो गया है। देखा कि बहुत समय 'आपके' साथ रही, फिर देखा कहीं बिल्कुल सुनसान, वीरान में जहाँ पर हवा की भी गुजर नहीं है, मैं मर रही हूं। मैं मर गई, किन्तु लाश कहीं नहीं रह गई। मर रही थी, किन्तु यह शरीर नहीं था। एक अनदेखी, अनजान कस्तूरी मर गई। मैं जितना कह सकी हूँ, कहा है, किन्तु मैं पूरी दशा नहीं लिख पाती।

मेरी तो कुछ ऐसी दशा है कि हल्केपन का भी मुझे अब पता नहीं लगता है वह भी मर गया। अब न जाने क्या हाल है कि पहले से मैं अधिक बेचैन रहती हूँ। मन बड़ा उचाट रहता है। कहीं भी मन नहीं लगता है। सच तो यह है कि मेरा मन, मेरी आत्मा सब मर गई है। स्थिर दशा है, तबियत बेचैन है। मैं याद 'आपकी' अब कैसे रखूँ? ध्यान कैसे रखूँ? मेरे कुछ वश का नहीं है। अब सारे काम सब करती हूँ, सब से हँसती-बोलती हूँ, बुलावे में जाती हूँ किन्तु किसी में रुचि नहीं है, न अरुचि है, इसलिए चाहे कितने उत्सव में जाऊँ, मन उचाट रहता है। तबियत शून्यता से भी शून्य रहती है। कुल दशा मानों स्वयं लाश बन गई है।भीतर-बाहर, आवरण रहित, नंगी हो गई है। बस शून्य से भी शून्य, उदासी से भी उदास हालत रहती है। अब तो न जीवित रहने की ख़ुशी के आभास की ख़ुशी है, न मरने का ही ग़म है। कुछ ऐसी हालत है मेरे 'मालिक' कि कहीं जी नहीं लगता है। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-791

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली

सादर प्रणाम! 22.10.63

आशा है, मेरा एकपत्र पहुँचा होगा। मेरी तबियत अब ठीक है, चिन्ता करने की कोई बात नहीं है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

'आपने' कृपा कर मुझे Point C2 पर कर दिया है। 'आप' ने यह भी कहा है कि आगे चलकर उन्नति के साथ ही Power बढ़ जाती है। उसे साम्यावस्था पर लाने पर अभ्यासी को सुकून मिलता है। 'आप' ने यह भी कहा है कि स्वप्न बहुत अच्छा था।

मेरी तो अब कुछ ऐसी दशा है कि लगता है कि दशा बिल्कुल थहरा कर एक Level पर आ गई है। इससे बहुत अच्छी, बहुत शान्तिमय दशा हो गई है। कुछ ऐसी दशा है कि सोई हालत रहती है। 'आप' ने कहा है कि इस हालत में से सोयापन निकाल दें, तो फिर असल ही असल हालत शेष रह जाती है।

ऐसी हालत है, जैसे अपने घर में पहुँच कर थका आदमी आराम से निश्चिन्त सो जाता है। किन्तु इतने चारों ओर भीतर-बाहर, शान्त, अचल सुकून का साम्राज्य व्याप्त होने पर भी अंतर के किसी कोने में एक कसक, एक पीर उठती है, जो मन की पीर मन में ही उठकर समा जाती है। कुछ ऐसी दशा रहती है कि जैसे भारी बर्तन में दूध उबरा कर थहरा जाता है, बाहर नहीं निकल पाता है, वैसी ही थहराई दशा है।

मेरी तो कुछ ऐसी दशा है कि आत्म-तृप्ति दशा में लीन फिरती हूँ और दूसरी ओर मेरा कण-कण मानों स्वयं तड़प बन उठा है। चैन नहीं, हर समय मेरा हृदय, कण-कण से 'बाबूजी' 'बाबूजी' की पुकार आती है, किन्तु मैं सुन तक नहीं पाती हूँ। जब आत्म-विस्मृत दशा कुछ होश में आती है, तो कुछ ऐसी दशा है, मानों जैसे एक डूबता, उतराता मनुष्य आगे बहता चलता चला जाता है। जब डूबने की दशा रहती है, तब आत्म-विस्मृत दशा रहती है, और जब उतराती हूँ तो तड़प तड़पाने लगती है और आत्म-विस्मृत दशा का बोध आता है, नहीं तो एक समान दशा रहती है। मेरे अंतर-बाहर में मानों अब कोई अवयव का मुझे ज्ञान नहीं आता। बस मानों कुल में आत्म विस्मृत अवस्था व्याप्त हो गई है। साम्यवस्था का समुद्र ही मेरा बिछौना एवं सहज-शून्य दशा ही मेरा ओढ़ना बन गई है।

सबेरे कुछ ऐसा स्वप्न देखा, किन्तु उसका मुझे ज्ञान भी था और स्वप्न भी था कि मुझे बेहद प्यास लगी हुई है। मैं कह रही हूँ मैं प्यासी हूँ- मुझे कोई पानी पिला दे, तो मानों कोई अदृश्य में मुझे पानी पीने को देता जा रहा है और मैं पीती जाती हूं, परन्तु इतना आश्चर्य है कि प्यास नहीं बुझती है पानी पर पानी इतना स्वादिष्ट पीती जा रही हूँ। अंत में पानी पीते ही पीते नींद खुल गई और प्यासी रही, किन्तु उठने पर बड़ी पवित्र सी कुछ दशा थी, जिसे लिख नहीं सकती। अब यह क्या है, यह 'आप' ही जानें।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-792

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी | बरेली
सादर प्रणाम! | 8.11.63

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। मेरी तबियत इधर फिर कुछ गड़बड़ हो गई थी, किन्तु जल्द ही ठीक हो जाऊँगी। 'आप' चिन्ता न करें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्या बात है कि दशा अब अनुभव में स्वयं ही जो आ जावे, सो आ जावे, वरना मुझे अब Concentration ही नहीं होता, किन्तु चाहे कुछ न हो सके तो भी जो कुछ दशा है, उसमें न तो Balance है, न कहीं कोई Disturbance ऐसे ही मैदान में मैं तैर रही हूँ। कुछ ऐसी दशा है कि जहाँ न एक है, न दुई कोई एहसास नहीं है। कुल ही कुल है, उसका भला एहसास ही क्या। न समुद्र है, न मैदान, किन्तु तैर रही हूँ। न तो मुझमें Meditation है, न Concentration ही कर सकती हूँ। न शान्ति है, न अशान्ति, कोई विशेष कुछ बात नहीं है, बिल्कुल ही साधारण, मानवीय दशा है किन्तु मेरा अन्तर तक ऐसा आईना बन गया है, जिसमें कोई शक्ल नहीं है और जो मुझे प्रिय है। अंतर तो मेरा है ही नहीं। कुछ दशा है ऐसी कि जिसकी वज़ह से सब दशाओं का अनुभव है। वही मेरे अंतर-बाहर बनी हुई है, क्योंकि अंतर-बाहर कहने में अब अपनत्व नहीं है, वरन् एक सूखी दशा, जो अब न भींगती है, न सूखती है, वह मेरा रूखा रूप हो गई है।

अब तो मेरे 'मालिक' मेरे पास न आँसू है, न हँसी है। अब अपने प्रियतम पर लुटाने को कुछ नहीं है। फिर भी अन्दर ही अन्दर कुछ दशा लुटती जा रही है। अब तो 'मालिक' ही कुछ समझाये, तो ही मेरी समझ जाग सकती है, वरना मेरे वश में कुछ नहीं है। अबकी जबसे आपके चरणों में गई और आपने पूजा करवाई, तबसे दशा अनुपम होती जाती है। यद्यपि मुझे क्या अच्छा लगता है, यह मैं नहीं जानती, किन्तु मेरा मन उसे समेटने को चाहता है और लगता है कि कुल मैदान सिमट कर मेरे दिल में आ गया है और अन्दर ही अन्दर सब कुछ निगलता जा रहा है। कुछ ऐसी दशा है कि जिस ईश्वर का सब अंश हैं, वह कुल मेरे अन्दर समा चुका है। शायद यही कारण है कि जैसा पहले मैं लिखा करती थी कि मुझे किसी का स्वरूप नहीं दिखलाई पड़ता, बस कुछ परछाईं सी लगती है, परन्तु अब कुल एक असलियत ही रह गई है। मेरी तो यह दशा है कि जिसकी वज़ह से सब दिखाई देता है, सब अनुभव में आता है, वह नज़र ही नहीं और वह वज़ह ही नहीं रही, जिससे कुछ अनुभव हो। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-793

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी | बरेली
सादर प्रणाम! | 3.12.63

यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं। आशा है वहां 'आप' भी कुशल पूर्वक होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी इधर कुछ एक अजीब सी दशा चल रही है कि रात को जब भी सो जाती हूँ तो लगता है

कि सारा शरीर मानों सुन्न पड़ा है। आँख खुलते ही ऐसा लगता है फिर जाग जाने के 5-7 मिनट बाद लगता है कि मानों अब उसमें जीवन या आत्मा वापिस हुई है। यह पता नहीं, अब क्या बातें हो गई हैं। मुझे कुछ ऐसा लगता है कि C_2 point की सैर पूरी हो गई है और तबियत बेचैन है, चलने के लिये। इधर मन बेचैन है, दशा बेचैन है और अंतर-बाहर, मानों सब सुन्न पड़ गया है और शरीर का कण-कण शक्तिमान हो उठा लगता है, किन्तु मानों कहीं कोई स्पन्दन नहीं, स्फुरन नहीं। मौत की भी मौत हो गई है। वही सन्नाटा छाया है, किन्तु अंतर-बाहर का कण-कण मानों एक दिव्य शक्ति से सजीव हो गया है। अब तो मौत में भी जीवन और जीवन में भी मौत समाई हुई है।

मेरी तो अब कुछ यह दशा हो गई है कि मेरी ममता या स्नेह सम्पूर्ण विश्व-व्यापी हो गया है और मैं इसे रोक नहीं पाती हूँ। मेरी जुबान बन्द है। मन, बुद्धि, विचार सभी कुछ मानों समाप्त हो गया है। अक्सर इसी कारण अब कुछ लेख लिखने के लिये पहले तो विचार आना ही नामुमकिन हो जाता है, फिर लगता है कि जब कुछ शुरू करती हूँ, तब मानों विचार तो तब भी नहीं उठते बल्कि कहीं से उनकी Pouring होती है, जिन्हें मैं नहीं जानती। इधर न जाने क्यों मुझे गहन-उदासी की शिकायत अक्सर रहती ही है। वह उदासी है या कोई गहन चोट है जिससे अंतर-बाहर बिल्कुल दबा रहता है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-794

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली
सादर प्रणाम! 1.1.64

आशा है, मेरा और केसर का पत्र 'आपको' मिला होगा। अम्मा की तबियत इधर कुछ गड़बड़ चल रही है किन्तु चिन्ता न करें। वह जल्द ही ठीक हो जायेंगी। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने कुछ ऐसी दशा है कि अक्सर मन अत्यधिक उचाट हो जाता है। लगता है कि मानों मेरा स्थान यहाँ नहीं है, कहीं और है, किन्तु कहाँ है? यह पता नहीं। ऐसा होता कुछ Seconds के लिए ही है, परन्तु उसके बाद लगता है कि मानों वह कोई दशा थी, जो कुछ Seconds के लिए आई थी। इधर कुछ दिन हुए, अचानक लगा कि पहले तो एक दो Second आँखों के आगे कि मानों कोटि-कोटि सूर्य से भी तेज़ सूर्य के समान तेज़ अनुभव हुआ, फिर न जाने कैसे मानों वह तेज़ मैं निगल गई और सब मानों हज़्म होकर दस मिनट बाद ही मैं ज्यों की त्यों रह गई। वैसे तो मेरे अन्दर न अब कोई तेज़ है, न रोशनी है। यदि अंधेरा नहीं है, तो मुझे उजेले का भी एहसास नहीं है। लगता है कि मानों दशा एक बिल्कुल ही Silent Moderation में तैरती या पीती चली जा रही है। घोर Unlimited उदासी ही उसका Result पता लगता जाता है। ऐसी स्थिर एवं Silent दशा रहती है कि मानों यहाँ सुख-दुख, अर्थात् ऐसी दुई बातें कभी जन्मी ही नहीं। दशा

तो चल रही है, किन्तु उसमें कहीं भी कुछ रोचक नहीं है। बस 'मालिक' की कृपा ही उसे चला रही है। लगता है कि point C_2 की सैर पूरी हो चुकी है। मेरे अब न कुछ बाहुबल रह गया है, न तपोबल है न कोई और बल पास है। बस मेरे तो एकमात्र प्रियतम मेरे 'आप' ही हैं।

मेरी तो कुछ ऐसी दशा है कि पता नहीं चलता है कि बीच-बीच में गड़प अवस्था जो हो जाती है, वह क्या है, मैं नहीं कह सकती किन्तु उसमें भी 'मालिक' मुझे कुछ बख़्शता है। मैं इस दशा को किससे पूछूँ? तमाम फैली नज़र के सामने कोई कभी नहीं गुज़रता, जिससे मैं पूछूँ। मैं उदासी में गड़प हुई, बेचैनी में पनपी, वीरान मैदान में न अब कुछ सोच पाती हूँ, न कुछ। मेरे अन्दर अब न कोई Craving है, किसी की खोज नहीं है, किसी से मिलने की तड़प नहीं है। बस मैं गम्भीर मृदुता का स्वरूप हूँ। उदासी की गहराई ही मानों मेरा अन्तर है और वीरान ही मेरा बाहर पड़ा है। मैं बेचैन रहती हूँ, तबियत में उचाटपन घर कर गया है। मैं बार-बार अपनी उन्नति की Craving हृदय में लाती हूँ, परन्तु अब हृदय ऐसा चिकना घड़ा हो गया है कि उस पर टिकता ही नहीं। सब विचार और सारी दृढ़ता, सारे भाव, सभी फिसल जाते हैं, फिर मैं क्या करूँ? इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-795

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली

सादर प्रणाम! — 7.1.64

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहां सब कुशल है, और आशा है 'आप' भी स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मैं गड़प होती हूँ तो मानों उदासी में और उठती हूँ तो उचाटपन में और निगाहों के सामने वीरान मैदान पड़ा है। मैं चैन में हूँ नहीं और बेचैन नहीं हूँ। एक स्थिर एवं साम्य कसक है, कराहना है।

मेरी तो कुछ ऐसी दशा है, जैसे चिकना घड़ा- उस पर ध्यान, स्मरण, प्रेम, विनय, कुछ भी उपाय करूँ, मानों हृदय पर कुछ टिकता नहीं। ध्यान करूँ, तो वह भी मानों गड़प हो जाता है। बार-बार ऐसा लगता है कि मैं गड़प सी हो जाती हूँ। यद्यपि ध्यान-व्यान में नहीं, वरन् न जाने कहाँ वीरानापन ही मेरा हृदय हो गया है। हालत क्या है, मानों वीरान मैदान पड़ा है। कहीं-कहीं, कभी-कभी उदासी का मानों सम्पुट आ जाता है हालत में, नहीं तो नितान्त वीरान एवं चिकना घड़ा ही मानों मेरी हालत है। गड़प होती हूँ तो ऐसी हालत में मुझे पता नहीं कहाँ, क्योंकि मुझे गड़प हालत की थाह नहीं मिल पाती, न निकलने पर कुछ उसकी याद रहती है। उससे उछलते ही उसे भूल जाती हूँ, बस तब उचाट एवं उदास-उदास हालत में फिर आ जाती हूँ। दिल के किसी कोने में मसोस उठती रहती है, किन्तु न तो उस स्थान का पता है और न कारण,तो फिर इसका क्या इलाज। समर्पण एवं लय की जो सहज अवस्था मेरे में व्याप्त रहती थी उसका अब मुझे कहीं पता नहीं मिलता, उसमें मुझे आनन्द मिलता था किन्तु आनन्द तो नहीं, किन्तु कुछ चिपटन मुझे उस मसोसना में मिलती है, जो मुझे पूर्णतय: गड़प हो जाने से या पूर्णतय: सदा के लिये सो जाने से, अविरल विश्राम पा जाने में गड़बड़ करती है। मैं उखड़ी

रहूँ, मानों इसीलिये यह मसोसना मुझे कुरेदती है। कुछ बात भी ऐसी हो गई लगती है कि हालत में मानों फूलों से नहीं, वरन् काँटों से चिपकन है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-796

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 29.2.64

नारायण दद्दा से 'आपके' समाचार मिले। 'आप' को पेट का दर्द फिर हो गया है, जानकर चिन्ता हो गई है। आप ठीक से दवा लेते रहें और शीघ्र ही स्वस्थ हो जायें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

सुख-दुख की तो मानों अब मुझे पहिचान ही नहीं रह गई है। कुछ ऐसी दशा है कि प्रश्न मेरे पास एक भी नहीं रह गया और उत्तर ही उत्तर है। चाहे जो कोई कुछ पूछे, मुझे न डर होता है, न अस्थिरता होती है। मन में केवल शक्ति ही शक्ति है। निर्बलता क्या चीज़ है, यह भूल ही गई हूँ। किन्तु कोमल भावनायें एवं प्यार सबके लिये बह रहा है। दिल का दरिया लुटा देने का जज़्बा ऊपर आता है, किन्तु लुटा देने को कुछ नहीं है। बस, 'मालिक' की चीज़ एवं देन पर ही अपना दावा लगता है। ये सब क्या अजीब बातें हैं, मैं कुछ नहीं जानती। 'आप' मुझे कुछ नहीं समझाते। कुछ ऐसा हो गया है कि मानों स्वामी और सेवक का भाव लय हो गये। अब मैं क्या करूँ, नहीं जानती। 'मालिक' की मनहारिणी छवि ने नैनों की ज्योति को छीन लिया है। प्रियतम की मधुर स्वर-लहरी ने कानों की शक्ति को हर लिया है। स्पर्श का मुझे अनुभव ही नहीं रह गया है। मन की, प्राणों के दीपक की बाती ही मानों कोई चुरा ले गया है। बस, बासी घर-आँगन, अँधेरे में सूनी, एक उदास-उदास मैं सोई हूँ या खोई बैठी हूँ अथवा यह भी गलत है। इसका फैसला तो मालिक पर ही है। किन्तु 'उनका' निर्णय कुछ भी हो, मैं 'उनकी' होऊँ या नहीं, किन्तु इतनी पुकार मेरे रोम-रोम से आती है, ऐसी तृप्ति मेरे मन में है, मेरी आत्मा की हर Echo से यही ध्वनि आती है, ऐसी दृढ़ता है कि 'आप' मेरे हैं एवं 'आप' पर मेरा पूर्ण अधिकार है, किन्तु मैं हूँ कहाँ? 'आपके' पावन चरणों में मैं 'आप' के पावन हस्त-कमलों के बीच, 'आप' के हृदय में समा गई, इसका भी निर्णय 'मालिक' पर है। मेरे तो रोम-रोम में, अंग-अंग में दिव्य-शक्ति का संचार है। एक एक रोम में कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड की शक्ति है, परन्तु मुझे मेरा ही कुछ पता नहीं। फिर मुझे अपार आनन्द है, या शक्ति या कुछ, मैं कैसे कह सकती हूँ। मैं तो सूने घर-आँगन में उदास महाशून्य हुई मौज में बैठी हुँ। सब देखते हुए भी न मुझे अब अचम्भा है, न अलौकिकता है, न दिव्यता। मैं तो कस्तूरी हूँ और अपने श्री बाबूजी को चाहती हूँ। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-797

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली
सादर प्रणाम! 9.4.64

बहुत दिनों से 'आपका' कोई समाचार नहीं मिला। चिन्ता लगी है। कृपया अपना समाचार जल्दी दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, न जाने अब तो कुछ ऐसी दशा है कि जैसा पहले मैंने लिखा था कि रोम-रोम में, अंग-अंग में, मानों कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड की शक्ति लगती है, किन्तु अब मानों सब ओर, अंतर-बाहर में, सब कुछ थहरा गया है। अक्सर दिल के दरिया में केवल कुछ सबको लुटा देने का जज़्बा उठता है, किन्तु उसकी भी डोर कोई और ही थामे हुए है। कल डाक्टर के यहाँ जाते में एक मुर्दा मिला, तो मैं बिल्कुल मुर्दा ही लगने लगी। इतनी खाली और निर्दोष दशा रहती है कि मैं उसके लिये यदि कुछ कहती हूँ, तो मानों उसे सब गन्दा कर देती हूँ, इसीलिये मैं ज्यों की त्यों चुप बैठी हूँ। मेरे तो मन की, प्राणों के दीपक की बाती ही मानों कोई चुरा ले गया है। कोई इच्छा कभी मन में उठती ही नहीं। बिना अर्थ का जीवन लिये निरूद्देश्य सी फिरा करती हूँ। अन्तर-बाहर सब ऐसा सूना मरूस्थल हो गया है कि जहाँ न कभी कुछ था, न है और न होगा। सब एक समान गति सी चली जाती है। लगता है कि जिसकी वजह से सब आध्यात्मिक गतियाँ, अनुभव गम्य होती थीं, वही वजह अपने वास्तविक रूप में अब एक समान गति सी मानों अनन्त काल से चलती चली आ रही है और इसका कहीं अन्त नहीं है।

न जाने कुछ ऐसी दशा है कि शरीर की अपार तकलीफ़ होने पर भी जहाँ अन्दर दृष्टि जाती है, तो मानों वहाँ पूर्ण शान्ति का साम्राज्य फैला हुआ है। उसमें समा जाती हूँ। ऐसी दशा है मानों आध्यात्मिक-यज्ञ की पूर्णाहुति हो चुकी है। लगता है, शान्ति की सीमा की समाप्ति हो गई है। अब उसे शान्ति कहना भी हालत की पूर्णता कही नहीं जा सकती है। स्थिरता की हालत की भी सीमा समाप्त हो गई है। इसलिये अब दशा स्थिर कहना भी दशा को पूरी तौर पर कहना नहीं होता है। अब न कहीं आदि है, न सीमा है, न अंत। बस एक समान गति बराबर चलती जा रही है। अब दशा में समा जाना कहना भी ठीक नहीं है, वरन् अब निकलना,समाना कभी कुछ एहसास में नहीं आता। बस, अब ऐसी हालत हो गई है कि लगता है, अब वह जैसी भी लीन दशा को प्राप्त हो चुकी है, वहाँ से फिर कभी किसी का उत्थान नहीं हो सकता है। अब तो न मन, बुद्धि न विचारों का ही कोई वृत्त है। सब कुछ ऐसा लीन हो चुका लगता है, जहाँ कभी उत्थान की आशा ही नहीं है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं और केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-798

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली

सादर प्रणाम! 12.5.64

आशा है, मेरा एकपत्र पहुँचा होगा। आप का स्वास्थ्य अब ठीक है, जानकर खुशी हुई। ईश्वर करे, 'आप' सदा स्वस्थ रहें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि न जाने या तो मन अत्यधिक शान्त हो गया है या किसी कारणवश दशा में वही सतत् गति ही समा गई है, जिसमें न हर्ष है, न विषाद है, न महत्ता है, न छोटापन, न आतुरता है, न संतोष है, न अधीरता है, न धैर्य है, किन्तु जैसी भी है, जो कुछ भी है, गति एक साँ चल रही है और 'मालिक' के चरणों में ही समर्पित है।

परसों से लगता है 'आप' मेरे शरीर को बल दे रहे हैं। इसलिये शरीर में स्फूर्ति है। उदासी की दशा, लगता है कि भीतर ही भीतर समा गई है और तबियत साफ़ है। लगता है कि उदासी की दशा की तह मेरे में पैठ चुकी है। इसलिए अब मैं उदासी में नहीं हूँ, वरन् उदासी की दशा मुझमें समा चुकी है।

कुछ ऐसी दशा है कि अपने होने का केवल एक वहम् मात्र कह लीजिये। यही नहीं, 'आप' भी ख़्याल में एक वहम् के रूप में ही कभी आते हैं। यही हाल आध्यात्मिकता का है। सब असलियत सत्य ही है, या वहम् है, कुछ समझ में नहीं रह गया है। बस एक दशा ही सतत् रूप में चलती जाती है। बस, उससे ऊपर जब सिर उठाती हूँ, तो मानों कुछ आध्यात्मिक हालत है, ऐसा पता लगता है किन्तु तह में बराबर एक समान बहते चलते रहने पर मानों आध्यात्मिकता की छींट भी लगी नहीं है। मुझे मानों आध्यात्मिकता का स्पर्श ही कभी नहीं हुआ है। ईश्वर या अपने प्रियतम 'मालिक' का मानों मुझे कुछ पता ही नहीं है। फिर प्रेम कैसे हो? तड़प मुझे कभी मानों लगी नहीं। अब मुझसे कोई हालत भी नहीं लाई जाती है। जीवधारी और बेजान सब एक साँ ही प्रतीत होते हैं, नहीं, बल्कि मुझे जीवधारी या बेजान कोई अन्दाज़ में ही नहीं आता है।

अब तो कुछ ऐसा हाल है कि सब जीवधारी या बेजान, सब परछाईं की भाँति मुझे अन्दाज़ में होते हुए भी, अब कोई अन्दाज़, अनुभव, एहसास में नहीं ठहरते। पूजा के लिये आँखे बन्द करते ही या 'आप' का ध्यान ज़रा सी देर भी अंदाज़ में रहते ही एक चीख सी अंतर से उठने लगती है। रह-रह कर अंतस् से मानों एक चीख़ सी उठती है। वह चीख़ मुझे कुछ होश देती है, जैसे गाढ़ी नींद से जागने पर आता है। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-799

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली

सादर प्रणाम! 6.8.64

अब मेरी तबियत बिल्कुल ठीक है। स्वास्थ्य लाभ भी धीरे-धीरे हो रहा है। 'आप' मेरी चिन्ता बिल्कुल न करें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है,सो लिख रही हूँ।

मेरी आत्मिक दशा तो इधर तमाम तितर-बितर हो गई है। यद्यपि दृष्टि जब भी अन्दर जाती है, तो लगता है कि मानों अन्तर-बाहर सब Meditation की ही मूर्त्ति बन गया है। नहीं, वरन् यों कहिये कि मानों ध्यान भी ध्यानावस्थित होकर मेरे कुल अन्तर में भिद गया है। तो भी मुझे चैन नहीं है। मेरी उदासी दूर नहीं होती है। न मरने की चाह है, न समझ है, न जीने का लोभ है, न उसकी तमीज़ है, सब 'आप' ही जानें। मैं तो दुनिया में केवल अपने 'श्री बाबूजी' के लिए ही आई हूँ और उनकी ही रहूँगी, बस इतना ही जानती हूँ। 'आपके' कष्ट व आराम ही मुझे अपने लगते हैं। अपने, अपने नहीं लगते हैं।

अब तो यह न जाने क्या बात हो गई है कि तन, मन, बुद्धि, दिमाग़ सभी कुछ पूर्णतय: मानों सुन्न अवस्था में हो गया है। शरीर के कष्ट भी सब धुँधले से हो गये लगते हैं। कोई कस्तूरी, कस्तूरी पुकारे जावे, परन्तु ऐसा हाल है कि मानों हाथ को हाथ नहीं सूझता है, कस्तूरी को कस्तूरी नहीं सूझती है। तन-मन, बाहर-भीतर, कहीं भी, एक कण में भी, उत्साह नहीं, उमंग नहीं है। अनुभव भी सोये से हैं। मैंने नशे की दशा को (प्रेम) जिससे नशा होता है, कभी छुई नहीं, किन्तु मानों मेरे भीतर-बाहर तथा शरीर के कण-कण तक में एक ऐसा अदृश्य नशा सा भिदा रहता है, जिसमें होश न आने पर भी कुछ मानों रह-रह कर फुरफुरी सी आती है। न ठंढ़ है, न गर्मी, परन्तु कभी-कभी स्वत: ही फुरफुरी सी आती है। बेहोश हालत में, नशे की हालत में, यह इतना सा होश या अनुभव मुझे होता है। नहीं तो मानों मेरा तन-मन, भीतर-बाहर सब सुन्न पड़ गया है। उदासी खुद मेरा स्वरूप बनकर पैठ गई है किन्तु अपना स्वरूप मुझे कुछ नज़र नहीं आता है। पूजा में बैठने पर बहुत अच्छा लगता है, परन्तु न जाने मुझे क्या हो गया है कि पूजा में बैठने से तबियत भागती है। कुछ ऐसी दशा है कि मानों कुल उदासी का मैदान का मैदान मैं पी गई हूँ।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-800

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 7.9.64

इधर कई दिनों से मैं आप को पत्र न लिख सकी, कारण जुक़ाम, खाँसी बहुत अधिक होने से अक्सर हरारत शाम तक हो जाती है और थोड़ी कमज़ोरी भी आ गई है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ यह अजीब दशा है कि पूजा में बैठ जाने पर तो तबियत बहुत अच्छी होती है, किन्तु बैठने से तबियत अत्यधिक भागती है। आँख मामूली तौर पर भी बन्द कर लेने पर ऐसा लगता है कि जो सुन्न सी हालत मेरा अंतर बाहर का रूप बनी हुई है, उसमें मैं मानों पूरी तौर पर घुस जाती हूँ या यों कहिये कि आँखें खोले रहने पर अथवा हर समय जो हालत मुझमें पूरी तौर से उतरी हुई लगती है। आँख बन्द करने पर सीधे अनन्त समुद्र में मैं घुस जाती हूँ। एक कुछ यह हो गया है कि आँखे खोले रहने पर मुझे मानों दिखाई नहीं पड़ता है, या यों कहिये कि कुछ दिखाई पड़ने

का वहम् सा रहता है। किन्तु आँखें बन्द करने पर मुझे मानों अंतर का सब कुछ दिखता है, जो हाल अपने साथ है, वही सबके साथ है।

लगता है कि सम्पूर्ण निर्मलता, मृदुता या सरलता या शुद्धता सब मानों मैं पी गई हूँ। कुछ यह है कि तसव्वुर अब मुझसे नहीं सधता। हाँ, यह हो सकता है कि तसव्वुर खुद मेरा स्वरूप बन गया हो क्योंकि मेरा स्वरूप मानों शीशा हो गया है। कुल System ही शीशा हो गया है, चाहे कोई देख ले। न जाने मैं तो कुछ ऐसी पाक हो गई हूँ कि लगता है कि कुल पाकीज़गी मेरा स्वरूप बनकर उतर आई है। आज सबेरे से मेरी नाभि के बिल्कुल लगे में छ: अंगुल जगह में, इतनी अधिक फड़कन है और लगातार है, मानों एक बहुत मोटी सी नस जाग उठी है। कुल Nerves में पाकीज़गी बह रही है। कुल ज़र्रा-ज़र्रा मानों ईश्वरीय-प्रकाश का पुंज बन गया है। हालत इतनी अधिक सरल एवं हल्की है कि इसकी सानी नहीं, इसकी उपमा नहीं। बस, केवल इसे कहने को शब्द नहीं मिलते हैं। ज़र्रा-ज़र्रा सहजता का स्वरूप हो गया है और इसके साथ ही मानों ईश्वरीय-प्रकाश पुंज के साथ ही साथ मानों ईश्वरीय-शक्ति का भी केन्द्र बन गया है। मुझे तो कुछ पता नहीं कि यह क्या और कैसी दशा है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-801

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 15.9.64

पत्र आया। ईश्वर का धन्यवाद है कि तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली। ज्यों-ज्यों ईश्वर प्राप्ति पर आगे बढ़ते चला जाता है, बल्कि निकट होता जाता है, तो शुद्धताई, साधना, अनुभव, सब उसमें लय होते जाते हैं, क्योंकि ईश्वर में इनमें से कोई चीज़ नहीं है। तुम्हारी दशा ईश्वरीय दशा है।

तुम सबको दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-802

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम — 26.9.64

कृपा-पत्र 'आपका' मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने यह कैसी कुछ अजीब दशा देख रही हूँ कि मुझे जीवन का ओर-छोर नहीं मिलता। कभी था, कभी नहीं रहा या न रहेगा, ऐसा बीच का Period ही कोई नहीं मिलता। ऐसे ही 'आप' मुझे अभी मिले हैं, ऐसा प्रतीत नहीं होता, बल्कि इसका भी ओर छोर कुछ नहीं है। न जाने यह

क्या हो गया है कि मेरे बीच कभी कुछ Period था या रहा ही नहीं, क्योंकि ऐसा कुछ भान नहीं होता। जैसा कि सब कहते हैं, न जाने जन्म-जन्म से भटक कर हम आ रहे हैं। मुझे अब कुछ कभी ऐसा नहीं लगता, कहने को भले कहती रहूँ, और न मुझे ऐसा ही लगता है, कि मैं 'आप' के बिना कभी रही हूँगी, जबकि मुझमें जीवन नाम की चीज़ नहीं है। अब कुछ ऐसा लगता है कि मेरी अंतरात्मा में या मेरे अंतर में कहीं अंदर ही टिघल-टिघल कर घुलाव शुरू हो गया है, किन्तु वह शरीर से बिल्कुल पृथक है। वहाँ बस जो कुछ हो रहा है, वह देखने वाली मैं अकेली कुछ देख रही हूँ, जिसका शब्दों में कह पाना मुश्किल है।

कुछ न जाने ऐसी दशा है कि दुनिया में कुछ है, या अँधेरा है, कुछ समझ में नहीं आता, न कुछ दिखाई पड़ता है। कुछ ऐसी दशा है कि कोई दुनिया-वुनिया है, ऐसा ख़्याल ही मन में नहीं रह गया है। कभी सृष्टि रचना भी हुई या है, ऐसा कुछ मुझे आभास नहीं होता है। ईश्वर या बन्दा, जीव या ब्रह्म, यह सब भी मुझे कुछ भास नहीं होता है। किन्तु तबियत में है या नहीं, ऐसा द्वन्द भी नहीं आता है। सब बहुत साधारण सा जीवन बन गया है और आध्यात्मिक दशा भी बहुत सीधी सी, साधारण सी चलती जा रही है। अब कभी कोई पेचीदगी या उलझन दशा के सामने नहीं आती। बस, मामूली दशा चलती जा रही है। प्रियतम 'मालिक' का दामन सदा अपनी इस बिटिया को अपनी पावन एवं वरद् छाया दिये हैं, ऐसा तो अक्सर लगता है। यही मेरे लिये आकाश के समान छाया है। नहीं तो, न पृथ्वी, न आकाश, हवा, सब कुछ आँख से ओझल हो गया है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-803

प्रिय बेटी कस्तूरी — बिदर
आशीर्वाद! — 4.12.64

तुम्हारा ख़त हैदराबाद में मिल गया था। मेरी तबियत ठीक है। यहाँ पर मिशन ने फैलने के लिये लम्बे डग लेना शुरू कर दिया है और हर सत्संगी भाई इसके लिये कोशिश कर रहा है। दिन-ब-दिन यहाँ आगे ही बढ़ने की उम्मीद है।

तुम सबको दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-804

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 16.11.64

'आप' का समाचार नारायण दद्दा से मालूम हुआ। आप अब स्वस्थ हैं, जानकर खुशी हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने कुछ ऐसी दशा है कि कुल शरीर अन्दर से बाहर तक सब मानों चलता-फिरता हुआ भी सुन्न सा रहता है। न जाने एक यह कैसी बात मेरे अन्दर पैदा हो गई है कि न जाने अब अन्दर में 'आप' का पवित्र नाम लेने से जी कुछ चुराता सा है, मानों जी कुछ बचना चाहता है।

न जाने इधर, जब से शाहजहाँपुर से लौटी हूँ, किसी को भी पूजा करवाऊँ, तो उसका मन ही नहीं लगता है। तबियत स्वच्छ चौपट पड़ी रहती है, किन्तु रमाव नहीं होता है। मुझे अजीब बात लगती है कि मानों मैं अपनी जगह से बिल्कुल अस्थिर बनी हुई है। वहाँ से नीचे देखूँ तो इधर सबका मन लग जाये, किन्तु मैं इधर नहीं देखना चाहती, क्योंकि इधर देखने से मैं अपने 'श्री बाबूजी' को ज़रा भी आराम नहीं दे पाती और अब जहाँ हूँ, वहां से मुझमें दृढ़ता है कि मेरे 'मालिक' को दर्द, कमजोरी में आराम लगता है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-805

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली
सादर प्रणाम! 6.12.64

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहां सब सुकशल है, मेरा स्वास्थ्य भी अब ठीक है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो आजकल ऐसी हालत रहती है, मानों आपा खोये बैठी हूँ। पूजा-ऊजा आध्यात्मिक क्षेत्र में भी मानों मुझे कुछ करना नहीं रह गया। हाथ पर हाथ धरे बैठी हूँ, मानों कहीं मुझे कुछ काम ही नहीं रह गया है। यद्यपि उठे हुए कदम तो 'मालिक' के क़दमों की ओर लगे हुए हैं। कुछ यह है कि सब कुछ आपका है, यह कहने से मेरे ऊपर न जाने क्यों अब जैसे कुछ असर ही नहीं पड़ता है। पहले यह ख़्याल मुझमें एक नई उमंग, एक नई चेतना, उत्पन्न कर देता था, परन्तु मेरे लिये तो चेतना और अचेतना एक समान अर्थ वाले प्रतीत होते हैं। न जाने क्यों मुझे अब पढ़ने, लिखने, बोलने, मनन एवं ध्यान का कुछ असर ही नहीं होता, मानों कुल मरूस्थल ही मरुस्थल में मेरा वास रहा है।

न जाने क्या पिपरमेन्ट की तरह की ठंढ़ी सी फुहारें सिर में मालूम पड़ती रहती हैं। लगता है मानो सिर में नसें या कुछ चटक-चटक सी उठती हैं। किन्तु मेरा Connection तो कहीं, किधर भी नहीं लगता। मुझे तो Connection की वह Chain जो जीव को शरीर से स्वामी को सेवक से तथा जो अपना और सबका ख़्याल दिलाती है, उसका कहीं पता नहीं मिलता। वह मानों कहीं समा चुकी है, उसका कहीं पता नहीं मिलता है और Chain तो मैंने केवल दशा को व्यक्त कर सकने को लिखा है, वरन् कुछ अजीब अस्तित्वहीन सी फिरती हूँ, जिसमें न कोई तत्त्व है, न कोई गुण है, बस बेज़िन्दगी के ज़िन्दगी फिरती है। संसार कहती हूँ, किन्तु उसका अन्तर-बाहर कोई ख़्याल तक नहीं बंध पाता है। कुछ अजीब दशा है, बिना प्रेम के

विह्वल रहती हूँ बिना भक्ति के, बिना आवाज़ के प्राणों में एक प्यास समाई हुई है। बिना पीर के एक पीर (दर्द) अंतर को कुरेदती है, जिससे एक कसक, एक कराह उठती है, किन्तु यह सब क्या है, क्यों है, इसका कोई उत्तर नहीं है और कोई यह प्रश्नचिन्ह भी नहीं है। जो है, सो है, जानने वाले केवल 'आप' हैं, जो मुझे अनुभूति प्रदान करते हैं।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-806

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 19.12.64

कृपा-पत्र 'आपका' मिला। समाचार मालूम हुए। मिशन तो फैलेगा ही। दक्षिण भारत ही क्या इसे तो पूरी दुनिया में फैलना है, और फैलेगा ही। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने अब तो कुछ ऐसी दशा बहुत दिनों से चल रही है, कि मानों कोई काम ही नहीं रह गया है। इसलिये, न तो घर, न बाहर, कहीं भी जी लगता नहीं है। मन में उचाटपन भी नहीं लगता, किन्तु कहीं लगता भी नहीं है, मानों अंतर-बाहर, घर-बाहर, कहीं कोई काम मुझे नहीं रह गया है। तेज़ी भी बहुत जल्दी और बहुत आने लगती है। न जाने क्यों मेरी याददाश्त कम होती जा रही है। मानों कुल में एक धुँध सी छाई हुई है। यद्यपि यह धुँध भी 'मालिक' की दी हुई पावन चीज़ ही है। याददाश्त में 'आप' मेरी याद में नहीं आते। कुछ लिखना चाहती हूँ, किन्तु विचार ही नहीं उठते हैं।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-807

प्रिय बेटी कस्तूरी — तिरूपति
शुभाशीर्वाद! — 27.12.64

तुम्हारा पत्र मिल गया और केसर का भी। केसर ने अपनी हालत अच्छी लिखी है। तुमने जो स्वप्न देखा है, वह लय अवस्था की अच्छी दशा है और पानी पिलाना उस हालत की सायुज्य गति है।

South India में मेरा अन्दाज है, काम Full Swing में आने में अभी दो साल और लगेंगे। अगर हम लोग अपनी पूरी ताक़त से जुट जावें तो समय जरूर कम हो सकेगा।

तुम सबको दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-808

परम पूज्यतथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली
सादर प्रणाम! 4.1.65

कृपा-पत्र 'आपका' मिला,पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो दशा कुछ अजीब रहती है कि तबियत उचटी भी रहती है, कहीं लगती नहीं, जी लगता नहीं, मानों कुछ काम नहीं रह गया है। हाथ पर हाथ धरे बैठी रहती हूँ। किन्तु, फिर भी, उचाट में भी, जी कहीं जाने-आने को नहीं चाहता है, मानों सब घर एक समान हैं। एक ही जगह है, जहाँ कोई जगह नहीं है। जहाँ न जगह है, न राह है, न पथ है, न लक्ष्य है, न कोई चाह है, न प्रीति है, न लगन, न कुछ, बस केवल हृदय में, बोलने में, तथा लिखने में एक दृढ़ता बैठ गई है। यही Natural दशा मेरी दशा बन गई है। दशा में अन्तर-बाहर में कुछ प्रभाव नहीं आता है। बस ज्यों की त्यों चल रही है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर आपको प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-809

प्रिय बेटी कस्तूरी तिरूवन्नामलाई
आशीर्वाद! 1.1.65

तुम्हारे ख़त का जवाब मैंने दे दिया था, मिल गया होगा। यहां Tiruvannamalai में ईश्वर का शुक्र है, कि बहुत काम मिला और आगे बढ़ने की उम्मीद है। उम्मीद है कि चलते समय तक 70-80 आदमी हो जायेंगे। यहां पर सत्संगियों ने बड़ा आराम दिया ईश्वर तुम्हें खूब तरक्की दे।

तुम लोगों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-810

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी बरेली
सादर प्रणाम! 7.2.65

'आपका' कृपा पत्र मिला। समाचार मालूम हुए। तिरूवन्नामलाई में मिशन का काम अच्छा हो रहा है, जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने कुछ ऐसी दशा है कि चाहे जितने लोगों के बीच मैं बैठी होऊँ, सदा मानों मैं अकेली ही रहती हूँ। सदा सतत् बेहोशी की दशा में अक्सर जब कभी बार-बार झटका सा लगता है, तो अचानक एकदम से लगता है कि मानों मैं अकेली हूँ। न मुझे कभी किसी की आवाज़ सुनाई देती है, और न

कोई सूरत ही नज़र में आती है। मैं कभी दो होती ही नहीं और अकेले के अनुभव में भी मैं नहीं, 'आप' नहीं, बल्कि कुछ अनुभव होता नहीं। बस अकेली वीराने की बहार में खोई, कभी न लौटने वाले होश में समाई मैं सदा अकेली रहती हूँ। लगता है कि लय-अवस्था मुझमें लय हो रही है। लय-अवस्था का कुल मैदान मुझमें समा गया है और मानों मैं Centre में तेज़ी से घुसी जा रही हूँ। क्या हाल लिखूँ? विचार कभी उठते ही नहीं, यद्यपि फिर भी दिमाग़ कुछ करता है, क्योंकि उसकी नसों में कुछ स्पन्दन होता रहता है। न जाने कुछ ऐसी दशा है कि बार-बार अपने को disturb करती हूँ, बात में लगाती हूँ, लिखने में लगाती हूँ, किन्तु अकेलापन कभी जाता नहीं और दुकेलापन कभी आता नहीं।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-811

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 12.2.65

आशा है मेरा एक पत्र मिला होगा। यहाँ सब कुशल से हैं। आशा है 'आप' भी स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

'आपने' बताया है कि Realization में खुदगर्ज़ी किसी Form में भी नहीं रहती है। वह सदा सब हालत में, कोई पैर छुये, या नाराज़ हो, सम रहता है, नहीं, दोनों से परे रहता है। Heart के Last में दाहिनी ओर एक Point है, जिस पर तवज्जोह 15 मिनट करने से ही निरन्तर हालत ऊपर को जाती है। 'आपने' कृपा करके Point D_2 की सैर शुरू करा दी है। कुछ ऐसी दशा है कि लगता है कि मानों एक बिल्कुल Silent Moderation की कुल दशा मुझ में व्याप्त होकर खो गई है। लगता है, मानों एक जड़ Balanced State की कुल दशा को पी गई है। कुछ ऐसा लगता है, Balanced दशा में तो कुछ दशा है, किन्तु मैं जिसे कह रही हूँ, वह केवल Silent या जड़ ही कही जा सकती है। देखती हूँ कि दशा शरीर के कुल रोम-रोम में, कण-कण में व्याप्त हो कर फिर आगे को ताकने लगती है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-812

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 31.3.65

बहुत दिनों से 'आप' का कोई समाचार नहीं मिला है, चिन्ता लगी है। कृपया अपना समाचार शीघ्र दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

आज 'आपने' कृपा कर मुझे D2 point से निकाल कर E2 point पर डाल दिया है। न जाने यह क्या दशा है कि चैन या छटपटाहट में भी एक समान समता ही पाती हूँ। मुझे न जाने क्या हो गया है कि दुई कहती हूँ, द्वन्द बताती हूँ, परन्तु वास्तव में मेरे लिये एक समान स्थिति ही रहती है, जहाँ दुई का पता नहीं मिलता। सुख-दुख, चैन-बेचैनी, सब एक समान अर्थ वाले ही हैं, फिर भी 'आप' के स्वास्थ्य के विषय में मन में एक कुरेदना भरी रहती है। मैं Surrender का प्रयत्न करती हूँ, क्योंकि मुझे अत्यधिक प्रिय लगता है, किन्तु न जाने मैं अब उसकी गति नहीं पकड़ पाती हूँ। मैं नहीं जानती कि मैं क्या करूँ, कैसे करूँ?

न जाने मुझे क्या हो गया है कि मेरे 'श्री बाबूजी' मुझे अत्यन्त प्रिय हैं, किन्तु हृदय में अब 'उनके' लिये प्रियता नहीं उमड़ती। मेरा दिल मेरा ख़्याल तो 'उनकी' प्रियता से भरा रहता है। परन्तु अब मुझे क्या हो गया है कि अपने घर का, यानी अंतर का कोना-कोना, सब, रीता, सुन्न पड़ा है। कोरी प्रियता ही बस कण-कण में व्याप्त है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-813

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 5.4.65

मैं एक पत्र 'आपको' लिख चुकी हूँ, आशा है, मिला होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो कुछ अजीब दशा रहती है कि मानों कुल शरीर तथा अंतर-बाहर मानों सब सुन्न पड़ा है। तन, मन, दिमाग सभी कुछ सुन्न दशा में पड़े रहते हैं। स्वयं में कहीं कोई Activeness नहीं है। किन्तु ऐसी Activeness है, जो कभी कम ही नहीं होती है और न उससे मेरा कोई लगाव ही मालूम पड़ता है, मानों मैं यह जानती हूँ कि यही मेरे 'मालिक' की Activeness है, जो मुझे Active रखने के लिये मुझमें उतरी हुई है। लगता है मानों कोई एक भेद की हालत मुझमें उतरी है। किन्तु वह क्या भेद है, अथवा हालत, यह मैं नहीं कह सकती हूँ। न जाने मुझे लगता है कि वह Chain जिससे मैं जन्म-जन्मान्तरों तक से जुड़ी आई थी, अब जाने वह भी गल गई। कोई भेद था, जो मुझ पर खुल गया है और वह मैं नहीं, परन्तु मेरे 'मालिक' भली प्रकार जानते हैं।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर आपको प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-814

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी | बरेली
सादर प्रणाम! | 1.5.65

यहाँ सब कुशल है, आशा है, वहाँ भी 'आप' स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्यों अब जब किसी को पूजा कराने बैठती हूँ तो भी लगता है, मैं चीख़ पड़ूँगी। कुछ यह भी है कि दृष्टि अन्तर में जाते ही बड़े ज़ोर की चीख़ उठती है, यह न जाने क्या है। शायद जब सामने 'आप' दिखते रहते हैं, तब तक तो हालत ठीक रहती है। अंतर में मुझे 'आप' दिखाई नहीं पड़ते। शायद इसी लिये तबियत चीख़ उठती है या क्या, 'आप' ही जानें। इधर न जाने कुछ यह हो गया है कि मानों कुल दुनिया, ऊपर-नीचे, सभी मानों मेरी निगाह के नीचे हैं। न जाने क्या बात है कि मेरे प्यारे 'मालिक' तो मुझे अत्यधिक प्यार करते हैं, बहुत याद करते हैं, किन्तु मैं उन्हें अपने जी भर कर प्रेम नहीं कर पाती, क्योंकि बार-बार याद रखने पर भी मैं भूल-भूल जाती हूँ। अक्सर तो अब यही हालत रहती है, कि जिस 'मालिक' को मैं पाना चाहती हूँ, जिन्हें मेरे अन्तर का कोना-कोना ढूँढ़ता है, जिसके दर्शन के लिये मेरे शरीर का ज़र्रा-ज़र्रा तक आँख बन गया है, उस अपने 'मालिक' को ही मैं भूल जाती हूँ और अपना यह लक्ष्य भी बार-बार मुझे भुला जाता है। बस मेरी तो अब यह दशा है कि कुल याद का सिद्धान्त ही मैं भूल गई। न जाने कब व कैसे मेरे ध्यान से ध्यान का ध्येय तक निकल गया है और मैं जान भी नहीं पाई। अब तो बस मैं प्रयत्न करती हूँ, किन्तु जब प्रयत्न करने की याद रहती है, तब ही कर पाती हूँ। मैं तो भाई, दुनियाँ की एक मामूली लड़की हूँ। मुझे अपना न कोई लक्ष्य दिखता है, न सिद्धान्त ही सधता है। अब तो मुझमें नम्रता की हालत भी मेरी नहीं लगती है, बल्कि 'मालिक' जब देता है, तब अनुभव होती है और फिर भूल जाती हूँ, यद्यपि यह मुझे अच्छी लगती है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या-815

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी | बरेली
सादर प्रणाम! | 18.6.65

आप को बहुत दिनों से पत्र नहीं डाल सकी, कृपा क्षमा करियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसा लगता है कि मानों मैं 'मालिक' के अंतरिक्ष में ही रहती हूँ। तन, मन, बुद्धि, सब मुझे केवल 'मालिक' का अंतरिक्ष-मात्र लगता है और वैसे इसका कोई अस्तित्व नहीं है। मुझे तो आध्यात्मिकता या ईश्वरीय गति में इसके अतिरिक्त और कुछ लगता ही नहीं। कुछ ऐसा लगता है कि मानों कोई एक ऐसी चीज़ मेरे अन्दर है कि हालतों पर मानों Command सा है। जिस हालत के बारे में बोलूँ, वही हालत मानों सामने आ जाती है। अंतरिक्ष क्या है, यह

मैं नहीं जानती, किन्तु मुझे लगता है कि मानों मैं उस अंतरिक्ष-गति को पीती जा रही हूँ। मैं अक्सर, सोकर, उठने पर मानों बहुत प्यासी उठती हूँ। यद्यपि पानी पीने की प्यास व इच्छा नहीं होती है। कुछ ऐसा मैं देख रही हूँ, कि जिस हालत की वजह से कुल आध्यात्मिकता है, कुल प्रकाश है, आत्मा है वह कुछ नहीं है, किन्तु उसके अनुभव से एक Second भी दृढ़ता तबियत को गवारा नहीं होता।

कुछ ऐसी दशा है कि जैसे पथराई आँखों में प्रकाश नहीं है, वैसे ही पथराये अनुभव में कुछ नहीं है। बस, जो सतत् है, सो है। उसका भी अनुभव सतत् नहीं है। कुछ ऐसी दशा है कि पहले तो मुझे मानों देखते हुए भी कुछ नहीं दिखता था, परन्तु अब न जाने क्या हो गया है कि मैं तो अब सब देखने लगी हूँ।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-816

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 17.7.65

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं। मेरी तन्दुरुस्ती भी अब ठीक है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

कुछ ऐसा हाल है कि मानों साँस कभी लेती ही नहीं। इसलिये कभी जब महीने 15 दिन में ख़्याल आने पर ज़ोर-ज़ोर से साँस लेती हूँ तो तबियत में बड़ा आराम सा आता है। किन्तु यह ख़्याल कभी-कभी ही आता है। पीछे गर्दन में, रीढ़ की हड्डी में, ऊपर से लेकर आधी पीठ तक हल्का-हल्का सा दर्द या कुछ और बात रहती है और अक्सर तड़खन सी होती है। सिर पर अनजान और अदृश्य रूप में मानों एक हाथ रखा रहता है, परन्तु अब न जाने क्यों उसका स्पर्श भी अब मुझे नहीं होता है। कुछ ऐसा लगता है कि यदि वह हस्त-कमल ज़रा सा उठा दिया जाये तो मानों कुल Vision मेरी मुट्ठी में आ जायेगा, परन्तु ऐसा मुझे अच्छा लगता है। न जाने कुछ ऐसा हो गया है कि मानों तबियत को कोई भाव, रंग नहीं छूता। स्वयं अपने ही रंग का पता नहीं और तबियत में मानों ग्रहण-शक्ति भी समाप्त हो चुकी है। इसलिये अछूती ही बनी रहती है, किन्तु फिर भी कोई ठीक पता, कोई अन्दाज़ नहीं आता। मेरे अन्तर में रहम का, ममत्व का जो दरिया उफ़नता रहता था, वह भी पता नहीं कब कहाँ चला गया है। मेरी हालत तो केवल एक साधारण घरेलू लड़की की तरह है, जिसके हाथ में स्वयं का बनना, बिगड़ना भी कुछ नहीं रह गया है। फ़ैज का मानों कोई मुझे स्पर्श ही नहीं होता है। पूजा करने, करवाने का कुछ मानों महत्व नहीं। सब एक समान गति ही रहती है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-817

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली

सादर प्रणाम! — 12.8.65

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। मेरी तबियत अब ठीक है। आशा है, 'आप' भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब न जाने कुछ ऐसा है कि मुझे अपनी कोई मंजिल सामने नहीं दिखाई पड़ती। मुझे कहाँ जाना है, ज़रूरी जाना है, जल्दी चलूँ, ऐसे उत्साहपूर्ण विचार अब लाने से भी दिल में नहीं उठते। बेमंजिल के, बे दिल के, बे ख़्याल रहते हुए भी मुझे कोई शक्ति अपने में खींच रही है। बस, एक यही एहसास मुझे बल देता रहता है। यद्यपि यह एहसास भी अधिकतर तो जाग्रत अवस्था में नहीं रहता है। एहसास ही नहीं, सभी कुछ, चेतना व आत्मिक-शक्ति, सभी कुछ जाग्रत अवस्था में मेरे पास नहीं है।

न जाने अब तो कोई point है, या सैर होती है, ऐसा भी कभी अंदाज़ में नहीं आ पाता है। बस एक दृढ़ता अन्दर Work करती है, जो स्वत: है। मेरी स्वयं की नहीं है, जो बस, मेरी दृष्टि को उधर फेरे रहती है कि यह हालत हो रही है। मैं तो केवल दृष्टा-मात्र हूँ, अपनी हालत में भी और दूसरों को पूजा करवाने में भी। बस इसी दृढ़ता और Vision में जो दूसरे की हालत आती जाती है, उससे ही यह विश्वास होता है या ऐसा मानना पड़ता है कि पूजा हो रही है। कुछ ऐसा भी हो गया है कि सैर हो रही है, ऐसा विश्वास होने पर भी, ऐसा प्रतीत होने पर भी यह नहीं पता लगता कि मैं चल रही हूँ। जैसाकि मुझे हमेशा लगता था कि मैं बेतहाशा दौड़ रही हूँ। न जाने एक अब यह क्या बात हो गई है कि पहले मैं आध्यात्मिकता में लय हुई लगती थी। कुल आध्यात्मिकता मेरे में समाई लगती थी। आध्यात्मिक वाली कुल हालत में मैं लय होती मालूम होती, हर हालत मेरे में समा जाती है, ऐसा अनुभव होता था, किन्तु अब मैं सबसे उछली हुई रहती हूँ। न जाने यह मुझे क्या होता जा रहा है। लेकिन फिर भी मुझे कोई, कुछ ख़्याल इसका नहीं होता। केवल एक अजीब विश्वास, एक दृढ़ता अन्दर जाग गई है। बस यही मेरा स्वरूप है, यही मेरी हालत है और कुछ कहने को नहीं है और समझने को तो अब मेरे पास कुछ रहा ही नहीं। अपनी हालत के बारे में तो मुझे अब ऐसा लगता है कि हालत तो एक ही रहती है, जो दृढ़ है, किन्तु मानों बस सामने का एहसास बदल जाने पर ऐसा लगता है कि हालत बढ़ रही है, उसमें गति है, नहीं तो गति का आभास तो दूर रहा, स्पन्दन तक एहसास में नहीं आता है। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-818

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली

सादर प्रणाम! — 4.9.65

यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं। आशा है, 'आप' भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

जाने मुझे क्या हो गया है कि पहले मुझे भीतर-बाहर, हर कण-कण में, ईश्वर की याद

समाई लगती थी, किन्तु अब न तो मुझे ईश्वर भासता है, न उसकी याद का ही कहीं पता मिलता है, तो फिर बेचैनी का प्रश्न ही कहाँ। अब तो जैसे ईश्वर कहाँ है, कैसा है, मिलेगा या नहीं, कुछ बात कभी मन में आती नहीं। बेचैनी पाने के लिये मुझे हृदय के किसी कोने में एक कसक है, किन्तु पैदा नहीं होती। न जाने कुल में मानों अन्तर-बाहर, कण-कण ऐसा मुलायम हो गया है, कि मानों कुछ है ही नहीं। फूल भी कहना उससे वज़नी है। मेरा कुल कण-कण मानों ऐसा शीशा हो गया है, जिसमें दूसरों की शक़्ल सब कुछ देखा जा सके, किन्तु अपनी कैसी है, क्या है, कुछ पता नहीं। दूसरों की शक़्ल नहीं, वरना मानों सब एक ही, कण-कण में ही समाये हैं, तो फिर, इसमें देखने के लिये शक़्ल कहाँ से आई। इसीलिये मैं अपने जीवन सर्वस्व 'आप' की एक झलक पा सकने को बेचैन रहती हूँ, किन्तु न जाने क्यों, 'आप' के पास रहते हुए भी कभी ऐसा नहीं होता। बस, 'आप' की अंतरिक्ष गति ही मैं हूँ, बस ऐसी दृढ़ता स्वत: ही बंधी हुई है। 'आप' की अंतरिक्ष गति ही मानों मेरी आँखें हैं, नहीं, मानों एक अपना Vision ही अपना स्वरूप है, कह लीजिये।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-819

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 13.9.65

मेरा एक पत्र 'आपको' मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्या कुछ ऐसी दशा है कि मुझे होश की दशा में भी जब कभी होश सा आता है, तब मुझे उतनी सी देर को लगता है, कि मैं मानों यहाँ थी नहीं। एक अब, जब सोकर नींद खुलती है, इधर 3-4 दिन से तो लगता है, कि मानों पायताने कोई बैठा था। शक़्ल उसकी कोई नहीं भासती और न डर, भय ही होता है। बस ऐसा कभी-कभी जागते में भी लगता है। लेकिन बहुत कम, कभी ही लगता है, किन्तु रात में नींद खुलते ही पायताने तो बराबर लगता है। सोते समय जब खाट पर लेटती हूँ, तब तो कुछ नहीं लगता है। बस जागते ही लगता है, कि कोई उठ गया। उसकी ओर मेरा कुछ ख़्याल नहीं जाता, मानों कोई बुरी चीज़ नहीं है। मुझे तो बस अपना 'मालिक' ही सब ओर भासता है, या यों कहिये, 'वह' मेरा ख़्याल बनकर या मनके रूप में मुझे मिला है, क्योंकि मुझे अपने प्रियतम से जितना प्रेम चाहिये, मैं उतना नहीं कर पाती। 'उसी' कृपालु ने मुझे अपना लिया है। मुझे कुव्वत नहीं, जो मैं अपने 'श्री बाबूजी' से जी भर कर प्रेम कर सकूँ। अब तो-

''बिना भक्ति तारो, तब तारिबो तिहारो है''।

मेरे शरीर तक का ज़र्रा-ज़र्रा ऐसा शीशा होकर चमक रहा है कि जिसमें कभी कोई शकल

नहीं आती, कभी कोई छाँई नहीं पड़ती है। अब तो points की सैर भी 'मालिक' केवल अपने Vision से कराते हैं, वरना मुझमें अब कुव्वत नहीं रही।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-820

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 17.9.65

एक पत्र डाल चुकी हूँ, मिला होगा। परसों से दशा कुछ थोड़ी सी और बदल गई है। वह जो कुछ और जितना समझ सकी हूँ, लिख रही हूँ।

लगता है मानों E_2 point की सैर समाप्त हो चुकी है। अब तो मैंने ज़र्रा-ज़र्रा शीशा होना लिखा है, किन्तु शीशा ऐसा है कि जिसमें चमक नहीं, अँधेरा भी पूरी तौर से कहा नहीं जाता है। 'मैं' कहते रहने में कोई जीवधारी चीज़ नहीं महसूस होती, बल्कि जड़ है या चेतन, यह भी कुछ नहीं। मैं कुछ नहीं जानती कि मैं अब क्या लिखूँ और कैसे लिखूँ। आज मेरा जन्मदिन है, किन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि मैं कभी पैदा हुई, धरती पर आई, बड़ी हुई। यह सब क्या कहानी है, जो मैं नहीं जानती। यह तो 'आप' ही जानें। मैं जड़ हूँ या चेतन, यह तक कुछ पता नहीं है। मैं तो 'आप' की अंतरिक्ष गति हूँ। वह क्या है, मैं यह भी नहीं जानती, किन्तु मुझे सैर को मैदान चाहिये। मैं चले बिना एक क्षण भी नहीं रह सकती हूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-821

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — बरेली
सादर प्रणाम! — 30.12.65

मेरा पत्र मिला होगा। यहाँ सब कुशल से हैं, आशा है 'आप' भी कुशल पूर्वक होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

तारीख 4.11.65 को आपने कृपा करके मुझे E_2 point पार कराकर F_2 point पर डाल दिया, इसके लिये मैं आप को कैसे धन्यवाद दूँ, मेरे पास तो इस योग्य शब्द ही नहीं है।

न जाने क्या मैंने रात स्वप्न नहीं, बल्कि स्वयं कुछ ऐसा देखा कि मानों कण-कण मेरे सामने बिखरा पड़ा है। आध्यात्मिकता (Spirituality) और एक-एक, कण-कण को पढ़ने पर, उसमें मानों कण-कण में सत्य का प्रत्यक्ष स्वरूप मानों फैला पड़ा है। वह मानों मेरे में से निकलकर बिखरी पड़ी थी। पता नहीं यह क्या दशा थी, जो मेरे सामने प्रत्यक्ष थी और स्वयं अपनी ओर देखने

पर लगता था कि मानों मेरा केवल विशुद्ध स्वरूप रह गया है। मेरी तो दशा वास्तव में अब कुछ है ही नहीं, बल्कि मैं तो केवल एक दृष्टा मात्र ही हूँ और न जाने क्यों कहने को तो मैं कह लूँ, किन्तु सच तो यही है कि मेरा लगाव अब न आध्यात्मिकता से, न किसी से, कुछ नहीं है। नहीं, न जाने मुझे कुछ हो गया है कि लगाव या सम्बन्ध का ही सम्बन्ध मानों मुझसे विच्छेद (टूट) हो गया है। मैं तो जैसी मेरे 'मालिक' ने मुझे संसार में भेजा था, वैसी ही रह गई हूँ। यह अलौकिक दृढ़ता ही मेरा वस्त्र है, मानों अब तो न जाने एक यह दशा ही लगती है कि जैसी हूँ, वैसी सामने हूँ। जो है, वह प्रत्यक्ष है और वही मेरी दशा या रूप, कुछ भी कह लीजिये, वही है। मुझे अब कुछ ज्ञान नहीं है। मैं तो वैसी हूँ अब, जैसा 'आपने' मुझे बनाया होगा। उसमें भी वह 'आपका' सजाया श्रृंगार (हालतों द्वारा) अब नहीं है। बस एक अलौकिक दृढ़ता ही मानों मेरा वस्त्र है, वरन् मैं तो सदैव नग्न थी और वही हूँ। यद्यपि इसकी भी मुझे याद नहीं, क्योंकि मुझमें अब याद का ताब नहीं। न जाने 'आपने' अब क्या किया है कि मैं हर बात में definite रहती हूँ। 'आप' मेरे हैं, यह मुझे मालूम नहीं। मेरी जननी (आप) कहाँ हैं, कैसे हैं, सब भूल गई हूँ। किन्तु मैं अंतर ही अंतर में बेचैन हूँ। यद्यपि यह बात भी कभी-कभी ही मेरे होश में आ पाती है। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-822

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 4.2.66

बहुत दिनों से आप का कोई समाचार नहीं मिला है, इस कारण यहाँ हम सभी लोगों को फिक्र लगी है। कृपया अपना समाचार शीघ्र दीजिएगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसा है कि मानों मिलन और विछोह की दूरी को मेरे लिये 'मालिक' ने एक समान रूप में कर दिया है, किन्तु फिर भी व्यथित मन, यह घायल प्राण कुछ चाहता है, किसी कारण कसकता है, किन्तु अब मेरी वाणी बन्द हो गई है। ऐसा क्यों है, मैं क्यों बेचैन हूँ, इसका मेरे पास कोई उत्तर नहीं है। मैं कुछ चाहती हूँ, ऐसा भी मैं नहीं कह सकती हूँ। मेरे पास केवल समाधान ही समाधान है, प्रश्न कुछ नहीं। बिना रोशनी के सब कुछ रौशन है। बिना जाने ही सब कुछ जाना है। बिना शक्ति के सब कुछ शक्तिमान है। केवल मुझे छोड़कर सब कुछ परम शान्ति है। बस एक अलौकिक दृढ़ता ही मानों मेरा वस्त्र है, वरन् मैं तो सदा ही वैसी की वैसी ही हूँ। मैं हूं, ऐसा मुझे मानों कोई शक्ति अपनी वास्तविक स्थिति से जगाकर ही बताती है, मानों मेरे अस्तित्व का होश कोई एक अदृश्य शक्ति ही मुझे बार-बार दिलाती है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-823

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी मोदी नगर
सादर प्रणाम! 4.3.66

कल विष्णु यहाँ आये। उन्हीं से 'आपका' समाचार मिला। आप स्वस्थ हैं, जानकर खुशी हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने मेरी दशा अब कैसी है कि मुझे पूजा में ही नहीं, वरन् अन्दर हर समय ही बहुत अच्छा, स्थिर, एक सामान्य दशा सी दृढ़ रहती है, किन्तु मेरे मन में सन्तोष एवं धैर्य क्षण मात्र भी नहीं आता है। हो सकता है, मैंने जिसे चाहा, 'उन्हें' जी भर कर प्रेम भी नहीं कर पाई। जितना डूबना चाहा, उतनी ही सूखी एवं सूखी उदास निकली। मेरी यही दशा है कि अब मन स्वत: ही वीरान को बहार मान बैठा है। ज़रा भी गीलापन नहीं आता है। 'आपने' दुनिया में ऐसे रहने को लिखा है, जैसे जल में मुर्गाबी, किन्तु मैं तो अब आध्यात्मिक-सागर में ऐसी ही दशा पा रही हूँ। जब डूबकर हालत से ऊपर आती हूँ, तो पर सूखे ही निकलते हैं। दामन झड़ा हुआ होता है। मेरे पास तो अब इतनी भी कुव्वत नहीं है कि हृदय-रूपी दामन में 'आप' की याद को बाँधकर रख सकूँ और खुश हो लूँ। एक कुछ यह है कि दशा में गति या चाल है या नहीं, अब मैं यह नहीं जान पाती। बस अंतस् में एक खिंचाव है, जो मुझे परम शान्तिमय दशा से भी ऊपर खींचे रहता है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-824

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी मोदीनगर
सादर प्रणाम! 26.3.66

मेरा एक पत्र आपको पहुँचा होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं, आशा है आप भी कुशल पूर्वक होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

तारीख 20.3.66 को 'आपने' कृपा कर मुझे G2 point पर खींच दिया। न जाने कुछ ऐसी दशा है कि एक जो आंतरिक अनजानी कसक मन के किसी कोने में घर कर गई है, जिसका मुझे कभी पता मिलता है, कभी नहीं मिलता। न जाने कुछ ऐसा हो गया है कि जान या अनजान में भी एकाग्रता की परम स्थिति मानों एक समान गति से मेरा स्वरूप बन गई है। सोते-जागते तबियत एकाग्र रहती है, तथा मानों बड़ी दृढ़ रहती है। तबियत मानों कहीं ऊपर खिंची रहती है। जब जब तबियत की याद या होश आता है, तब-तब सदा ऊपर ही खिंची एकसार मिलती है। जिस हालत की वजह से या यों कहिये कि जिसकी वजह से आध्यात्मिक गतियाँ हैं, वहीं मैं बनकर मुझमें प्रवेश कर गई हैं और प्रवेश क्या, बल्कि वही, जो वास्तविकता थी, वही रह गई है, मानों सब लाग-लपेट समाप्त हो गई।

भ्रम या भय का पता नहीं है। दृढ़ता ही मानों एक आंतरिक अचल विश्वास ही हालत बनकर मेरे में उतर आई है। मानों स्वयं मेरा प्रियतम 'मालिक' ही दशा के रूप में मेरे में उतर आये हैं।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-825

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 16.5.66

नारायण दद्दा से आपका समाचार मिला। 'आप' को फिर पेट में तकलीफ हो गई है, जानकर चिन्ता लग गई। कृपया आप दवा ठीक से खाते रहें और जल्दी स्वस्थ हो जायें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि स्वयं अपने विचार जो उठते हैं, वे मुझे स्पर्श नहीं कर पाते हैं। मैं 'मालिक' की याद को गले लगाये रखना चाहती थी, किन्तु मैं उसका स्पर्श भी नहीं कर पाती। ख़्याल में 'आपको' पकड़े रहना चाहती थी,किन्तु उसका स्पर्श तक मुझे नहीं हो पाता। अपने 'मालिक' को अपनी आँखें अपनी पलकों में टिघल-टिघल कर भीतर ही उतार गई और मैं इससे भी हार गई। परन्तु हाँ, अपने 'मालिक' के सब कुछ पर मेरा हक़ है। मेरा दावा है, किन्तु अपने पर नहीं है, 'उनकी' मर्ज़ी पर है।

न जाने कुछ ऐसी एक नई दशा अब है कि मैं एक ही क्षण को जाने ऐसी गहरी बेहोशी हो जाती है कि मुझे क्या हो गया था, इतनी सी देर कुछ पता नहीं रहता। लगता है, दिमाग कहीं उड़ जाता है। अब तक मैं इसे मामूली बेहोशी ही, शायद कमज़ोरी के कारण समझती रही, किन्तु अब मैं इस बात पर दृढ़ हूँ कि यह कोई हालत है। क्योंकि मानों दिमाग़ एक क्षण को ही कहीं गाढ़ी हालत में डूब जाता है। होश आने पर फिर मुझे यह याद तक नहीं रहता कि क्या हुआ। एक बार गिर पड़ने पर मुझे यह ध्यान अब तक नहीं आता कि कब, कैसे और कहाँ चोट लगी और न पीड़ा ही रहती है। ऐसी गहरी बेहोशी, जो बहुत थोड़ी देर को आती है, फिर मानों मुझे दुनियां में नई तौर पर लगती है, ऐसा लगता है। वैसे भीतर और बाहर के Vision में न जाने अब कोई अन्तर वैसे भी सामान्य हालत में कभी कोई नहीं रहता है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-826

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 18.5.66

आपका समाचार मिला। अब आप स्वस्थ हैं, जानकर खुशी हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी कुछ ऐसी दशा है कि स्वप्न में यदि 'आपसे' बातें करूँ, 'आपके' प्रश्नों का उत्तर दूँ, किन्तु लगता है कि सब मानों मेरे जान में ही हुआ है। बल्कि उस वक़्त का वह होश ही मुझे होश में आना लगता है। वैसे मानों कुछ नहीं, एक समान गति, एक सामान्य हालत चल रही है, लगता है। कुछ ऐसी हालत लगती है कि मानों मंजिल ने मेरा दामन पकड़ लिया है। हाँ, मुझे ही उसे देखने की फुर्सत एवं पता नहीं रहता है, क्योंकि मुझे तो अपने 'श्री बाबूजी' के पास पहुँचना है, 'उन्हें' प्राप्त करना है और मेरे पैरों में मेरे 'मालिक' की कृपा को सम्भाल पाने के लिये, किन्तु वह भी मैंने बदल दिया है कि वह मेरे 'मालिक' का हो चुका है, तो अब यह शिकायत भी जाती रही। एक यह देखती हूँ कि 'आप' मेरे हैं। अब हालतों से मेरा लगाव नहीं होता है, हाँ, रमाव होता रहता है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर आपको प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-827

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 19.6.66

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। यहाँ सब कुशल से हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

सारा काम कुछ ऐसी लीनता की हालत में हो गया कि मुझे कुछ पता ही नहीं है और पता पाना भी नहीं चाहती। मेरी हालत तो अन्दर ही अन्दर श्रेष्ठतम् होती जाती है। यह और बात है कि उसे देख पाने की फुर्सत मुझे हो या न हो और देखती तो मैं बराबर रहूँ, किन्तु दूसरी ओर एक ऐसी लीनता में मैं लीन रहती हूँ, जिसका कोई छोर नहीं और जिसका पता केवल मेरे 'मालिक' की कृपा ही मुझे देती रहती है, वरना इन्सान की आँखों में इतना प्रकाश कहाँ। आन्तरिक दृष्टि भी उतनी ही देख सकती है, जितना अन्तर का प्रश्न हो। उससे आगे 'मालिक' की दिव्य-दृष्टि ही साथ देती है।

लीनता की हालत में न जाने कैसे मैं लीन नहीं रहती, बल्कि वह लीनता ही मुझे अपने में लीन रखती है। वही अपने में डुबोये रखने को मुझे मजबूर रखती है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-828

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 25.7.66

इधर मेरी भी तबियत कुछ खराब चल रही है, किन्तु आप चिन्ता न करें। शीघ्र ही मैं स्वस्थ हो जाऊँगी। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

आज 'आपने' कृपा करके मुझे H2 point पर खींच दिया है। इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद। यदि 'आप' की ऐसी ही कृपा इस गरीब बिटिया पर बनी रही और बनी रहेगी ही, तो मैं अवश्य ही अपने 'मालिक' तक पहुँच जाऊँगी।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-829

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 12.9.66

मेरा स्वास्थ्य अब ठीक चल रहा है। कमज़ोरी भी धीरे-धीरे दूर हो रही है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

दशा मेरी कुछ ऐसी है कि पवित्रता को भी पवित्र करने वाली है। भक्ति को भी माधुर्य प्रदान करने वाली है। यद्यपि स्वयं रस विहीन है। न जाने क्या हालत है कि Realization या समस्त आध्यात्मिकता को निचोड़ कर निकाल लें, फिर देखें क्या हालत है। और हालत का मज़ा यह है कि वह स्वयं कुछ दशा नहीं है। दशा तो यही है कि वह सब दशायें प्रदान कर सकती हैं, किन्तु स्वयं वह कोई दशा नहीं है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-830

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 17.11.66

मेरा एक पत्र आपको मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

परसों रात से स्वप्न में 'आपसे' Self-Surrender के बारे में तथा अन्य विषय में बातें होती रहीं। कुछ मैंने लिख भी लिया है। इधर मुझे लगता है कि Nature मुझ से कुछ Work लेना चाहती है। कांग्रेस की तरफ़दारी पर मेरी निगाह जाती है, परन्तु 'मालिक' की आज्ञा की प्रतीक्षा है। कभी ऐसा लगता है, इन तमाम झगड़ों को मैं शान्त कर सकती हूँ, किन्तु आज्ञा बिना नहीं।

मेरी आत्मिक-दशा तो अलौकिक जान पड़ती है। लगता है मेरे रहने का स्थान ही बदल गया है। मैं कहाँ हूँ, क्या हूँ, अब मैं कुछ नहीं जानती हूँ, मानों कुछ भेद कर मैं पार निकल गई हूँ और वही मेरे फैलने का स्थान हो गया है। सैर का point H_2 है। वह भी सब खुला

फैला पड़ा है मेरे सामने और मैं चल रही हूँ। किन्तु वह आत्मिक-स्थिति, जो मैंने लिखी है, वह कुछ और ही है। पवित्रता का मानों अन्त है। इसी स्थान से मानों प्रकट हुई है। लगता है साम्यवस्था की सीमा भेद कर मैं पार फैल गई हूँ। मैं हालत में आध्यात्मिकता शब्द लाना नहीं चाहती, क्योंकि वह बिल्कुल जँचता नहीं, भद्दा सा लगता है। वैसे मैंने हालत लिख दी है। ठीक तो 'आप' ही जानते हैं क्योंकि 'आप' ही देने वाले हैं।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:

आपकी दीन-हीन सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-831

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, मोदीनगर
सादर प्रणाम! 24.11.66

एक पत्र आप को डाल चुकी हूँ, मिला होगा। यहां सभी लोग कुशल से हैं, आशा है 'आप' भी स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि लगता है कि अखण्ड स्थिरता ही मानों हालत के रूप में मेरे में फैली हुई है। अनंत दृढ़ता ही मानों मेरा स्वरूप हो गई है। न जाने एक यह क्या बात हो गई है कि मेरी हालत तो प्रकाश या अँधेरे, सबके स्पर्श से,सबकी पहुँच से भी रहित है, किन्तु मैं जहाँ बैठती हूँ, जो कुछ बोलती हूँ, मानों सबमें प्रकाश है। प्रकाश भी रोशनी का अर्थ नहीं रखता, बल्कि ईश्वरीय-प्रकाश कह लें, सो कह लें जिसको केवल अनुभव किया जा सकता है, बताया नहीं जा सकता है।

लगता है, अनन्त दृढ़ता ही मानों कूट-कूट कर मुझमें भिदी जा रही है और मैं अपनी क्या लिखूँ? मैं तो सीमा के परे कहीं उड़ी जा रही हूँ। उस ओर देखती हूँ,तो लगता है कि उस उड़ने वाली कस्तूरी को ताब नहीं है, फुर्सत नहीं है, किधर भी देखने की और यह कस्तूरी केवल दृष्टा मात्र है, खोखली है, वीरान को ही बहार माने बैठी, उस पार कुछ देखती रहती है। मुझे लगता है कि मेरे अंग अंग में परिपक्वता फैली जा रही है। एक सहज परिपक्वता ही मेरे कण-कण में व्याप्त हो गई है। मैं परिपक्व हूँ, दृढ़ हूँ, सशक्त हूँ, यही लगता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-832

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी मोदीनगर
सादर प्रणाम! 10.12.66

'आप' स्वस्थ हैं, जानकर खुशी हुई। यहां भी सभी लोग कुशल पूर्वक हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि मानों एक अदृश्य में मैं भिदती चली जा रही हूँ। वहां जब निगाह जाती है, तो अपने को ऐसा पाती हूँ कि मानों इतनी ताब नहीं, जो 'मालिक' की कस्तूरी मुझे देख ले और मानों ईश्वरीय परम शक्ति का स्वरूप ही होती जा रही हूँ। किन्तु वैसे मैं बिल्कुल ही एक साधारण सांसारिक लड़की हूँ। उस परम शक्ति का स्वरूप होने के साथ ही मुझमें मानों एक अलौकिक दिव्य तेज व्याप्त हो गया है। यह सब क्या है, यह तो 'आप' ही जानें।

न जाने कुछ एक ऐसी दशा है कि अक्सर एकदम से मानों मैं कहीं दूर चली जाती हूँ। लगता है, एक क्षण को मानों कहीं नवीन गहन हालत में डूब जाती हूँ। न जाने एक कुछ यह देखती हूँ कि मानों रह-रह कर कुल शरीर थर्रा उठता है, मानों भूकम्प सा आ गया हो, ऐसा बहुत होता है। कुल शरीर में अन्दर-बाहर कम्पन सा हो जाता है। एक न जाने कुछ ऐसा लगा करता है कि पृथ्वी पर बैठी हूँ, किन्तु मानों पृथ्वी मुझे छूती नहीं। यह सब 'आप' ही जानें।

अम्मा 'आप को' आशीर्वाद कहती हैं। 'केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-833

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 19.12.66

बहुत दिनों से 'आप' का कोई पत्र नहीं मिला। आशा है, आप स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

एक कुछ यह है कि मैंने जो लिखा है कि मेरे चेहरे के चारों ओर एक दिव्य तेज सा व्याप्त हो गया है। उस तेज के घेरे में मुझे अक्सर अपने चेहरे के बजाय 'आप' का चेहरा बार-बार झलक उठता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार।

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-834

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 3.2.67

बहुत दिनों के बाद आपको पत्र लिख रही हूँ। इधर मेरी तबियत फिर कुछ गड़बड़ हो गई थी, अब ठीक हूँ। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब न जाने क्या बात है कि 'आप' मेरे सामने रहते हैं, फिर भी 'आप' से मैं लगाव नहीं पाती हूँ। कुछ लगता है H2 point की सैर भी पूरी हो चुकी है, क्योंकि आगे भागने के लिये

मैदान नहीं पाती हूँ, मानों दशा या तबियत में कुछ अजब फड़फड़ाहट सी रहती है। अक्सर अब शरीर में अन्दर से मानों काँप रहा है, ऐसा लगता है, या अंदर कुल शरीर में Vibration फैल जाता है, जिससे शरीर काँप जाता है और ऐसा कि अक्सर मुझे लगता है, भूचाल आ गया, परन्तु होता नहीं है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-835

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 7.3.67

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब न जाने क्या हाल है कि न तो दूरी ही महसूस होती है, न निकटता का ही भास होता है। मानों दोनों एक ही शब्द है, जिनका अर्थ कुछ नहीं है। बस एक ऐसी दृढ़ता एवं स्थिरता निखरती आ रही है कि मानों वह स्वयं 'आप' का ही स्वरूप हो। अनजान या पराया मेरे लिये कोई नहीं है और अपनापन भी कह सकने में न मैं समर्थ हूँ, न मेरा अधिकार ही है। एक दिव्य स्थिरता एवं भरोसा मेरे जीवन में घर कर गया है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-836

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 27.3.67

मेरा एक पत्र 'आपको' मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने कुछ ऐसा लगता है कि मानों मैं Atmosphere हो गई हूँ, राम जाने यह सब क्या है। एक ऐसी चेन (Chain) मैं स्वयं देखती हूँ जो मुझमें से न जाने कहाँ तक चली गई है और जहाँ तक भी वह हो, मैं नहीं जानती, किन्तु वहां तक सब मानों मेरा ही अधिकार है। मानों मेरे 'मालिक' का घर अब मेरा घर है। एक दिव्य स्थिरता, एक अलौकिक भरोसा, एक अनोखी Mastery मेरे में घर कर गई है। जहाँ पर मेरा कुछ नहीं है, किन्तु Mastery मेरी है। मुझे लगता है कि आँखें जो मुझसे दूर कहीं मेरी नहीं है, किन्तु मुझे उनसे पसारा दिखाई पड़ता है। कुछ ऐसा है कि Vision या हालत, एक ही मुझे लगता है। एक धुली हुई, परम शान्त, धीर, गम्भीर, मृदु

हालत ही सब ओर व्याप्त लगती है। ऐसा लगता है मानों बीज से सब कुछ दृश्य उगे और अब केवल बीज के अन्दर ही समाया नजारा है। वह क्या है, कैसा है, मैं नहीं कह सकती हूँ, किन्तु मुझे सब कुछ दीख रहा है, सब कुछ अनुभव हो रहा है। ऐसा है, कि जो मैं कभी एक धीमा सा सेंक सा लिखा करती थी, वह सेंक, जो भी था, वह मेरे में उतर आया है, प्रकट हो गया है, व्याप्त हो गया है। न कुछ भोग है, न भोगता है, न संस्कारों का जाल है। बस कुछ असल में जो होना चाहिये, वही है। ठीक मैं नहीं लिख सकी। बहुत नम्र हालत का, बहुत नाजुक हालत का पसारा है, मैं क्या कहूँ?

'अम्मा' आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-837

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 30.3.67

मेरा एक पत्र 'आपको' मिला होगा। आशा है 'आप' स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने लगता है, अन्दर ही अन्दर कुछ अक्सर टूटता सा अनुभव होता है। मानों कुल शरीर का रोम-रोम अलग-अलग हुआ जा रहा है। मानों कुल नसें, पीठ भर में कुल सिर में अलग-अलग हुई लगता है। कुल शरीर अंदर ही अंदर ऐसा थरथरा उठता है, इतना कि कभी-कभी मुझे भूचाल का ख्याल हो जाता है, कि कहीं वह तो नहीं आ गया है। पीछे सिर में, गर्दन से लगे में मानों कुछ टूटता है, मानों खोखला हो गया है और दर्द भी बराबर रहता है। कुछ यह है कि हालत लगता है कि परम सुस्थिर, दिव्य ही रहती है, मानों नज़ारा (सीन) में बदली होती जाती है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-838

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 30.4.67

बहुत दिनों से आपका कोई समाचार नहीं मिला है। कृपया अपना समाचार शीघ्र दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

आज 'आप' का जन्मोत्सव है। रात न जाने क्या सोते-जागते कुछ ऐसा स्वप्न या क्या देखा कि मानों 'आप' तथा समर्थ श्री लालाजी साहब बैठे हैं और मानों बहुत लोग थे, किन्तु उनकी शक्ल मुझे नहीं एहसास आई, बस मानों भीड़ है और मैं 'आप' के सामने बैठी हूँ। 'आपने' मुझसे

पूछा कि परम संत गति के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है, कुछ बता सकती हो? मैंने 'आप' के मुख की ओर देखा और कहा कि अनुभव से तो मैं नहीं जानती, किन्तु मैं 'आपको' बताऊंगी जरूर। मैं ध्यान में हो गई हूँ कि मानों 'लाला' जी की आवाज़ सुनकर मैंने आँखें खोली कि अपनी हालत का जवाब दे दो और मैंने जो हालत अपनी देखी मानों उसके चारों ओर पवित्रता की महक़ छिटकी हुई है। मानों 'आपकी तवज्जोह मेरी हालत बन गई है। उसमें स्वयं कोई चीज़ नहीं है, केवल तवज्जोह है, किन्तु उसके द्वारा कुल हालतें हमारे में पैदा होती हैं। 'परम संत गति' में मैं कह रही हूँ कि सम-हालत तथा Universal Love की हालत पर मानों Command होता है और मैं जो अनुभव कर रही हूँ, वह कुल में लिख नहीं पा रही हूँ।

पीछे कुल सिर में, गर्दन से ऊपर तथा कुल पीठ में कुछ टूट-फूट सी बनी रहती है और कुल शरीर का कण-कण तक मानों परम शान्ति, परम स्थिर बन चुका है और एक दृढ़ता घर कर गई है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कह रही हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-839

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 8.5.67

मैं 21 मई की शाम को चलकर 22 को सुबह दिल्ली पहुँच रहा हूँ और 23 मई की शाम को दक्षिण भारत के लिये रवाना हो रहा हूँ।

6 मई को आश्रम बनने के लिये 10,000 (दस हजार रूपये) की ज़मीन खरीद ली गई है। जिन लोगों ने रूपये का वादा किया है, उसमें से बहुतों का अभी नहीं आया है। रूपया सिर्फ 5,500 था और 5,500 रूपया और मदों का, जो हमारे पास जमा था, उसमें से देना पड़ा। तुम्हारे में कंपन, शक्ति का भराव है।

बच्चों को दुआ।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-840

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 15.5.67

कृपा-पत्र 'आपका' मिला। समाचार पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

लगता है शरीर का कण-कण उदास रूप हो गया है। सारे संसार के कण-कण में उदासी ही व्याप्त है। अब कहीं ज़ी नहीं लगता है। तबियत ऊबी रहती है। हर कण, हर क्षण, हर पल उदासीनता

है। भीतर-बाहर केवल उदासीन-अवस्था ऐसी व्याप्त है, मानों जब बहारों की उत्पत्ति नहीं हुई थी, वही हालत व्याप्त है।

तबियत बहुत उदास सी रहती है। मानों उदासी के सागर में डूबी रहती है। क्योंकि जब ध्यान या ख़्याल आता है, तब लगता है कि मानों मैंने उदासीनता को सागर में से मुँह उठाकर देखा है और फिर भूल जाती हूँ।

यह सब कृपा तो बस केवल 'आपकी' ही है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-841

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 24.7.67

आशा है आप कुशल पूर्वक होंगे। यहाँ भी सभी लोग कुशल पूर्वक हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

तारीख 10.7.67 को आपने कृपा करके मुझे H_2 point की सैर पूरी कर I_2 point पर डाल दिया। आज पता लगा कि याद में हृदय शामिल रहता है और ध्यान में वृत्ति उधर घूमी रहती है। हृदय में उभरी कुरेदना ही याद का रूप है और वृत्तियों का ध्यान उधर ही लगा रहे, यही ध्यान है। मेरी दशा तो अब सुथरी है और ऐसा तम है कि जो उजेले को मात दिये है। अब दशा शुद्धता एवं उजेले एवं अलौकिक से भी कहीं परे व अच्छी है, किन्तु क्या है, कैसी है, कहना कठिन है। बस ऐसे ही कहा जा सकता है कि यह नहीं, वैसी नहीं। अब हालत को सत्य दशा भी नहीं कह सकती, क्योंकि वह नीचे मुँह करने पर दिखाई पड़ती है और वहाँ एक सुथरा प्रकाश है और ऊपर, जहाँ मैं देख रही हूँ जहाँ मुझे पैरना है, वहाँ एक धूमिल सा व्याप्त है और कहीं अच्छा है, जो कहा नहीं जा सकता।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-842

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 2.10.67

तुम्हारा पत्र मिल गया। तुमने अपनी हालत का हाल ठीक ही लिखा है। मैं देख रहा हूँ कि क्या करना चाहिये, समझ में कुछ है, कुछ आ जायेगा। टन्डन आजकल बहुत परेशान

हैं। तुम्हारे कुछ करने से उन्हें फ़ायदा तो हुआ है और संस्कार की गुत्थी साफ़ हो गई। मुझे आज ऐसा प्रतीत होता है कि इसका फ़ायदा और बढ़ेगा और कष्ट में ईश्वर ने चाहा कमी होगी।

हैदराबाद के कुछ लोग 9-10 को आ रहे हैं। आ सकती हो तो तुम भी आ जाना।

तुम सबको दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-843

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 25.10.67

तुम्हारा पत्र मिल गया- बहुत खुशी है कि लालाजी साहब ने तुम्हें आध्यात्मिक Research के लिये छाँटा है। जहाँ तक हो सकता है तुम हर हालत को बहुत अच्छी तरह लिखती हो-यद्यपि ऊँची हालत पर जाने पर हालत का लिखना बहुत मुश्किल होता है क्योंकि शब्द नहीं मिलते हैं। मैंने तुम्हें पहले पत्र में लिखा था कि मुझे क्या करना चाहिये, समझ में कुछ है और कुछ आ जायेगा तो मैंने तुम्हें J_2 point पर खींच दिया है ईश्वर ने चाहा तो इस हालत की खुश-खबरी भी तुम दोगी। न जाने क्यों तुम्हारी हालत देखकर मैं बाग बाग हो जाता हूँ। लालाजी तुम्हें बरक़त दें- तुम्हारी तन्दुरुस्ती भी ठीक रहना चाहिये।

तुम सबको दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-844

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 5.12.67

कृपा-पत्र 'आपका' मिल गया था। मैं ही बहुत दिनों से 'आप' को पत्र नहीं लिख सकी थी। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

तारीख 25.10.67 को आपने कृपा करके मुझे J_2 point पर खींच दिया। आपने यह भी बताया कि वहाँ एक Arc ( ) अर्ध-चन्द्र की तरह मिला, वह एकदम से फटा और उसमें से एकदम से बहुत प्रकाश फैला। 'आप' ने यह भी बताया था कि 'आप' का यह Research पूरा हो गया कि प्रपन्नावस्था, प्रभु-अवस्था तथा प्रपन्न-प्रभु अवस्था के बाद 63 points और चलना है फिर K_2 point के बाद ब्रह्म-रन्ध्र पड़ता है, उससे यह सँभालकर कि प्राण न छूट जाये, एकदम से आगे खींच देते हैं। सैर नहीं कराते हैं। फिर Point L_2 के बाद Centre Region है। 'आपने' कृपा करके मुझे Centre Region पर खींच दिया, हजार-हजार धन्यवाद है। आज ऐसा लगा कि मानों हृदय का बोझ सा हट गया। वह Control वह Check जो मुझे अपने Point पर खींचे

रहता था, कूद-कूद कर चलने में रोके रहता था, आज हटकर हृदय हल्का हो गया है। खामोश जगह में खामोश चाल है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-845

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 27.12.63

मेरा एक पत्र आपको मिला होगा। मेरी तबियत अब बिल्कुल ठीक है। बस थोड़ी सी कमज़ोरी रह गई है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसा लगता है कि भीतर-बाहर, कुल शरीर तक का कण-कण तक चुप हो गया है। लगता है, मानों राख भी ठंढ़ी हो गई है। गुनगुना सा सेंक भी मानों अब ठंढा पड़ गया है। कुछ ऐसा है कि इस चुप दशा से जुड़ते ही मानों मैं बेकार होने लगती हूँ, कुल Silent हो जाती हूँ। आज बड़ी मुश्किल से हालत से अलग ही होकर कुछ लिख सकी हूँ।

मुझे न जाने कुछ ऐसा लगता है कि मुझमें Devotion (डूबने) की Power नहीं रही। अब तो एक अलौकिक Devotion जो स्वत: बह रहा है, उसमें मैं प्रवेश पा गई हूँ। न जाने कुछ यह हो गया है कि वह Chain जो सदैव दो को एक बनाये रखती थी, वह गलकर मुझमें ही समा गई है और अब कुछ एक होते हुए भी मैं अलौकिक Devotion के बहाव (Swimming) में प्रवेश कर गई हूँ। एक वह हालत जो अब तक बराबर Level में चली आई है कि जिसके कारण आध्यात्मिक Conditions मुझमें उतरती थी, अब वह भी गलकर मेरे में ही समा गई है। अब कहीं कोई कारण नहीं रह गया है। सब क्या हो रहा है मैं नहीं जानती हूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-846

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 31.12.67

मेरा एकपत्र आपको मिला होगा। आशा है आप स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि स्वयं अब साम्य-गति नहीं है परन्तु साम्य-गति मानों यहीं से प्रवाहित होती है। कुछ हृदय में ऐसी दशा उतर रही है, जो स्वयं निरा आनन्द होते हुए भी हृदय को या अंतर ही अंतर में भा रही है और हृदय उसे पकड़ता जा रहा है। रात कुछ जागते, कुछ सोते में ऐसा अनुग्रह आप का देखा कि मानों आपने मेरे हाथ में कुछ दिया और माथे पर हाथ फेर

दिया। उसके बाद कहा कि सुनो, 'लालाजी' कुछ कह रहे हैं। बस उसके एक सेकेण्ड आँखें बन्द कर आप न जाने अन्तर में क्या किया कि मुझे लगा कि साम्यावस्था जो कुल मेरे कण-कण में समायी हुई थी, मानों एकदम सब घुल गई और मेरे कुल अंतर-बाहर से कुछ दिव्य ही कहूँगी, ऐसी झलक झलकने लगी, जिससे आज मेरी दशा अंतर ही अंतर बहुत अच्छी लगती जा रही है। अंतर ही अंतर में खुश मैं नहीं, बल्कि मेरा ज़र्रा-ज़र्रा मानों उस दिव्य खुशी में प्रफुल्लित हो उठा है। न जाने अब क्या हो गया है कि बस स्वयं पूजा शुरु करते ही, आँखें बन्द करते ही चाहे आप ही करावें, बस जाने कैसी तबियत हो जाती है कि लगता है, बस बड़ी जोर की मेरी चीख निकलने वाली है और आँखें खुलने वाली हैं और सत्संग चाहे जितनी देर भी कराऊँ तो कुछ नहीं होता। हाँ कुछ शारीरिक कमजोरी के कारण दिल पर Pressure एवं हल्का हल्का सा दर्द भी रहने लगता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-847

प्रिय बेटी कस्तूरी — चन्नापटना
आशीर्वाद! — 1.1.68

आज मैं चन्नापटना आ गया। सेलम में कुछ आदमी बढ़े। मदुरई में करीब बीस आदमी ने शुरू किया। मेरी तबियत ठीक है। मुझे काम के लिये Energy लालाजी से मिलती रहती है और तुम भी देती हो। इसलिये तुम्हारे देने की जरूरत नहीं। इसलिये कि Centre Region आदमी की आखिरी पहुंच है। वहाँ पर आदमी की Power बहुत बढ़ जाती है और वहाँ थोड़ी सी चीज़ भी बहुत हो जाती है। तुम्हें अन्दाज़ नहीं लग सकेगा। दिल पर आज ही भारीपन मालूम हुआ। इसलिये कमज़ोर होने की वजह से असर ज्यादा हो जाता है।

चि० पारसारथी ने इधर बहुत अच्छा काम किया है। ईश्वर उन्हें खुश रखें।

सब बच्चों को दुआ।

शुभ ि न्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-848

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 5.1.68

कृपा-पत्र आप का मिला। पढ़कर समाचार मालूम हुए। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब मैं देखती हूँ कि तबियत Concentration से बिल्कुल अलग रहना चाहती है। कुछ ऐसा देख रही हूँ कि लगकर थोड़ा सा पढ़ूं और या स्वयं लिख जाऊँ तो कुछ नहीं,

किन्तु लिखने का प्रयत्न करूँ तो लगता है तबियत मानों कैद होकर बिल्कुल छटपटा उठती है। मैं बिल्कुल घबरा जाती हूँ। ईश्वर-प्राप्ति का लक्ष्य रखकर चली, किन्तु हाल यह है कि तबियत अब ईश्वर के नाम से घबड़ा उठती है। अब हालत का ठहराव समाप्त होकर सम पर आ गई है। जहाँ जाती हूँ फ़ना नहीं, बस, अब बक़ा बका ही बक़ा में पैरती हूँ। अब इस सम में ही समा रही हूँ, बक़ा में ही पैठ रही हूँ। पैठकर जब ऊपर आती हूँ, तब बक़ा ही पाती हूँ, यानि सम या बका में पैर कर सम या बका ही पाती हूँ। अब कुछ ऐसी दशा देख रही हूँ कि न कुछ दशा में जुड़ता है न घटता है। अब प्लस-माइनस कुछ नहीं है। जिस हालत में पैरती हूँ, बस वहीं सम पर आ जाती हूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-849

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 9.1.68

मेरा एक पत्र आप को मिला होगा। यहाँ सभी लोग कुशल से हैं। आशा है आप भी कुशल पूर्वक होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

कल एक नई तवज्जोह का पार्थसारथी, सुलोचना बहिन व भाई राजगोपालाचारी जी पर बड़ा अच्छा प्रभाव देखा और वह अब भी प्रवाहित है। यानी System का जो Mind Centre है, उस पर ही तवज्जोह से Cleaning करके तथा फिर उस पर ही तवज्जोह दी। लगता है, इसका Result यह होगा कि संस्कार बनना जल्दी बन्द होंगे और एक Spirituality का नशा सा रहने लगता है, किन्तु साथ में उत्साह भी। हल्कापन तो इतना हो जाता है कि मानों तबियत उड़ना चाहती है। कुल शरीर फूल की तरह हल्का हो जाता है। यही मैं आपसे पूछ रही हूँ, कि मैं कहाँ तक ठीक हूँ।

न जाने कुछ ऐसा है कि दाहिने कंधे से नीचे पीठ की चौड़ी हड्डी में बड़ी फड़कन एवं बड़ा Vibration हर समय रहता है। विशेष कर पूजा करते व करवाते समय रहता है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-850

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 26.1.68

विष्णु से आप का समाचार मिला। आप स्वस्थ हैं जानकर खुशी हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

हालत क्या है, लिखना कठिन है। हल्की से हल्की कहने में भी उसे बोझ लग जाता है। सादा

के ऊपर और क्या सादगी लादी जा सकती है। हालत ऐसी है कि हल्की कह लें, किन्तु उसमें हल्कापन नहीं कह सकते हैं। सादा है, किन्तु उसे सादगी छू नहीं पाती है। वह एक है, जो है सो, उसे दूसरा कुछ नहीं कहा जा सकता।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-851

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 13.2.68

आशा है 'आप' कुशल पूर्वक होंगे। मेरी तबियत भी अब ठीक है। स्वास्थ्य-लाभ भी धीरे-धीरे हो रहा है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

आपने मुझे बताया कि मेरी गति पहले Ring में है और मैं उसमें बढ़ रही हूँ। वैसे मेरी हालत तो यह है कि मैं तो आत्मिक-गतियों के स्पर्श से भी अछूती ही चलती हूँ। केवल दृष्टा-मात्र हुई मैं सब देख रही हूँ।

कुछ ऐसा है कि आध्यात्मिक-गतियों के आनन्द की मुझे शारीरिक सुख-दुख की भाँति मानों अछूता सा ही बहुत दूर से कुछ अनुभूति में आ पाता है। जिसप्रकार सांसारिक रहनी या गति मुझसे अछूती ही रहती है, वैसे ही आध्यात्मिकता से अछूता ही रखता हुआ 'मालिक' मुझे ले गये हैं। कुछ ऐसा लगता है कि भक्ति-ज्ञान तथा आध्यात्मिकता के Plane से मानों बिल्कुल सम्बन्ध टूटकर मैं Free हो गई हूँ।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-852

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 19.2.68

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब मैं केवल एक ख़्याल ही अंतर में डाले रहती हूँ कि 'मालिक' में लय हूँ या सम्बन्धित हूँ। केवल ख्याल से ही मैं उन्हें छूने का प्रिय आनन्द सूँघ पाती हूँ। वैसे आनन्द को भी अब मैं कहाँ छू पाती हूँ। न जाने क्या है कि लिखने व पढ़ने में कैसे भी जरा concentration होते ही तबियत घबरा कर छटपटा उठती है। मानों बजाय अंतर में जाने के बाहर भागना चाहती हूँ। अपनी आत्मिक दशा को भी भीतर घुसकर उसमें पैठकर मैं नहीं देखना चाहती, बल्कि दूर से ही देखती हूँ।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। केसर आपको प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-853

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी मोदी नगर
सादर प्रणाम! 6.3.68

आशा है 'आप' आराम से पहुँच गये होंगे। यहाँ सब अच्छी तरह से हैं। आशा है,वहाँ भी सब आराम से होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

हालत यह है कि लगता है कि Reality का सूर्य अब मुझमें अस्त हो चुका है। कहीं से कोई प्रकाश की झलक नहीं मिलती है। सर्वत्र प्रकाश का अभाव है, किन्तु अँधेरा भी कह नहीं सकती हूँ। एक आंतरिक-वेदना बहुत पीड़ित करती है। क्या लाऊँ, कहाँ जाऊँ, कहाँ से लाऊँ, कुछ भी तो पता नहीं है, परन्तु मन व्यथित है। अजीब दशा है कि योग सहा नहीं जाता है और वियोग, जो योग होने में ही है, वह तड़पा देता है। किन्तु लगता है कि वियोग मुझे नहीं खा पाता है, वरन् मैं ही उसे खाये जाती हूँ। तड़प खुद मुझे नहीं तड़पा पाती है, वरन् मैं ही कुछ ऐसी हो गई हूँ कि तड़प खुद मुझमें आकर तड़प उठती है। मैं खुद तृषित हूँ या तृषा ही मुझे पी जाने को तृषित है, अब कुछ समझ में नहीं आता है। न कोई ग्रन्थि है, न आवरण है। सामने पावन पवित्रता साकार होकर मानों मैदान बनकर व्याप्त है, किन्तु मैं ही शीघ्र भाग कर उसे पी जाऊँ, ऐसा जी भर कर नहीं हो पा रहा है। मुझे संदेह है कि मैं जो कहती हूँ, उसे भरना चाहती हूँ, परन्तु वह 'जी', जिसे मैं भरना चाहती हूँ, वह कहीं हो ही नहीं। मेरी कोरी मृग तृष्णा ही हो, यह तो 'आप' ही जानें।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-854

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी मोदी नगर
सादर प्रणाम! 23.368

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं। आशा है 'आप' भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

सारा ही हृदय या अंतर घायल पड़ा हुआ है। सद्गुरु यदि न मिले तो विरहावस्था कभी कष्ट नहीं दे सकती है। आनन्द भी है, विरह भी है, जाने क्या बात है।

करीब 5-6 दिन से मुझे चाहे सामने ख्याल करूँ आप का चाहे अंतर में ख्याल आवे, मुझे आपके स्पर्श का आनन्द प्रत्यक्ष अनुभव होता है। अजीब बात है कि अपना स्पर्श तो अनुभव नहीं

होता है और आप के स्पर्श का आनन्द अनुभव हो रहा है, यह आप की ही कृपा है।

लगता है, मेरी सारी खुशी, सारी Activity सब कुछ लुट गया। मैं जड़ बनी सब देखती भर हूँ। अब हालत के लिये लगता है एक नया पैरा खुला पड़ा है, मानों कुल कोई किताब सी खुली पड़ी है, लेकिन देखे कौन, पढ़े कौन। मैं तो जड़वत् निस्तब्ध ठगी सी खड़ी हूँ,जैसे सब कुछ, कुल भीतर-बाहर पैरालाइज्ड हो गया है। लगता है मानों कुल 'मालिक' के दिये दिलाये पर में पानी फेर कर बैठी हूँ। कौन मुँह लेकर 'मालिक' के पास जाऊँ? मैं तो लुट गई हूँ। न जाने क्यों अब आजकल ऐसा हो गया है कि लगता है कि मानों हर एक से मैं डरती हूँ। न जाने क्या हाल है कि डरती भी हूँ और बेफिक्र भी रहती हूँ। लगता है मुझे यहाँ की दुनिया में कुछ दिखाई नहीं पड़ता है, किन्तु अपनी दुनिया में मुझे बिना प्रकाश के भी सब दिखाई पड़ता है और अँधेरे के बिना भी प्रकाश है नहीं, कहीं भी।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-855

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 22.4.68

बहुत दिनों के बाद आप को पत्र लिख रही हूँ। कारण इधर मेरी तबियत फिर कुछ खराब हो गई थी,अब ठीक हूँ। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने कुछ यह दशा है कि मेरा कुल शरीर, मन सभी कुछ बिल्कुल जड़ हो गया है। शरीर हिलता है, डोलता है, काम करता है और मैं कहती हूँ। मैं कर रही हूँ, किन्तु मैं कितना भी करूँ, या कहूँ, केवल जड़ ही हो गई हूँ, या पत्थर की तरह कह लें। अब जिस वजह से हालत होती थी, वह समानान्तर रेखा भी नहीं मालूम पड़ती। बस, जो है, वहाँ मैं बिना किसी ओर देखे-सुने भिदती ही चली जाती हूँ। पैरती ही चली जाती हूँ। बे रोक टोक भिदती ही जा रही हूँ। विचारों से मेरा सम्बन्ध नहीं जुड़ पाता। विचार मानों मेरी हालत से नीचे रहते हैं।

मैंने स्वप्न देखा कि तमाम लोग, जिन्हें मैंने देखा नहीं है, उनमें से एक ने पूछा कि Saint गति की हालत अथवा Definition क्या है? मैंने उत्तर दिया कि यदि कोई उसके कण-कण में पढ़े तो साम्य गति ही पायेगा। इतना कहने के बाद लगा मेरे अंतर से एक आवाज़ आई, वह 'आप' की थी, उस आवाज़ के साथ ही लगा, मानों मेरे कुल में से वह Saint गति खिंच गई है और उसकी जगह एक अद्‌भुत गति मानों मेरे में झर-झर कर उतर रही है और वही अब मेरे में समा रही है। अब भी झर रही है। मेरे अन्दर उतर रही है। अब कण-कण में एक उदास हालत, पवित्र उदास हालत ही फैली है। मैं ठगी सी आश्चर्य में पड़ी देख रही हूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-856

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी मोदी नगर
सादर प्रणाम! 30.4.68

मेरा एक पत्र आपको मिला होगा। आशा है,आप कुशल पूर्वक और स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्या है कि कोई कशिश या आकर्षण मुझे इतनी तेजी से अपनी ओर खींच रहा है और मैं उतनी ही तेजी से उसमें मिलना चाहती हूँ, तो मानों प्राण निकलने लगते हैं और रहा भी जाता नहीं है। कौन सी अतिशय आनन्दप्रद दशा है कि उसमें रमाव मिलते ही जहाँ जरा तेजी आई कि फिर ऐसी हालत होने लगती है, जैसे दमे के मरीज की, कि जब कपड़ा, ब्लाउज वगैरह फाड़कर बेतहाशा हो जाने को हाथ तक कभी उठ जाते हैं, परन्तु 'मालिक' का धन्यवाद है कि कोई शक्ति तुरंत ही मुझे उसमें मिलते हुए भी मिलने से खींच लेती है। सच तो यह है कि मुझे मानों पल-पल भारी पड़ रहा है, किन्तु क्यों मैं यह नहीं जानती हूँ। मुझे तो बस भाग चलना है, अथाह मैदान में समा जाना है। बूँद में समुद्र सोख गया है और बूँद बेचैन है कि कहाँ है प्रियतम। मैंने यह देखी कि एक Check सा बराबर मेरे पीछे अब तक लगा आया है और अब भी है, जबकि घर सामने है और घुसने नहीं देता है। खैर, मैं तो 'मालिक' को ही देख रही हूँ।

लगता है कि कभी समुद्र बूँद में समाया था, किन्तु अब केवल बूँद ही व्याप्त है। व्याप्त तो है, यह सच है, किन्तु बूँद का पता नहीं मिलता। ऐसी दशा है कि जैसे बिजली (Current) ने मुझे पकड़ लिया है और अब अलग हो सकती नहीं हूँ, हाँ, बेहोशी सी, खोये से में कभी होश आता है, तो तड़पन ही तड़पन है, जो यदि मैं बेहोश न रहूँ तो बर्दाश्त के बाहर की चीज़ है। मैं चाहती हूँ कि जो हालत है, उसमें रहूँ, होश कभी न आये। घर सामने है, घुस पड़ना चाहती हूँ, किन्तु कोई मुझे घुसने नहीं देता है। बाहर की ओर रोके हुए है, यद्यपि नज़ारा मुझे घर का मिल रहा है। अपना घर तो अपना ही है। कभी चोट या ठोकर लगने पर जब होश आता है, तो वह होश भी Pure नहीं होता है। यदि Pure होश आ जावे तो, वह तड़पन जो सामने रहती है, प्राण ही ले ले। ऐसा लगता है कि कभी-कभी मानों कुछ Shock सा मुझे लगता है, जो मेरे कण-कण में Divinity को चैतन्य करता है। Shocks मुझे अक्सर लगते ही रहते हैं। यह Shocks ही साम्य एवं परम महाशक्ति में खो जाने से हमें उछालते हैं। घर में डूब जाने से हमें केवल उछाल देते हैं, दूर नहीं फैलने देते है, जिससे हम अपने घर की चीज़ देखते रहें और घर में घुस भी न पायें। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-857

प्रिय बेटी कस्तूरी शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! 28.6.68

तुम्हारा पत्र मिला-सुनते ही ऐसा लगा कि मानों हालते Bliss मेरे सामने आ गई। लालाजी साहब के करम का शुक्रिया कैसे अदा करूँ कि उन्होंने तुम्हें हालते- Bliss की निहायत ऊँची

हालत को बख़्श दिया है। वाह, वाह क्या लिखा है तुमने 'कि कोई कशिश या आकर्षण मुझे जितनी तेज़ी से अपनी ओर खींच रहा है और मैं उतनी ही तेज़ी से उसमें मिलना चाहती हूँ तो मानों प्राण निकलने लगते हैं। जब हालत काबू से बाहर होने लगे तो पूजा की कोच के सामने बैठ जाना। इस हालत पर सीखने वाले को सिखाने वाले को पास ही रहना चाहिये। यह तो लालाजी साहब की कृपा है कि हालत के बेतहाशा होने से पहले उनकी शक्ति तुम्हें सँभाल लेती है। क्या तारीफ करूँ तुम्हारी हालत की, तुमने लिखा है कि बूँद में समुद्र सोख गया है और बूँद बेचैन है कि कहाँ है प्रियतम। अब तो हर समय तुम्हारी हालत पर निगाह रखना पड़ती है। सच तो यह है कि Current ने तुम्हें नहीं पकड़ा है बल्कि Divine Power तुम्हारे अंदर प्रवेश पाती जा रही है। ईश्वर ने चाहा तो Centre Region में Swimming की भी शुरुआत पाओगी।

तुम सबको दुआ।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-858

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 8.8.68

बहुत दिनों के बाद आप को पत्र लिख रही हूँ। मेरी तबियत अब ठीक हो गई है। 'आप' चिन्ता न करें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि लगता है कि मानों एक अँधेरी गुफ़ा सी चली गई है, जिसमें पैठती जाती हूँ, किन्तु कहीं कोई ओर-छोर अन्दाज़ में नहीं आ पाता है। कुछ प्रकाश नहीं है, फिर भी सब कुछ दिखलाई पड़ता है। लगता है, नया पैरा सामने खुला और फैला पड़ा है और मुझे सब कुछ दिखलाई पड़ रहा है। कुछ ऐसी तबियत फड़फड़ाती है कि सब कुछ सामने का जल्दी से जल्दी अपने में समा लूँ। लगता है वास्तविक Meditation खुला और अब फैला है कि जहाँ विचारों की कोई श्रृंखला नहीं है, यदि स्वत: ही न उठाये जायें।

कुछ ऐसा है कि चल-चलाव व पैरना तो है, किन्तु चलने या पैरने का पता नहीं चलता है। हाँ, एक अन्दाज़ा सा है। लगता है आत्मिक पसारा सा है। किन्तु आत्मिक हालत कुछ भी नहीं है। आत्मा से मानों निस्बत नहीं है। लगता है मानों खेमा तो कहीं गड़ा हुआ है, बस टटोलते हुए पहुँच जाना है। अब आकर्षण मानों कहीं नहीं है, न चलने वाले न बुलाने वाले में। कुल आकर्षण ही समाप्त हो गया है।

इधर न जाने कुछ ऐसा लगता है कि आत्मा गलकर सब बिखर गई है और कण-कण में मानों आत्मा दिखाई पड़ती है। मैं जिधर भी देखती हूँ अपना घर ही मानों फैला हुआ है, ऐसा ही लगता है, किन्तु एक बात और पाई है कि मेरी निस्बत या सम्बन्ध किसी से भी नहीं है। विचारों की कोई लड़ी नहीं है, यदि वे स्वयं उठाये न जायें। एक कुछ यह बात है कि अब कैसी सैर या हालत है, कि घर सामने भले ही फैला पड़ा है, किन्तु मैं घर में घुस नहीं पाती हूँ, परन्तु ऐसा अवश्य कि घर में मैं न पैठ पाऊँ, किन्तु मैं कहीं घुसी हुई हूँ, जहाँ मुझे जरा

भी फुर्सत नहीं है ऐसा लगता है और busy भी नहीं हूँ। यह अब न जाने क्या दशा है मेरी। एक कुछ ऐसा लगता है, मानों एक नशा सा मुझमें हर समय समाया रहता है। मेरे भीतर-बाहर, कण-कण, सब बिल्कुल स्थिर ही नहीं, वरन् जड़ हो गया है, ऐसा लगता है। बस एक बहुत विनम्र सी, मुलायम सी हालत, साथ लगी चलती है, बस, वही जड़ नहीं है, किन्तु वह मेरी दशा नहीं है, मानों Natural सी चल रही है। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-859

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर

सादर प्रणाम! — 18.9.68

बहुत दिनों से आप का कोई समाचार नहीं मिला है। सबको चिन्ता लगी है। कृपया अपना समाचार शीघ्र दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी हालत इधर ऐसी है, जैसे तमाम घाव पर कोई बहुत आरामदेह मरहम लगा दे किन्तु यहाँ घाव नहीं है, बल्कि मरहम ही मरहम है, यही अंतर है। एक कुछ यह है कि न जाने क्यों हालत में मिले जुले रहने का अन्दाज़ ज्यादा देर टिक जाने से तबियत घबरा उठती है, परन्तु लगता इतना अच्छा है कि तबियत भागती उधर देखने को ही है।

इधर न जाने क्यों स्वप्न में रात भर मानों आपसे बातें होती है, किन्तु·स्वप्न इतनी Dim हालत में रहते हैं कि जैसे स्वप्न का वहम हो। उसमें मैं आपको व अपने को देख नहीं पाती हूँ, बल्कि एक ख्याल या अन्दाज़ सा रहता है किन्तु मैं आपके पास थी, यह वहम रहता है। परन्तु इसे आप सत्य का वहम कह सकते हैं। न जाने क्यों कुछ ऐसा हो गया है कि वैसे मुझमें न Intelligence है, न प्रेम न कुछ। न अनुभव है न अनुमान है। यहाँ तक कि 'मालिक' और अपना सम्बन्ध कि 'मालिक', 'मालिक' है मैं केवल उनके चरणों में एक तिनका हूँ, यह भी सम्बन्ध कुछ ठहरता ही नहीं है। कोई भाव या भावना कभी नहीं आती है, किन्तु मैं देखती हूँ कि बोलते समय या कभी, समय पर कोई चीज़ निकलती है, जो इन सब चीज़ों को स्मरण में ताजा कर जाती है। कुछ नहीं तक की याद दिला जाती है, परन्तु बात समाप्त होते ही, समय बीतते ही मैं फिर ज्यों कि त्यों रह जाती हूँ। मैं नहीं जानती कि मैं किस राह की राही हूँ। कहीं राह न राहगीर, न रास्ता बताने वाला, कुछ नजर नहीं आता है, किन्तु चली जा रही हूँ। बस अनदेखे में, अनजाने में, कभी सिर पर, कभी कन्धों पर एक हाथ रखा लगता है, जिसकी याद से मैं, विभोर हो उठती हूँ। उस परम प्रिय लगने वाले हाथ में से स्नेह का रस झरता है, जो पान करके मैं भूल जाती हूँ किन्तु मैं उस रस के झरते हुए भी, उस समय भी खुश्क ही रह जाती हूँ। बातों का उत्तर देते हुए भी मुझे यह पता नहीं रहता कि उत्तर क्या दे रही हूँ, न बाद में लगता है, किन्तु सबके कहने से साबित है कि उत्तर मैं देती हूँ। अपने सहज मार्ग के विषय में मैं समझाती हूँ, नहीं तो मुझे कुछ मालूम नहीं पड़ता। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-860

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी मोदीनगर

सादर प्रणाम! 12.10.68

मेरा एक पत्र आपको मिला होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं, आशा है, 'आप' सब भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि मेरी दशा अच्छी है, यह मैं नहीं जानती ही कहना चाहिये, क्योंकि दोनों बात इसलिये कहनी पड़ती है कि एक ओर तो पाती हूँ, इन्तहाई या असीम ठहराव या असीम स्थायित्व की हालत है और दूसरी ओर निगाह असीम हालत में बिना किसी ओर देखे हुए, बिना गति का अनुमान हुए भी बराबर चलती जा रही हूँ किन्तु, अब अच्छा कुछ नहीं लगता है। सब कुछ देने वाला है। यह सब तो केवल मन के बहलाव की सी दशा लगती है, जो मुझे संतोष नहीं दे पाती है। कभी असीम Power का अन्दाज़ सामने आता है, कभी कुछ Vision के सदृश लगता है, परन्तु मेरा सम्बन्ध तो किसी से नहीं है। अब तक मैं केवल एक तमाशे की तरह सब देखती रही हूँ। किन्तु मैं देखने वाली भी कैसे हो सकती हूँ, जबकि मेरा सम्बन्ध न दृष्टि से है, न तमाशे से है। न अंतर से है, न बाहर से है। मैं तो संसार की एक साधारण बालिका की भाँति हूँ, जिसमें कुछ भी नहीं है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-861

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी मोदी नगर

सादर प्रणाम! 25.12.68

आज लगभग दो महीनों के बाद आप को पत्र लिख रही हूँ। इस देरी के लिये 'आप' कृपया इस बिटिया को क्षमा कर दे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि जिसका कोई कारण नहीं। कारण नहीं, तो वह चीज़ ही क्या हो सकती है। इसे होने या न होने का वहम कह सकते हैं और वहम तो किसी चीज़ का हो सकता है, किन्तु मैं तो देख रही हूँ कि जब कोई चीज़ ही नहीं है, तो फिर वहम भी कैसे कहा जा सकता है। क्या Stage है, क्या State है, कुछ भी तो नहीं है, फिर कहा ही क्या जा सकता है। दशा नहीं है तो मन बहलाव भी क्या व कैसे कहा जा सकता है किन्तु बस तबियत कहीं टिकी हुई है। हालत क्या लिखूँ? एक ओर तो इन्तहाई ठहराव व्याप्त हो गया है, ठहर गया है। दूसरी ओर मुझे चैन नहीं है। चल क्या रही हूँ, मानों कोई मुझे अपने में खींच रहा है। किन्तु खिंचन नहीं है। चल बराबर रही हूँ, परन्तु गति कहीं कुछ भी नहीं है। समय सपाट हो गया है। इसका कोई बन्धन नहीं है, क्योंकि समय, समय नहीं रह गया है। कहीं कठिनाई नहीं है। कहीं सरलता नहीं है। कहीं जटिलता नहीं है और कहीं सहजता नहीं है। कुछ भी तो नहीं है, किन्तु फिर भी कुछ है, मानना पड़ता है और मेरे मानने न मानने से क्या होता है, जो है, सो है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

ात्र संख्या-862

ारम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
ादर प्रणाम! — 1.1.69

आशा है, मेरा एक पत्र 'आपको' मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, ो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि लगता है, कि जो कुछ भी लय-अवस्था कमाई थी, वह सब कहीं चली ाई और मैं ज्यों की त्यों खड़ी रह गई हूँ। इतनी सादी हालत है, जिसका अन्दाज़ में लाना कठिन :, या यों कह लीजिये कि केवल एक हालत ही हालत है। अन्दाज़ उसमें कुछ भद्दापन (या ्हरापन) लगा देता है, जो मुझे पसन्द नहीं है। अब उल्टा हो गया है। लय-अवस्था को सोचती ;, तो लगता है बिल्कुल खुश्क़ चीज़ है मेरे लिये। उसका ख्याल या कुछ भी, उस असल या एक ालत से, जो है, उसे छू नहीं पाता है। अब तो एक हालत है। हालत, हालत है। उसके विषय ं कुछ कहा नहीं जा सकता है। उसके विषय में कुछ कहने से जो दोहरी निगाह लानी पड़ती :, वह सहज के बाहर की चीज़ है। उसका अन्दाज़ भी सहन नहीं होता है। बल्कि यों कहिये के उसका अन्दाज़ उससे मानों मुझे अलहदा करना चाहता है और वह, यानी हालत प्राणों के समान ी आवश्यक है। कहने के लिये यह कह सकती हूँ कि जैसे पूजा के पहले थी वही अब कुल ं समा गया है या यों कह लें कि जो ईश्वर की याद या उसका ख्याल आने से पहले हालत हो ाकती है, वही कुल में समा गई है। लगता है, अँधेरे में जा रही हूँ, किन्तु टटोलना नहीं पड़ता :। अंधेरे में जा रही हूँ, किन्तु अँधेरा नहीं कहा जाता है। न जाने क्या अब मुझे लगता है कि मानों आत्मा का भी एक आवरण था, जो साफ़ होकर बिखर गया है और आत्मा शब्द का प्रयोग करने ं भी मुझे कुछ कष्ट होता है, क्योंकि यह मुझे मेरी असल हालत से खींचता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

ात्र संख्या-863

ारम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
ादर प्रणाम! — 8.1.69

आशा है, आप शाहजहाँपुर पहुँच गये होंगे। हम सब अवश्य ही भाग्यशाली हैं कि आप हम ाभी पर इतनी मेहरबानी करते हैं 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि तबियत को Concentration सहन नहीं होता है। Concentration ोते ही जी घबरा उठता है। ऐसी फड़फड़ाहट होती है, जैसे मछली को जल से अलग करने

में होती है। मैं Meditation में नहीं बैठ पाती हूँ, क्योंकि तबियत ऐसा Transmission चाहती है, जिसकी उसे खबर व खटक तक न होवे। अजीब लाचारी की हालत है। यद्यपि न जाने क्यों 'आप' से बात करती हूँ, किन्तु फिर भी मुझे आप की याद कभी आती नहीं। ऐसा कभी नहीं लगता कि मैं आप को याद कर रही हूँ, न ऐसा लगता है कि मैं आप की याद को याद कैसे करूँ? औरजब कभी एकाध क्षण को यदि कहीं याद की याद आने का एहसास हो जावे है, तो मानों वह मालिक से किसी ने अलहदा कर दिया हो, ऐसा लगता है। अब याद आना अलहदगी की तकलीफ़ के समान है किन्तु अब तक ऐसा एक आध क्षण को होता था, परन्तु अब कभी नहीं होता और कभी नहीं होगा, ऐसा कुछ लगता है। अन्दर-बाहर जिधर भी देखती हूँ, सब अथाह, असीमित दिखाई पड़ता है, अपने कण-कण को पढ़ती हूँ तो सब अथाह ही विस्मृत है। तबियत ऐसी स्थाई खड़ी हो गई है कि कोई विचार सोच में लाने के लिये उसे भटकना पड़ता है। लगता है मानों कहीं झटका लगा। उसके बाद जो भी समस्या या विचार सामने होता है, खुद-ब-खुद हल होता चला जाता है। अब तक काम सामने आते-जाते थे कि यह है, फिर यह है, किन्तु अब काम एक के बाद एक होते चले जाते हैं, परन्तु निगाह में कोई काम नहीं रहता है, न कभी आता है। ऐसी उदास हालत रह-रह कर आती है कि जीना भी दूभर हो जाता है। मन यही पुकार उठता है कि- ''लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार में''। यह देख रही हूँ कि मानों 'आप' सामने हैं और 'आपके' सिर के ऊपर से मुझ तक एक बिना ज्योति का प्रकाश-पुंज प्रवाहित है। 'आप' को तो मैं देखती हूँ, परन्तु अपने को नहीं पाती हूँ। बस एक बार ऐसा लगा मानों उस प्रकाश पुंज ने मुझे उठाकर आप में बहाकर एक कर दिया, किन्तु मैं खुद को दिखाई नहीं पड़ी। अब मुझे ऐसा लगता है, मानों हर समय सामने मुझमें कुछ बहाव उतरता है, किन्तु मैं मानों उससे भी उदास हूँ। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-864

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 7.2.69

इधर मेरी तबियत कुछ फिर खराब हो गई थी, परन्तु अब बिल्कुल ठीक हूँ। फिक्र की बिल्कुल रत्ती भर भी कोई बात नहीं है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि मानों मेरे कण-कण में एक ऐसी अनोखी मुलायमता सी समा गई है कि अब हर कण-कण मेरा मानों शीशा हो गया है, जिसमें कोई अक्स, कोई छाया दिखाई नहीं पड़ती है।

न जाने कुछ ऐसी रूखी दशा है कि लगता है मेरे जीवन का कोई उद्देश्य नहीं। तपन कुछ ऐसी अंतर में सूक्ष्म से सूक्ष्म में पैठ चली गई है कि मुझे उसका अन्दाज़ नहीं लग पाता है। कभी शक्ति व सामर्थ्य का अन्दाज़ पाती हूँ अपने स्थान पर, किन्तु मुझे जिसकी चाह थी, उसका पता कहीं

नहीं मिलता है। वह इतना गहरा पैठ गया है कि मुझे उसका अन्दाज़ नहीं मिल पाता है, किन्तु 'उसका' आकर्षण मुझे चैन नहीं लेने देता है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-865

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी मोदीनगर
सादर प्रणाम! 3.4.69

बहुत दिनों के बाद आपको पत्र लिख रही हूँ। मुझे स्वास्थ्य लाभ अब हो रहा है। कमज़ोरी भी बहुत कुछ ठीक हो गई है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

लगता है कि जीवन का सब काम ही समाप्त हो गया है। बिल्कुल शून्य (खाली) बैठी रहती हूँ, किन्तु शून्य कहने में शून्यता तो मालूम होती है, परन्तु मुझमें यह भी नहीं है, मानों किनारे पड़ी हूँ। दिन भर शरीर व दिमाग से कुछ काम हुआ करता है, किन्तु फिर भी मैं खाली की खाली बैठी रहती हूँ। इतनी भीड़ में रहते हुए भी मैं मानों घर में अकेली बैठी थी। मेरे सामने तो वीरान ही पड़ा है। मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, कैसे करूँ, कुछ समझ में ही नहीं आता है। मन बेचैन है, लेकिन बेचैनी या मन मुझसे इतने गैर हैं कि मेरा मानों उनसे भी कोई नाता नहीं है। न जाने क्यों मैं स्वयं ही अपने से गैर हूँ, यह सत्य है। मैं इसे छुपाती थी, किन्तु अब करना ही पड़ा। न जाने इधर अक्सर मुझे ऐसा लगता है कि मानों श्वाँस में आप की इतनी नज़दीकी होती है, मानों मेरे श्री 'बाबूजी', किसी दूसरे की श्वाँस मुझमें आ रही हैं। ख्याल में आप से इतनी नज़दीकी या एकता रहती है कि आपकी बातें अपनी मालूम होने लगती हैं। ख्याल में या लिखने में, जो लिखता जाता है, सब मानों आप का ही होता है। हर लेख में मुझे लगता है, मानों मैं किसी दूसरे का लेख पढ़ रही हूँ। दृढ़ता ऐसी समाकर रह गई है कि अक्सर ऐसा लगता है, मानों मैं पत्थर हूँ, इन्सान नहीं हूँ और हाल यह है कि हर के कष्ट में आंसू तुरत बहने को तैयार है, दिल भर आने को तैयार है, किन्तु यह भी सत्य है कि वास्तव में मैं पत्थर हूँ। न बोल सकती हूँ, न लिख सकती हूँ। कोई भाव नहीं, कोई भावना नहीं। ज्यों की त्यों शिला बनकर रह गई हूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-866

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी मोदीनगर
सादर प्रणाम! 8.4.69

आशा है, मेरा एक पत्र आप को मिला होगा। यहाँ सभी लोग कुशल पूर्वक हैं। आशा है, आप भी स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी कुछ यह अजीब दशा है कि लगता है कि सोते में सोने वाली मैं नहीं, कोई और है। मैं कभी न सोती हूँ न जागती हूँ, बल्कि एक ही हालत कुल में व्याप्त है, जो न सोती है, न जागती है। बस उसी हालत में मैं जाकर मिल गई हूँ, जहाँ से मेरी वापसी कभी भी, किसी भी हालत में, कभी नहीं होती है। मैंने सोते में भी यह अनुभव किया है कि मानों मैं कहीं और फिर रही हूँ। मेरा काम कहीं और है। जागते में, घर का काम करते में भी ऐसा ही लगता है कि यहाँ का काम, जो मैं ही कर रही होती हूँ, वह मुझे छूता तक नहीं और जाने कहां मैं busy रहती हूँ।

मेरा कुछ यह हाल है कि जैसे अपना स्पर्श अपने को कभी छूता नहीं और वैसा ही सबके लिये, जड़ चेतन के लिये भी एक समान स्थिति रहती है। टट्टी हो या कुछ गन्दगी, न घृणा है, न छूने का पता ही लगता है। सब जीवन-गति इतनी सहज हो गई है किमैं पकड़ पाने में असमर्थ हूँ। मैं तो केवल भीतर-बाहर कुल पत्थर ही पत्थर हो गई हूँ। डायरी देखती हूँ, तो लगता है कि मानों किसी दूसरे की हालत पढ़ रही हूँ। जहाँ मुझे 'आप' कहते हैं कि वहाँ उस स्थान पर मैं हूँ, वहां का भी मुझे पता नहीं मिलता है। यही कारण है कि मैं बराबर वहीं पहुँच जाने के लिये बेचैन हूँ, किन्तु जब मुझे अपना पता ही नहीं मिलता, तो क्या रोऊँ क्या चिल्लाऊँ और कैसे अपने को ले जाऊँ। पूजा क्या करूँ, आँख बन्द करते ही चिल्लाने को जी होता है। ऐसी छटपटाहट होती है कि आँख खोलनी पड़ती है। स्वयं अपनी ओर अपने को पकड़ लाने जाने का प्रयत्न करते ही जी घबरा उठता है, चीख निकलने को हो जाती है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-867

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदी नगर
सादर प्रणाम! — 21.4.69

आप की तबियत फिर कुछ खराब हो गई थी, जानकर चिन्ता हो गई है। आप अपना समाचार शीघ्र भेजिये। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि अब न सारुप्यता आती है, न सायुज्यता की ही गुजर है। न लय-अवस्था ही होती है। मैं ही नासमझ हूँ, यह कहा नहीं जा सकता है, क्योंकि जब कुछ है ही नहीं, तो मैं क्या देखूँ। न कोई देखने की चीज़ सामने विस्तृत है। सादगी भी मानों अपना दामन निचोड़ चुकी है। नंगी क्या नहायेगी, क्या निचोड़ेगी। सब मुझसे गैर है, जिसकी मानों सिर्फ बात ही रह गई है। सब ओर, सब तरफ, भीतर-बाहर मानों सब अचल हो गया है,स्थिर रह गया है और सब कुछ क्या, मैंने लिखाहै, कुछ है ही नहीं,तो क्या अचल हो गया है।यह तो ज्यों की त्यों है। यहाँ कभी लहर नहीं उठी, कभी कुछ चूँ तक नहीं हुआ, किन्तु फिर भी मन के किसी कोने में कोई पीड़ा मानों कराहती है। किन्तु वह भी मुझसे इतनी दूर है कि कभी-कभी केवल ख्यालभर आ जाता है, जैसे कोई परदेशी हो। न अब तक, जैसा लिखती आई हूँ, कि अथाह सामने फैला है, या तो मुझे कुछ नहीं दिखाई पड़ता है, या कुछ है ही नहीं। अपने अंतर में खोई बेचैनी मुझे पुकारती है, किन्तु मैं मानों

कुछ सुन नहीं पाती, कुछ समझ नहीं पाती हूँ। घर अपना है, लेकिन मैं गैर हूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-668

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 26.4.69

तुम्हारा पत्र आया। हम 6 जून को आसाम जा रहे हैं और 21 जून को लौटेंगे। कई दिन हुए, मैंने तुम्हें First Ring पर खींच दिया था, मगर उस Ring पर और Ring से पहले, दोनों तरफ सुरत थी। इस वक्त और खींचा है, ताकि पहली Ring पर ही आ जाओ। यह भी हो जायेगा।

तुम्हें चोट लग गई- तुमने लिखा भी नहीं। अब क्या हाल है?और हमें चोट तो ऐसी लगी है, कभी निकलती ही नहीं। जब हम परहेज़ कर लेते हैं, तो ज़रा फ़ायदा होता है और परहेज छोड़ देने पर बढ़ने लगता है और यह मैं यूँ कर लेता हूँ, कि तुमने कहा था थोड़ी बदपरहेज़ी कर लिया करो।

तुम सबको दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-869

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 4.5.69

मैंने पीछे लिखा था कि पहली Ring पर तुम हो और कुछ जोर, इससे पीछे मैदान है, उस पर भी है। मैं यह चाहता हूँ कि अब दूसरी Ring पर ले आऊँ। तुम आ जाओगी, सम्भव है कुछ समय लगे। यह तो होता ही रहता है। ताकत जब घर बना लेती है, तब आगे बढ़ती है। मैंने तुमसे कई बार कहा और अब भी कहता हूँ कि तुम करीब-करीब 10 मिनट तक यह करके देखो कि लेट जाओ और यह ख्याल करो कि तुम्हारे सब मर्ज़ अच्छे हो रहे हैं और तुम स्वस्थ हो रही हो। तुम अब इसे करके देखो, ख्वाह तुम इसमें शुरू में समय कम कर दो।

तुम सबको दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-870

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 4.7.69

कृपा-पत्र 'आप' का मुझे मिल गया था। मैं ही बहुत दिनों से आपको कोई पत्र नहीं डाल सकी।

'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने कुछ ऐसी दशा है कि लगता है कि दिमाग़ काबू में नहीं है मेरे साथ कभी नहीं रहता है। अब तक, जब कभी जोर की ठोकर पैर में लगती थी, तब एक क्षण को मेरे साथ आता था, फिर पल भर में मानों ज्यों की त्यों हो जाती थी। अब उसका आने, न आने, सब एक समान हो गया है। कुछ जल जाती हूँ, कहीं कट जाती हूँ, लड़ जाती हूँ तो ज्वलन या दर्द होता भी रहता है, तो अक्सर तो ऐसा लगताहै, मानों किसी और की बातें जैसे सुनती हूँ, उसीप्रकार जैसे किसी का दर्द मैं कभी अनुभव करती रही हूँ। जब कभी कटने या लड़ जाने में खून या जले स्थान को केसर देखती है, तो दवा लगाने दौड़ती है। मेरे हाथ से काम छीन लेती है। तब मुझे अपने पर शर्म सी आने लगती है। तब मैं सोचती हूँ, ख्याल से ढूँढ़ती हूँ, चाहती हूँ, तो भी काबू में नहीं आता है। इसीलिये मुझे 'आप' इतने प्रिय लगते हैं, फिर भी स्मरण नहीं करती, कभी नहीं करती हूँ। मुझे इसकी मन में कुरेदन है। सब दिन भर याद रखते हैं, किन्तु मैं हूँ कि कभी भी याद में नहीं ला पाती। कभी मैंने 'आपको' याद ही नहीं किया। इसीलिये मैं देखती हूँ कि मैं आपकी इतनी भव्य शक्ल को ऐसी भूल गई हूँ कि अचानक मेरे सामने आ जायें तो याद नहीं आता, याद करना पड़ता है और यह दशा मेरा स्वरूप बन गई है, हटाये नहीं हटती। अब लेख इत्यादि लिखने का मानों जी ही नहीं होता है और शुरू करने में कोशिश करनी पड़ती है। क्या लिखूँ, कुछ समझ में ही नहीं आता है किन्तु लिखूँगी तब तक जरूर, जब तक लिख सकूँगी। बेदिमाग़ के मालिक लिखवाना चाहते हैं, तो वैसे ही लिखूँगी। एक तरफ़ यह हाल है और दूसरी तरफ़ यह हाल है किलगता है 'मालिक' की शक्ति का भण्डार मानों मेरे में समाकर हजम भी हो गया है। मानों मेरे लिये कुछ कठिन नहीं रह गया है। अब तो आपका सहज-मार्ग दोनों अर्थों में मेरे पेट में समा गया है। सरल शब्द में भी और सहज (Natural) के अर्थ में भी क्योंकि Nature मुझे अपने पैरों तले लगती है। अब मैं सहज-मार्ग होऊँ या न होऊँ, सब सहज-मार्ग मेरे अन्दर समा गया है। वह मेरा हो गया है। कुछ दिन हुए, लगता है कि मेरे कुल का पर्त्त सा उचल गया है, तबसे कुल शक्ति का केन्द्र मुझमें समा गया है और मेरे अन्दर से चारों ओर मानों Current सी निकलती है। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-871

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर

सादर प्रणाम! — 27.8.69

यहाँ सभी कुशल पूर्वक हैं। आशा है आप भी कुशल से होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ कल से ऐसा है कि अपने में नहीं, किन्तु सामने व सब जगह मानों मै ही दीखती हूँ और न जाने क्या हालत है कि मुझे ऐसा लगता है, दिखाई कुछ नहीं पड़ता है, क्योंकि जब सामने या कहीं देखने का प्रयत्न करती हूँ, तो मुझे कुछ न दिखाई पड़ता है। बस कल से, जबसे ऐसा लगा कि मानों कोई पर्दा साफ़ नहीं, बल्कि मानों कुछ धुँधलापन फैला था, सो एकदम साफ़ हो गया,

तबसे ही ऐसा लगने लगा है। जैसे आपकी शकल पर गौर करूँ तो लगता है, कुछ नहीं है। ऐसे ही अपनी शकल पर गौर करूँ तो लगता है, कुछ है ही नहीं। वैसे भी 'आपका' एक माना हुआ ख्याल लिये चिपकाये चलती हूँ। इस ख़्याल पर गौर नहीं करती, क्योंकि गौर करती हूँ तो लगता है कुछ भी नहीं है। ऐसे ही जब 'आपके' सामने रहती हूँ, तब भी गौर करूँ तो लगता है, कुछ भी नहीं है सामने। अब लगता है जैसे Automatic जीवन मैं जी रही हूँ। जो मैं जीव के ऊपर पैर रखकर मरने पर अपना खून कैंची से काटकर निकाल देती थी, वह मैं स्वयं मशीन की तरह काम करती हूँ और मुझे पता तक नहीं रहता है। लगता है, मेरे अन्दर वृत्तियाँ मर गई हैं न तो हिंसा वाली वृत्ति है, न दया वाली, जो है, सो है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर आपको प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-872

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 13.10.69

बहुत दिनों से आप का कोई समाचार नहीं मिला, चिन्ता लगी है। कृपया अपना समाचार शीघ्र दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब लगता है कि कोई चीज़ अब मुझे हालत का पता नहीं देती है, बल्कि हालत अपना पता स्वयं दे देती है क्योंकि अब देखती हूँ तो कुछ की तह में कुछ नहीं पाती हूँ। हालत में तैरती रहूँ तो ठीक है, किन्तु यदि उसे देखना चाहती हूँ, तो लगता है कि वास्तव में हालत जो है, वह है, नहीं तो कुछ नहीं है, उसका कोई अस्तित्व नहीं है। जैसे यहाँ किसी को या कोई चीज़ न देखूँ, तो मानों सब छाया सी दिमाग़ में लगती भी है, परन्तु गौर करूँ तो छाया भी नहीं है। यही हाल अब हालत के लिये हो गया है। अब तो यही कहना पड़ता है कि जो कुछ हालत बीत चुकी है, वे वास्तव में आत्मिक हालतें नहीं थीं, आत्मा का वहम था और अब मैदान साफ़ है, न आत्मा है, न उसका वहम। आत्मा एक पर्दा थी, जिस पर यह सब तमाशा (आत्मिक दशाओं का) मालूम पड़ रहा था, किन्तु वास्तव में कुछ नहीं था और अब यह कुछ नहीं कहने भर। अब तो एक सादा भी क्या कहूँ, मरी हुई, लुटी हुई एक वीरान, एक नंगी सादगी ही कण-कण में व्याप्त हो गई है। कण-कण शीशा बन गया है, जिसमें देखने पर एक नंगी, विनम्रता कहूँ या बेहोशी, सादगी समा चुकी है। बस एक दृढ़ता मेरे हाथ में है, जो मेरे हाथ में वह भी नहीं है। बस इस बात पर मेरा अपनत्व है कि जो मालिक कह दे, चाहे बनाने को या बिगाड़ने को, वह सब मेरे वश में है। जो 'वह' चाहे, वह सब हो सकता है। यह संसार बनाना, बिगाड़ना बहुत छोटी बात है। इससे परे भी बहुत काम है, जो हो सकता है। किन्तु मैं वही नहीं हूँ। ऐसा हो गया है कि मानों 'मालिक' की आज्ञा में हूँ, क्योंकि जबवे 'कस्तूरी' यह कर दो, कहते हैं तो मैं न जाने कहाँ से 'उनकी' आज्ञा के रूप में 'उनके' अन्दर ही से आ जाती हूँ और 'वही' हो जाती हूँ और आज्ञा पालन के बाद सब सूना रह जाता है। इधर कुछ एक यह बात हो गई है कि मेरे अन्दर कुल में, गौर करूँ, तो

लगता है, कि कुल में, रोम-रोम में एक बहुत धीमा-धीमा Vibration सा रहता है। इतना अवश्य है कि जो मैं कभी जानना चाहती थी, पाना चाहती थी, अब वह नहीं चाहती। बस कुछ disturb न हो। मैं चलती जाऊँ, बिना स्थान, बिना मैदान के, फिर भी कुछ disturb न हो। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-873

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर

सादर प्रणाम! — 17.10.69

मेरा एक पत्र 'आपको' मिला होगा। यहाँ सभी लोग कुशल पूर्वक हैं। आशा है, 'आप' भी स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसा है कि Vibration तो कुल मेरे कण-कण में मानों मिल गया, रक्त तक में है, किन्तु बिना गौर करे कुछ पता नहीं चलता है। लगता है कि यदि इसे कोई पूरी तौर पर खुल जाने दे, तो ऐसी हजारों दुनिया बनाने और बिगाड़ने की शक्ति इसमें मौजूद है। अगर गौर करूँ तो लगता है कि कुल शक्ति मानों मेरे काम के लिये, आज्ञा के लिये तैयार खड़ी है परन्तु हालत ऐसी Natural (साधारण) हर समय रहती है कि मानों कुछ है ही नहीं। सब समान रूप से चल रहा है। एक कुछ यह बात हो गई है कि मैं चाहे कुछ भी बोलूँ, अपनी बकवास में भी हमेशा मैं ऐसी definite रहती हूँ कि मानों मैं बोल नहीं रही हूँ, देख रही हूँ। चाहे जैसा जटिल प्रश्न कोई करे, चाहे मैं कुछ उत्तर दूँ या लिखूँ, मानों सब अटल है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-874

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर

सादर प्रणाम! — 28.10.69

एक पत्र डाल चुकी हूँ, मिला होगा। आशा है 'आप' कुशल पूर्वक होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने करीब 20-22 दिनों से, सिर में पीछे की ओर गर्दन के ऊपर से बड़ा दर्द उठता है और लपकन इतनी अधिक रहती है। लेटने में भी सिर में ठक-ठक सी लगी रहती है। लगता है जैसे एक आँख सी पीछे खुल गई है। कुल रीढ़ से लेकर पीठ की कुल हड्डियों में बड़ी लपकन एवं दर्द सा रहता है। लगता है कि न कुछ अंतर है, न बाहर है। बस, कुल एक शीशा सा ही सब हो गया है, जिसमें कोई अक्स नहीं, कुछ नहीं है। बस एक धीमा Vibration समाया हुआ है। वह भी ऐसा है कि गौर करने पर ही पता लगता है, नहीं तो कुछ नहीं पता चलता है। कुल सिर भी मानों शीशा हो गया है। हड्डी-हड्डी चमक रही है,

किन्तु सबमें, कुल सिर में भी लपकन धीमी-धीमी रहती ही है।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-875

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 21.11.69

आपका समाचार मिला। 'आप' स्वस्थ हैं, जानकर खुशी हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसा हो गया है कि लगता है, जब कुछ बोलने लगती हूँ, तो लगता है, सोई हालत निगाह में आ जाती है और जब बोल या बता चुकती हूँ या लेख लिख चुकती हूँ, तो फिर साफ़ की साफ़ हो जाती हूँ, मानों हालतें भी अब बंधन हो गई हैं। इसलिये जब तक कुछ लिखूँ या पढ़ूँ या बोलूँ, तब तक ऐसी तबियत कुछ परेशान रहती है कि मानों मुझे किसी ने क़ैद में बाँध लिया है, परन्तु जब समाप्त कर देती हूँ, तो बड़ी चैन की साँस आती है, मानों स्वतंत्र कर दी गई हूँ। हालत भी क्या लगता है, मानों किसी ने गिलाफ ओढ़ा दिया हो। बड़ी मुश्किल है, यदि बोलते या लिखते समय हालत कभी चली जाती है तो फिर होश ही उड़ जाते हैं। ऐसा Mind absent हो जाता है कि यह तक याद नहीं रहता कि मैं कुछ बोल रही थी, क्या Subject था। इसलिये बोलते या लिखते समय यह परेशानी हो गई है कि लगता है, एक हालत को पकड़े रहना पड़ता है और हालत भी क्या, बल्कि लगता है किसी आवरण का दामन पकड़े हूँ। क्या जाने यह सब क्या हाल हो गया है। मामूली जीवन हालत से अच्छी है। चाहे गुस्सा आवे, चाहे कष्ट हो, स्वतंत्र तो रहती हूँ। किसी आवरण की कैद की तो बन्दिश में नहीं आती हूँ। यही हाल पूजा का है कि आँख बन्द करना हराम हो गया है। आँख बन्द करते ही लगता है, मैं कहीं बन्द हो गई हूँ और घबरा कर आँख खुल जाती है, किन्तु काम करने में या पूजा इत्यादि कराने में चाहे कितनी देर बैठी रहूँ, ऐसा कुछ नहीं होता है। लगता है, 'मालिक' ने मुझे आज़ाद कर दिया है और मैं आज़ाद ही रहूँगी। किन्तु लिखना या बोलना भी आपके ही हाथ में है। यह जरूर है जब जिस हालत को चाहूँ, तो लगता है, उतार लाती हूँ, किन्तु स्वयं अलग ही रहती हूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-876

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 6.3.70

बहुत दिनों से आपको कोई पत्र नहीं लिख सकी। इधर फिर मेरी तबियत खराब हो गई थी, किन्तु अब ठीक हूँ। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

लगता है कि मानों शक्ति व केन्द्र मेरे अन्दर प्रवेश कर गया है, तभी तो जो बोलती हूँ, जो भी मेरे द्वारा होता है, सब ऐसा लगता है कि मानों शक्तिमय है और दृढ़ता से भरा हुआ है। अपनी बकवास में भी मैं हर समय, हर बात में definite रहती हूँ। मेरे अन्दर, कुल बाहर-भीतर, एक ऐसा तेज फैला हुआ है, जिसने मुझे, मुझसे अलहदा करके अब केवल शक्ति-पुंज ही बना दिया है और यह तेज मेरे अन्दर-बाहर ही नहीं व्याप्त, वरन् यह समस्त में, असीमित तक फैला हुआ है और यही हाल मेरा भी हो गया है। मुझे चाहे सर्वज्ञ कह लीजिये, चाहे सर्व-व्यापी कह लें, चाहे सर्व अंतर्यामी कह लें, मानों कुल हालत मेरे में फैली हुई है। किन्तु न जाने क्यों अब मेरे अन्दर मैं एक अलौकिक जज़्बे से भरी हुई पाती हूँ, परन्तु यह हालत लिखते हुए भी मेरी हालत को यह कहना सच नहीं लगता है, क्योंकि मुझे अपनत्व किसी के प्रति पैदा नहीं होता हो भी कैसे, जब यह चीज़ ही मुझ में नहीं है, सब कुछ भ्रमवत् है है भी, और नहीं भी है। कुछ भी कह लें, चाहे है कह लें, चाहे नहीं कह लें। मेरे लिये सभी कुछ एक बराबर है। कुछ ऐसी झलक से भरी हुई हूँ, जिसकी क़ीमत कुछ भी नहीं है। कुछ ऐसा असीम तेज फैला है कि लगता है मानों समस्त में सभी कुछ मेरे हुक्म से होता आयाहै और हो रहा है, किन्तु वह तेजवान कौन है, कैसा है, कहाँ है, वह ज्योर्तिमय कैसा है, जिसका पसारा समस्त में फैला हुआ है। वह कैसा है, कहाँ है, इसका पता लगाये नहीं लगता है। कोशिश करने पर कोशिश स्वयं खो जाती है। अब तो यह हाल है कि खाली कभी नहीं बैठती हूँ और काम है नहीं।

कुछ ऐसी हालत में हूँ कि जो न सीमित है, न असीमित है। बस, असीमित (Unlimited) का पसारा देख पा रही हूँ सामने। वहाँ की आती झलक मुझे अपनी झलक में मिलाने लगी है। न जाने क्या हो गया है, ज्यों-ज्यों एक-एक दिन निकलता है, अंतर में बेचैनी की सीमा टूट सी गई है, किन्तु लगता है, हृदय को कोई अपने पावन करों से सम्भाले हुए है। मुझ को असीमित नहीं हो जाने देती, मुझे रोके हुए है, भिन्न होकर असीमित नहीं हो जाने देती है। मैं अपने से मिल जाऊँ, मैं मिलकर असीमित अपने प्रिय में फैल जाऊँ, किन्तु ऐसा कैसे हो? लगता है कोई मेरा दामन पकड़े हुए है और दामन छोड़ दे तो, मैं उसमें विलीन हो जाऊँ। मैं व्यथित हूँ। तन-मन मानों कुल पीड़ा से विह्वल है। दर्द को हरने वाला मरहम सामने है, किन्तु लगा नहीं सकती, क्योंकि मेरे दर्द को कोई सम्भाले हुए है। फिर मरहम लगाये भी तो कौन लगाये। मेरे अन्तर का पट हट गया है। आवरण साफ़ हो गया है। मैं सब कुछ साफ़ देख रही हूँ, किन्तु अपने हाथ ही नहीं रहे। कोई पकड़े हुए है, तो पकड़े रहे, मैं इस असीमित दर्द के बंधन को भूलती, याद करती आगे बढ़ रही हूँ और बढ़ती जाऊंगी। क्योंकि अभी कुछ ऐसी भूल-भुलैया खेल रहे हैं 'मालिक' कि जभी प्रियतम लगता है अब आ गया, मैं मिल जाऊँ, तो फिर लगता है, वह थोड़ी दूर हट गया है। फिर पास पहुँचती हूँ तो वह फिर कुछ दूर हट जाता है। न जाने क्यों मुझसे भूल-भुलैया सी खेला रहा है। यद्यपि 'उसको' देखते लगता है, मैं सत्य अनुभव करती हूँ कि उसकी शक्ति सामर्थ्य एवं मधुरिमा, सभी कुछ अब मुझे अपने में दिखाई पड़ती है। वह झलक अब मेरे में, स्वयं में उतरती जा रही है। अक्सर मैं पुलक-पुलक उठती हूँ। मैं कभी भौंचक्की सी अपने को देखती रह जाती हूँ। यह सब क्या खेल 'मालिक' खेल रहा है? किन्तु यह सब खेल नहीं, सत्य है। लगता है, यह सब कुछ जो अब तक भीतर छुपा था,

पनप रहा था, अब प्रत्यक्ष में, सामने फैल गया है, किन्तु फैला रहे, क्या करना है देखकर। दिखाई पड़ने वाली पीड़ा, एक पहिचाना दर्द जी में समाया है, तो सुहाये भी तो क्या।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर आपको प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-877

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 25.3.70

मेरा एक पत्र मिला होगा। अब मेरी तबियत बिल्कुल ठीक है। आप चिन्ता न करें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्यों अब लगता है, कि मैं अपनी हालत नहीं लिखती हूँ, वरन् उस स्थान की हालत लिखती हूँ, जहाँ मैं पहुँचती हूँ। यह सब दशायें वास्तव में मरण के बाद सैर की है, जिनमें 'मालिक' जीवन में ही हमें ले ही नहीं जाते हैं, वरन् पूर्ण अनुभव के साथ वहाँ लय अवस्था भी दे देते हैं।

एक न जाने कुछ ऐसा हो गया है कि यदि मैं अंग्रेजी में बातें करती हूँ तो लगता है कि मानों कहीं ऊपर से अँग्रेजी उतर रही है, वह मैं ग्रहण कर रही हूँ। यदि हिन्दी लिखूँ या बोलूँ, तो भी ऐसा ही होता है। जिस वक्त जो जरूरत होती है, वैसा ही समा बँधता जाता है। शायद इसीलिये मैं देखती हूँ कि समझ बहुत ही साफ या निखर आई है। लगता है, एक ऐसा निखार मेरे में आ गया, जिससे दूसरे लोग बहुत ही प्रभावित हो जाते हैं। लगता है, हर चीज़ में, हर बात में, हर काम में वास्तविकता ही निखर आई है। बनावट का आवरण ही जब उतर गया, फिरक्या हो? किन्तु वास्तविकता मुझमें दरसती है किन्तु मैं वास्तविकता में नहीं हूँ, वरन् लगता है कि 'मालिक' ने मुझे वह चीज़ दी है कि जो मैं वास्तविकता में खुद निखार ला सकती हूँ। किन्तु सब 'वही' जानें, 'वो' क्या दे रहे हैं।

न जाने कुछ जी हमेशा परेशान सा रहता है। बिना कारण ही जी मानों लगता नहीं है। हैरानी भी हैरान है कि आखिर वह क्यों है। उदासी ने भी लगता है, मुझसे अपना दामन छुड़ा लिया है। मुझे स्वयं अपने से ही ऐसा वैराग्य है, ऐसी उदासी है कि मैं मानों स्वयं से अलहदा कर दी गई हूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-878

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 6.4.70

बहुत दिनों से आप का कोई समाचार नहीं मिला है। 'आप' कृपा कर शीघ्र ही अपना समाचार दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

परसों पूजा करते में मुझे अचानक लगा कि कोई मेरे साथ पूजा में बैठा है और देखने पर देखा कि वह स्वयं मैं हूँ। तबसे बराबर लगता है कि कोई मेरे साथ है और देखने पर देखती हूँ कि वह खुद मैं ही हूँ। मैं अनुभव करती हूँ कि मेरे में अन्दर ही अन्दर एक तेज सा बढ़ता जाता है, किन्तु वह प्रकाश नहीं है। उससे मुझे कोई तेजी नहीं आती, वह तो बस मेरे में फैल गया है, किन्तु इससे मेरे पास आने वाले प्रभावित बहुत हो जाते हैं। मैं इसे रोकना चाहती हूँ, किन्तु ऐसा कुछ हो नहीं पाता है, क्योंकि वह तो लगता है, मेरे में उतर रहा है। मैं दबाना चाहती हूँ, किन्तु प्रभाव बढ़ता जाता है, इसलिये मैं जैसी हूँ, वैसे ही जो कुछ उतरे, बस देखती हूँ और आज से यह भाई, बात देख रही हूँ कि खुद मैं अपने को ही अपने साथ पाती हूँ। यह सब न जाने क्या है, 'आप' ही जानें।

मैं तो अब अचम्भे में देखती रहती हूँ और देखती हूँ कि कुछ मेरे में उतरता है, किन्तु Read करने पर वह कुछ नहीं लगता। न जाने यह क्या खेल 'मालिक' खेल रहे हैं।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-879

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 06.4.70

मेरा एक पत्र 'आपको' मिला होगा। यहाँ सभी लोग कुशल से हैं, आशा है आप भी कुशल पूर्वक होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्या हाल हो गया है कि अब तो मैं खुद अपने ही Meditation में खोई रहती हूँ। भीतर ही भीतर अक्सर एक मानों कहीं ऊपर से कोई शक्ति भटका देती है, तब लगता है मानों मेरी आँख खुल गई है, मानों मैं गाढ़ी नींद से जागी हूँ और तब, जब मेरा ध्यान आपकी ओर दौड़ता है, तो उधर यह पाती हूँ कि मै खुद अपने ही Meditation में खोई हुई थी। बजाय 'आप' के ख्याल के, सामने मेरी तस्वीर आती है ऐसा क्यों है, मैं परेशान हूँ, परन्तु हालत है, इसलिये बेफिक्री भी है, 'मालिक' की दी गई है। आश्चर्य की बात यह है कि लगता है मानों गाढ़ी नींद से जागी हूँ। एक ओर यह भी पाती हूँ और दूसरी ओर मैं अपने दिन भर के कामों में अब ऐसी busy रहती हूँ कि मुझे होश नहीं रहता है। यह सब क्या विचित्र खेल है, यह 'आप' ही जानें।

अजीब बीच की दुहरी सी लटकी हुई हालत है कि एक ओर जी ऐसा उचाट सा है, बेचैन सा है कि कभी भी कहीं नहीं लगता है, जबकि मैं काम में डूबी ही रहती हूँ, फुरसत नहीं निकालती हूँ, लेख इत्यादि लिखने में कि खाली जी न ऊबे, परन्तु जी है कि ऊबा ही रहता है और दूसरी ओर अन्दर देखती हूँ तो जी ऐसा शान्त, स्थिर कहीं लगा हुआ है, वह उचाट होता ही नहीं है। चाहे खुद शरीर में या किसी को कष्ट में देखूँ तो बाहर से घबराहट सी दीखती है, परन्तु जब निगाह अंतर में जाती है, तो वहाँ जी बिल्कुल लगा हुआ है। स्थिर

स्थिरता एवं निश्चलता है, मानों कहीं कुछ नहीं हो रहा है, मानों धरती का साया आसमान पर नहीं पहुँच पाता है, नहीं पड़ता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-880

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 16.4.70

आपको फिर साँस की तकलीफ़ हो गई है, सुनकर चिन्ता हो गई है। ईश्वर करे 'आप' शीघ्र ठीक हो जायें। मेरी भी तबियत अब ठीक है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

ऐसी अथाह उदासी से भरी भला इस संसार में मैं कैसे रह सकूँगी। संसार की किसी बात में जी नहीं लगता। न जाने क्या हाल है कि आँखें बन्द किये चुपचाप बिना ध्यान के बैठी रहूँ, तब तो कुछ नहीं वरना आँखें खोलते ही जी ऐसा उचाट उदास रहता है कि समझ में नहीं आता कि ऐसी गहन उदासी भरे जीवन को मैं कैसे चला सकूँगी। मरने में भी जी उदास है, जीने में भी उदास है। पूजा करना मैं दूसरों को बताती हूँ, किन्तु लगता है, पूजा या आध्यात्मिकता या ईश्वर, सब कुछ कहने मात्र का एक भ्रम मात्र है, मानों इस भ्रम का आवरण मुझ पर से उतर गया और मैं ज्यों की त्यों खड़ी हूँ। कहीं कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। उठने, बैठने, खाने, सोने, किसी की भी तबियत नहीं होती है। न मरने में रुचि है, न जीने में तबियत। दोनों बातों से गहन उदासी है। उदासी की इस गहराई का कहीं पार नहीं मिलता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-881

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 26.4.70

अब 'आप' स्वस्थ हो गये हैं, जानकर खुशी हुई। यहां भी सभी लोग कुशल पूर्वक हैं। ईश्वर से हमारी सदा यही प्रार्थना है कि आप हमेशा स्वस्थ रहें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि सब लोगों के बीच रहते हुए भी ऐसा वीराना से में मैं डूबी रहती हूँ कि हर समय जी न जाने कहाँ डूबा रहता है, जहाँ पर जी नहीं लगता है। जी में वैराग्य या ऐसा कोई भाव न होने पर भी कहीं भाग जाने को जी चाहता है। यदि कोई ऊपर से शक्ति सम्भाले न रहे तो मेरा रूकना असम्भव हो जावे। यद्यपि न निकल भागने का कोई भाव रहता है, और न भाग

कर कहाँ जाऊँगी, ऐसा कोई लक्ष्य सामने है। जैसे एक पागल बिना किसी लक्ष्य के चलता ही चला जाता है, वही हाल मेरा है। खुद का खुद से भी जी नहीं लगता, चाहे गाऊँ या आपकी चिट्ठी पढ़ूँ या कुछ भी करूँ। ऐसी दशा है मानों हर चीज़ की हर बात का तथ्य मुझे मिल गया, आध्यात्मिकता का ईश्वरत्व का और वह है NIL । तब मैं कहाँ जाऊँ, क्या करूँ? पीछे देखती हूँ तो NIL है, सामने देखती हूँ तो NIL है और मेरा इस NIL से भी कुछ मतलब नहीं है। मैं तो ऐसे मैदान को देखती, अनदेखती बस, जाने कहाँ भागी जा रही हूँ। आजकल मैं केवल एक पागल हूँ, किन्तु पागल भी ऐसी हूँ कि काम सारे सही ही होते हैं। पूजा सबको बहुत अच्छी मिलती है। घर में रहती हुई भी मैं कहीं दूर पागल की तरह से, दीवानी की तरह से दौड़ रही हूँ, जैसे चुम्बक कहीं हो, सुई उसकी ओर मुड़ जाती है, अन्तर इतना है कि सुई चुम्बक से चिपक जाती है और मैं केवल भाग रही हूँ, बेतहाशा। अब मुझे यदि कोई जरा सा रोके, तो मेरा Heart Fail हो सकता है, वैसे डाक्टर 'आप' हैं, आप ही जानें। 'मालिक' मुझे दुनिया में जी लगाना असम्भव हो रहा है। लगता है मेरे प्राणों का तार कहीं से जुड़ा है, इसलिये बिना वहाँ जाये, बिना उसे पाये, प्राण रहें भी तो कैसे रहे और 'मालिक' मुझे उसके बिना क्यों रख रहे हैं, किन्तु 'वह' कौन है, मैं क्यों बेचैन हूँ, इसका पता बहुत सोचने पर भी मुझे नहीं मिलता है। ऐसा समझ लें कि यह बिन कारण प्राण लेवा बेचैनी मेरे भाग्य में ही है। मैं हूँ नहीं, मुझे फुर्सत भी नहीं है, जी भी ठिकाने नहीं है, फिर भी मानों तमाम शक्ति का भण्डार सामर्थ्य का पुंज मेरे में उतरता आ रहा है। खैर, जो हो मुझे क्या। मुझे तो रूकने की फुर्सत नहीं है और न अपने में उतरने से रोक ही सकती हूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-882

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 30.7.70

लगभग एक महीना के बाद आपको पत्र लिख रही हूँ। इधर थोड़ी कमजोरी हो गई थी, अब ठीक हूँ। 'आप' मेरी चिन्ता न करें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

आज रात अचानक आँख बन्द किये करीब 12 या 1 बजे लेटी थी, Vision में देखा कि सामने आपका विशाल विराट मेरे सामने है। पृथ्वी से लेकर आकाश तक फैला है। संसार ही नहीं, वरन् आप के अन्दर कुल व्याप्त है। रोम-रोम में ब्रह्माण्ड समाया हुआ है। आप के हृदय में मैं व सभी एक प्रकाश बिन्दु की भाँति समाये हैं। आप के हृदय और पेट से अनगिनत Chains फैली है किन्तु वे सब Chains भी अनन्त तक फैली है, उनका कहीं पता ही नहीं लग पाता है। मेरा दिल इतना छोटा है कि मैं 'आपको' पूरा अपने अन्दर समा नहीं पाती हूँ। 'आपकी' ही दिव्य दृष्टि से मैंने आपको देखा है, और देख रही हूँ। आज भी आप परम प्रिय वैसे ही मेरे Vision में प्रत्यक्ष हैं। जब भी ख्याल उस Vision में गहरा

जाता है, मैं अनुभव करती हूँ कि मेरे में अनन्त शक्ति एवं सामर्थ्य का पुंज समायाजा रहा है। यह सब तो आप ही की कृपा है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-883

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर

सादर प्रणाम! — 17.8.70

मेरा एक पत्र आपको मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मुझे न जाने क्या हो गया है कि मेरा Vision Unlimited हो गया है। 'मालिक' के विराट रूप के Vision देखने के बाद से तो मानों मैं भी 'उनके' चरणों में लिपटी विराट् सी होती जा रही हूँ। एक न जाने क्या बात है कि अपने में अतीव शक्ति एवं सामर्थ्य है, किन्तु मैं उससे लगाव नहीं कर पाती हूँ, किन्तु चीज़ मेरी है। अक्सर Vision में आती है। शरीरका यह हाल है कि जाने जड़ हो गया है। इसे छूते हुए भी कभी छू नहीं पाती हूँ। लगता है, संसार के लिये एक मशीनरी मेरे नाम से चल रही है, किन्तु मेरे अन्दर संसार भर के लिये लगाव या ममत्व बढ़ता जाता है। हर का दुख, पीड़ा मुझे निज की पीड़ा के समान ही लगती है। एक न जाने मेरी आत्मा मर गई है, या क्या हो गया है कि कहते हैं- आत्मा से अच्छे बुरे काम की प्रेरणा हर को मिलती थी, किन्तु मुझे न कोई प्रेरणा कभी कुछ करने को मिलती है, न अच्छे-बुरे की मिलती है। बस, जो है, सो है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-884

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर

सादर प्रणाम! — 28.8.70

आशा है, 'आप' कुशल पूर्वक होंगे। यहाँ भी सभी कुशल से हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरी हालत तो लगता है, सूक्ष्मता से भी पार रहती है। हल्केपन से भी पार हो गई है क्योंकि यदि हालत को सूक्ष्म या हल्की से भी हल्की कहती हूँ, तो भी मेरी हालत उससे अलग ही मालूम पड़ती है। मुझे अपनी हालत को तौलने में अब न अनुभव शक्ति काम देती है और न इसका अनुमान ही काम

देता है। मुझे तो बस लगता है, मेरे 'मालिक' की दृष्टि से ही दृष्टिगत होता है जो हालत कुछ अनुभव में आती है, वह दिव्य हालत भी और दिव्य दृष्टि भी मुझे आपकी ही मालूम होती है। लगता है मानों मैं दो भागों में बँटी रहती हूँ। एक ओर जब दृष्टि जाती है, 'मालिक' का भाग जिसमें मैं दिव्य और अलौकिक गति एवं सामर्थ्य और शक्ति से भरी रहती हूँ। एक ओर दुनिया के कुछ काम एवं कुछ चिन्ता लिये कस्तूरी रहती हूँ, परन्तु 'मालिक' के भाग में ही मेरी रहनी है, अधिकतर वही मैं विचरण करती हूँ और वहीं मानों कुल में मैं फैल गई हूँ। विराट में फैली हूँ, दिव्य दृष्टि से देखती हूँ, 'मालिक' के ही चरणों में, 'मालिक' के ही तौर पर रहती हूँ। इसलिये भाग कहने को मैंने दो कह लिये हैं, परन्तु यह भी 'उससे' जुदा नहीं है। लगताहै, जो कुछ भी आध्यात्मिकता है वह मेरी दिव्यता है जो फैली है, वही आध्यात्मिकता है और कुछ भी नहीं है, किन्तु जब मैं अपनी हालत में रहती हूँ, कभी कुछ इधर-उधर देखती हूँ, तो लगता है कि मुझे कुछ चिन्ता भी है, मैं कुछ busy भी रहती हूँ, परन्तु इनका भी कारण कुछ नहीं है। दुनिया की ओर निगाह जाती है, तो लगता है, कि दुनिया मेरी है। शायद इसीलिये जब डा. वर्दाचारी ने मुझसे कहा था कि यह माता का सा हृदय लेकर तुम्हें हमेशा कष्ट ही उठाना पड़ेगा, तब मेरे मुँह से खुद-ब-खुद निकल पड़ा कि मैं तैयार हूँ। इस पर वे खुश तो बहुत हुए, आशीर्वाद भी दिया। इधर मुझे जाने क्या हो गया है कि जरा सा Divine concentration होते ही, मेरा जी ऐसा घबरा उठता है, मानों प्राण निकले जा रहे हैं। इसीलिये न मैं पढ़ सकती हूँ, न जी से कुछ लिख सकती हूँ। लेख लगकर लिखने पर जी घबरा उठता है और छोड़कर लिखने पर विचार बहक जाने का डर रहता है, परन्तु आपकी ही कृपा से मैं लिखती हूँ और लिखूँगी।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-885

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 24.8.70

तुम्हारे पत्र मिलते रहते हैं। जवाब देना अब कठिन ही नहीं नामुमकिन सा होता जा रहा है। कोई लिखने वाला भी ऐसा नहीं पास में है जो कि ठीक से इबारत लिख सके। बारीक हालतों के बारे में लिखाते समय मुझे बिल्कुल Silence चाहिये और लिखने वाला मुस्तैद चाहिये। खैर जो कुछ भी हालत तुम्हारी है उससे पता चलता है कि तुम दूसरे Ring से आगे जाना चाहती हो। लालाजी साहब का शुक्रिया कहाँ तक अदा किया जाये उन्होंने मुझे इशारा किया और तुम Third Ring पर आ गई। बिटिया, मैं अपने को धन्य कहूँ या तुम्हें जो आज Highest Region की दशाओं की अनुभूति तुम्हारे पत्रों से मिल रही है। मैं अपने को भूल चुका हूँ मगर तुम्हारी हालत कुछ मेरे बारे में भी मुझे बता जाती है। तुम्हारी Divine will power ने मुझे साँस के कष्ट से हमेशा के लिये मुक्त कर दिया है।

तुम सबको दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-886

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी | मोदीनगर
सादर प्रणाम! | 8.12.70

आशा है आप स्वस्थ होंगे। यहाँ भी सब कुशल पूर्वक हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने मुझे कुछ ऐसा लगता है कि मैं अनजाने ही कहीं हवा की तरह फैल रही हूँ। कोई हालत में नहीं, बल्कि मैं हवा की तरह से कहीं फैलती जा रही हूँ, जहाँ से कुल दुनिया में ही नहीं, बल्कि कुल में Flow या Transmission automatic ही हो रहा है। क्या Flow है, यह मैं नहीं जानती हूँ, लेकिन यह देख रही हूँ कि कुल संसार को कुछ मिलता जा रहा है। Flow संसार की ओर आ रहा है। न जाने क्या दशा है, कि हालत लिखना भी बंधन लगता है। तबियत भागती है लिखने से। अब वास्तव में मैं यह कह सकती हूँ कि मेरा दामन वहीं फैला है, जहाँ से सारे जहाँ को मिल रहा है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-887

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी | मोदीनगर
सादर प्रणाम! | 27.12.70

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। मालिक की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरा तो यह हाल है कि अब गीत गाने तक में मुझे आनन्द नहीं मिलता है और अब गाने में जी नहीं लगता है। अब तो कुछ ऐसा हाल है कि अपनी वीरान, सूखी हालत को ही मैं आनन्द मानने लगी हूँ। मेरे बाबूजी! सच पूछिये तो अब हालत, हालत नहीं होती है। मैं क्या देखती हूँ, क्या सुनती हूँ, कुछ पता नहीं है। जो विराट्रूप मालिक का मई में देखा था एक Link मुझे सदैव उसमें ही फैला रहा है। सच तो यह है कि अब न आकर्षण है और न सेंक की ही अनुभूति है सब कुछ एक स्वप्न सा बीत गया है, नहीं बल्कि अंतर ने मानों इस आवरण को उतार कर फेंक दिया है। कोई मुझे मुझसे ही चुरा ले गया और मैं देखती रही। मैं घायल की घायल, हैरान व परेशानी में ही खो रही हूँ। पता नहीं इसका किनारा कहाँ है। कुछ अजीब दिमाग़ हो गया है और अजीब निगाह हो गई है कि शान्ति कुछ है नहीं, आनन्द दु:ख है, रोना है,छाती कूटना है और कुछ भी नहीं। ऐसा लगता है कि ईश्वर मानों मित्र था जो साथ रहता था और कुछ नहीं। यही कहना ठीक लगता है कि भोजन जो कुछ खाया था बिना नमक का था। नज़ारा जो कुछ देखा था वह नज़ारा नहीं था मानों किसी ने दृष्टि को बाँध दिया था। वास्तव में मैं ठगी गई हूँ। मानों राह दिखाने वाले ने, साथ चलने वाले ने मुझे ठग कर लूट लिया और में विस्मृत हुई खड़ी हूँ। अब क्या हो सकता

है जब फ़रियाद सुनने वाला कोई है नहीं किन्तु निगाह का बाँध साफ़ हो गया है। कोई साथ भी नज़र नहीं आता है किन्तु मार्ग साफ़ है, सहज है। चाल में गति न होने पर भी मैं बिना पंख के उड़कर समस्त में फैल रही हूँ। कहीं कोई आकर्षण नहीं है अब तो हवा की तरह मैं ही बह रही हूँ। हाँ जी नहीं लगता है लेकिन जब कभी घर की हवा याद में आ जाती है तब स्थिरता आ जाती है। किन्तु घर की याद रहने इसलिये नहीं पाती है कि लगता है शरीर छिन्न भिन्न हो जाये। लगता है आत्मा भी बंधन थी जो टूट गया है। मुझे क्या हो गया है आप ही जानें। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री- कस्तूरी

पत्र संख्या-888

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 28.12.70

उत्सव की तारीखें 30 व 31 जनवरी तथा 1 फरवरी है। मैं 15 फरवरी को दिल्ली से मद्रास By Air जाऊँगा। Poray का Programme बदलना अब मुश्किल है। सेठजी ने मेरे Transmission में कुछ एहसास नहीं किया, इसलिये कुदरती तौर पर हर एक का यह ख्याल हो सकता है कि मेरे Transmission में असर नहीं है। मेरे Transmission में Awakening और सायुज्यता है। उसकी कदर वही कर सकता है, जिसकी आँखें पूरी तौर से खुल चुकी है। मैंने सेठजी और बापू भाई के मामले में बहुत जल्दी की। मगर जब उन लोगों को इसका एहसास नहीं हुआ तो उनकी नज़र में जैसे और गड़बड़ साधू होते हैं, वैसा ही मैं भी हूँ।

तुम सबको दुआ।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-889

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 13.1.71

तुम्हारा खत मिल गया। डा० वर्धाचारी को बुखार 101° से 103° तक हर समय रहता है, इसलिये और भी कमजोर हो गये हैं। शक्कर में कमी होने के लिये मैं भी दुआ कर रहा हूँ और तुम भी कर रही हो, मगर उसमें कमी नहीं हो रही है, इससे हमें बड़ी फिक्र हो रही है। दुआ तो करते ही रहेंगे और तुम भी करती रहोगी।

Mr. Poray और Mr & Mrs Davies 19.1.71 को आ रहे हैं और 24.1.71 तक रहेंगे। पार्थ सारथी भी 19 या 20 को सुबह आ रहे हैं। तुमने हीरजी भाई और बम्बई वाले सेठजी को जो Transmission दिया था, उससे कुछ समाधी की दशा हो गई थी। हीरजी भाई तो इतना खुश हुए कि उन्होंने सेठजी से कहा कि अगर यह लड़की दो महीने तक मिशन के प्रचार के लिये उधर आकर करे तो मैं कुल खर्चा दूँगा। बाकी और बातें, जब तुम यहाँ आओगी, तब बताऊँगा।

हमें तो South अब हर हाल में जाना है।

तुम सबको दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-890

परम श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 1.1.71

'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक-दशा है सो लिख रही हूँ। लगता है कि 'मालिक' के Divine विराट् में मेरा फैलाव हो रहा है। इस दशा को मैं देख रही हूँ। न जाने क्या हो गया है मुझे कि लगता है जी जाने कहाँ फैल रहा है। बस एक अचम्भा सा बना रहता है। जाने क्या बात है कि पूजा के विषय या अपने सहंज-मार्ग की चर्चा चलने पर सच ही मैं भगवान हो जाती हूँ। 'मालिक' माफ़ करे मैं भगवान ही होकर भाग्यवान हो गई हूँ। अब तो मुझे जाने क्या हो गया है कि लोग चाहें उम्र में मुझसे बड़े हों, चाहे साधु सन्यासी हों सामने पड़ने पर मेरे हाथ तो खुद जुड़ जाते हैं लेकिन मन उन्हें आशीर्वाद देता है। परसों मैंने स्वप्न में देखा कि कुछ महात्मा लोग मुझे नमस्कार कर रहे हैं और मैं स्नेहपूर्ण आशीर्वाद सबको दे रही हूँ। उनमें संत कबीरजी का चेहरा तथा एक कोई दाढ़ीवाला चेहरा मुझे याद है। कबीरजी के पद गाने में उसमें डूब जाती थी परन्तु अब गाती हूँ या बोल रही हूँ इसमें डूब नहीं पाती हूँ 'आप' ही जानें। कुछ ऐसी दशा आज बदल गई है कि लगता है एक सामर्थ्य एवं तेज मुझमें समा गया है। मेरे 'मालिक' कुछ यह भी अजीब बात है कि समस्त में मेरा ही तेज व्याप्त है किन्तु अपनी ओर देखने पर NIL है। एक मामूली प्राणी कैसी सहज-दशा है मेरी। 'मालिक' का काम सामने हो या सत्संग में, बोलते समय में देखती हूँ कि समस्त मेरे तेज से तेजोमय है। ब्रम्हा, विष्णु, महेश सब मानों मेरे Under में ही काम कर रहे हैं। किन्तु इतना सा Change है कि यह मैं धरती की कस्तूरी का नहीं है वरन् उसका पसारा तो समस्त में व्याप्त है। उसका सम्बन्ध तो वहाँ से दिखाई पड़ता है कि जिससे दुनियाँ रोशन है। एक बात और देखती हूँ कि चाहें कितने लोग बैठे हों मुझे उनकी अलग-अलग individuality नहीं दिखाई पड़ती है बल्कि मुझे शरीर भी अलग दिखाई नहीं पड़ते हैं।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-891

परम श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 20.3.71

मेरा पत्र आपको मिला होगा। आशा है आप स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आध्यात्मिक-हालत है सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसी दशा है कि अब हालत कोई नहीं आती है बल्कि एक सामर्थ्य एवं तेज मुझमें समाया हुआ है और मेरे में से ही समस्त में फैला हुआ है। अजीब बात है मेरे मालिक कि पृथ्वी, आकाश समस्त में मेरा तेज व्याप्त है किन्तु अपनी ओर देखने में कुछ भी नहीं लगता है। समस्त दृष्टिगोचर के लिये यह एक सी बात हो गई है कि किसी मनुष्य के individuality मुझे एहसास नहीं होती है। अंतर में हालत के और बाहर के सभी स्पर्श से परे ही रहती हूँ। एक साधारण सी दुनियाबी लड़की की ही तरह होकर रह गई हूँ। सादगी ही ओढ़ना है, सादगी ही बिछौना है और सादगी ही का पसारा चारों ओर है। लेकिन बाबूजी, एक यह बात भी अजीब पा रही हूँ कि सादगी की यह अनुपम हालत भी मानों एक दैविक आवरण सा ही है। जिसके परे निरख पाने की चाहना कहीं जी से लगी हुई है। यह भी अजीब बात है कि अब जी भी आप ही हैं।

न जाने यह क्या बात हो गई है मेरे बाबूजी कि किसी बात की इच्छा में इच्छा की तह तक पहुँचती हूँ तो पता लगता है कि कहीं कोई इच्छा नहीं है। इच्छा है, रूचि है समस्त में ऐसा लगता है किन्तु तह खोखली है। बड़ी लगन से काम में जुटती हूँ परन्तु जब ख्याल जाता है तो लगन उड़ जाती है। ख़्याल भी बाहरी होता है मुझे मानों छू नहीं पाता है। तड़प मुझे वही लगती है किन्तु जब उसे पकड़ना चाहती हूँ तो वह हाथ नहीं आती है। अजीब आश्चर्य तो यह है कि अजीब की तह भी खोखली है। सब तमाशा है नहीं तो कुछ नहीं है। अपनी इसी झूठी एवं भुलावा भरी गति में मैं खोई रहती हूँ। डूबने की जगह नहीं है और सूखा है नहीं। यह भी बात है कि मैं खोई रहती हूँ या भुलावा भरी गती ही मुझमें खो गई है। सब आप ही जानें। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-892

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

खुश रहो! — 14.4.71

तुम्हारा पत्र मिल गया। हमारा इरादा लगभग 6-7 जून तक आसाम जाने का है। खर्चा तुम्हारा और हमारा हवाई जहाज का जमा हो चुका है। हवाई जहाज का रास्ता 4 घंटे का है। तुम लिखो कि तुम्हें यह तारीखें सूट करेगी, ताकि हम तारीखें निश्चित करके आसाम को सूचित कर दें।

केसर को दिल्ली में या वहाँ से आने के बाद पारब्रह्म मण्डल में पूरी तौर से खींच दिया। तुम भी देख लेना कि मैं सही हूँ। मैंने तुमसे कहा था कि मैंने West का काम Raghvendra Rao को दिया है। तुम भूल गई होगी। तुम्हारा अनुभव सही है। मैं तुम्हें भी काम देना चाहता था, मगर तुम्हारी कमजोरी और बीमारी के डर से मैंने नहीं दिया। तुमने अच्छा किया कि काम ले लिया। अब जितना हो सके, करती चलो। इसमें अमरीका और अफ्रीका भी शामिल कर लो। राजगोपालाचारी अमरीका भी जा रहे हैं। आध्यात्मिकता में अगर वहाँ के लोग भी उन्नति कर जायें तो लड़ाई-झगड़े सब समाप्त हो जायें।

पाकिस्तान ने बंगला देश में बहुत जुल्म किया है, जो इतिहास में नहीं सुना गया। सभी

Intellectuals को खत्म कर रहा है और यह बातें अब देखी नहीं जातीं। नहीं मालूम ईश्वर की क्या मन्शा है और क्या होना है।

तुम सबको दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-893

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 23.6.71

मैं मद्रास से 20.6.71 को वापिस आया। मुझे तुमसे कुछ सलाह लेनी है और आगे मिशन के काम के लिये Policy Chalk Out करना है। इसलिये जब तुम लखनऊ से मोदीनगर जाओ तो 2-3 दिन शाहजहाँपुर ठहर कर जाना। काम कुछ जरूरी है, मगर परेशानी की कोई बात नहीं। खुशख़बरी यह है कि आज ही तुम्हें 3rd Ring से उठाकर 4th Ring में डाल दिया है।

तुम सबको दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-894

परम श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 19.8.71

यहाँ सभी कुशल पूर्वक हैं-आशा है आप भी स्वस्थ होंगे। कृपा-पत्र आपका मिला पाकर बहुत खुशी हुई। मालिक की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है सो लिख रही हूँ।

न जाने यह क्या हाल है कि दिल्ली में बड़े भइया का accident हो गया- उसे bed पर तमाम पट्टियों से बंधा पड़ा हुआ देख आई फिर भी दिल और दिमाग़ लगता है कि मानों इस ख़बर से भी बेख़बर हैं। दिमाग पर ज़ोर देकर सोचने पर भी कि भइया को बहुत कष्ट है परन्तु विचार में वह दृश्य ठहरा ही नहीं पाती हूँ इससे बार बार बेख़बर हो जाती हूँ। दिमाग कोई भी विचार को रख पाने का कष्ट गवारा नहीं कर पाता है। बस शरीर मेरा साथ देता है किन्तु मैं इसके लिये झूठी हूँ क्योंकि वह मेरा न होकर मेरा साथ ही देता है। इसका स्पर्श, इसका साथ इसमें रहते हुये भी मैं कभी दे नहीं पाती हूँ। दिमाग़ मालिक के ओर सोचने लिखने बोलने में हर समय दिव्य प्रकाश से प्रकाशित है बस इधर के लिये अँधेरा है। प्रकाश भी क्या है बाबूजी जब कुछ समझ में इसके बारे में नहीं आया तो बस मान लिया है। मेरे लिये तो मेरे मालिक आप यह कह सकते हैं कि मौत मेरे लिये रोशनी हो उठी है और जीवन अंधेरा हो गया है। नहीं, वरन् यों कह लें कि जीवन और मृत्यु के बीच की अंधेरी नहीं बल्कि धुँधली हालत है। जो दशा वास्तव में अब मुझमें फैल रही है मेरे बाबूजी वह तो अछूती है, अकेली है, जिसे कोई छू नहीं सकता है, जिसे कोई अपना नहीं सकता है। फिर

भी देखती हूँ कि आपमय होकर मैं और यह दैविक दशा एक में मिलती जा रही है। मैं इसे ऐसे ही पा रही हूँ अपना रही हूँ। दशा क्या है मानों खुद अपनी सी एक है। कदाचित् इसीलिये शायद मैं आपका निरंतर Contact (लय-अवस्था) से ही किंचित् मात्र दर्शन पा सकी हूँ, या यों कहें कि जितना आपने अपने को मुझमें उजागर किया है उतना ही मैं आपको जान सकी हूँ। जैसे बिना अपने मरे स्वर्ग नहीं दिखाई पड़ता है ऐसे ही आपको आप में ही लय होकर अपनी प्रलय हो जाने पर ही कुछ जाना जा सकता है।

छोटे भाई-बहिनों को दुआ। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-895

परम श्रद्धेय श्री बाबूजी — मोदीनगर
सादर प्रणाम! — 24.11.71

'मालिक' की कृपा से यहाँ सभी सानन्द हैं- आशा है मेरे जीवन-सर्वस्व, वहां सभी सानन्द होंगे। आपकी कृपा से जो भी आत्मिक-दशा है सो लिख रही हूँ।

मेरा तो न जाने क्या हाल हो गया है कि आध्यात्मिकता ही नहीं मानों कुल ईश्वरत्त्व ही मुझमें समा गया है। अब शाहजहाँपुर कैसे अपने बाबूजी के पास जाऊँगी? क्या वे अपनी कस्तूरी को पहिचानेंगे? कहाँ तो मेरा ख्याल मानों सदैव के लिये मालिक में Rest कर रहा था और मालिक मेरे कण-कण में Rest कर रहे थे परन्तु न जाने क्या हुआ है कि मेरे पास कोई ख़्याल नहीं रह गया है। अब तो न जाने क्या हुआ है कि मेरे पास कोई ख़्याल नहीं रह गया है। अब तो न जाने क्या हाल है कि बोलते हुये भी मानों मैं कभी बोलती ही नहीं हूँ। अब तक मानों मेरा कण-कण, रोम-रोम Attached था परन्तु अब सब कुछ घुलकर रोम-रोम शुद्धता की चमक से उज्जवल हो उठा है। कभी ऐसी अनुभूति आती है कि लगता है कि दशा क्या है आदि का तलछट सामने है। अब तक जो वाहय और भीतर की एक समान हालत के बारे में आपको लिखती थी उस हालत से परे जो दशा अब है उसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता है। न जाने कुछ ऐसा हो गया है कि खाट पर लेटे हुये भी खाट का स्पर्श नहीं होता है। लगता है कि मानों समस्त में मैं लेटी हुई हूँ और इसका भी पता मुझे तभी लग पाता है कि जब जागकर काम में जुटती हूँ। ऐसी राह पर चल रही हूँ मानों कभी कोई राही इधर से होकर गुज़रा ही नहीं है। न जाने यह कैसी दशा है कि बात करते रहने पर भी आवाज़ मुझ तक नहीं आती है। लगता है कि समस्त में ऐसी सतत् चुप्पी छाई हुई है कि मैं कहीं भीड़ में बाज़ार आदि चली जाऊँ चुप्पी कभी भी disturb नहीं होती है। मानों कुल में inactivity ही उतर आई है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-896

प्रिय बेटी कस्तूरी | शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! | 3.5.72

तुम्हारे पत्र मिलते रहते हैं। तुम्हारे पत्र लोग मुझे तोड़-मरोड़ कर सुनाते हैं इसलिये मुझे लगता है कि तुम्हें पत्र लिखना अब कम होता जा रहा है। चाहता तो यही हूँ कि तुम्हारे हर पत्र का उत्तर विस्तार से दूँ जिससे लोगों को हर आध्यात्मिक-दशा के साथ Divine Power का अंदाज़ भी देता जाऊँ कि आगे चलकर हर हालत Power बन जाती है। तुम्हारा हर अनुभव अब Divine Power में ही लय हो जाता है फिर मात्र शक्ति ही रह जाती है। तुम्हें ख़ुशखबरी दे रहा हूँ कि South के जो लोग आये थे उन्हें लालाजी साहब ने ख़ुश करके भेजा है। तुम्हारे अनुभव की क्या तारीफ़ करूँ कि न जाने कब मैंने तुम्हें पाँचवें Ring पर डाल दिया था और वही हालत तुमने अपने पत्र में लिखी है। यह भी Divine Power में बदल जायेगी- और लो बदलना शुरू भी हो गया है। तुम्हारे साथ में एक खासियत यह भी है कि हर हालत का अखलाक भी साथ में आ जाता है। सच तो यह है कि हालत कितनी ही श्रेष्ठ क्यों न हो अगर उस स्तर का अखलाक अभ्यासी में न उतरे तो यह बड़ी कमी ही मानी जायेगी और लालाजी साहब यह कमी तुम्हारे में कभी नहीं रहने देंगे। अब तुलसीदास की तबियत ठीक हो गई होगी।

तुम सबको दुआ।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-897

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी | लखीमपुर
सादर प्रणाम! | 24.7.72

कृपा-पत्र आपका अनन्त-कृपा की वर्षा लिये हुये मिला पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। बड़ा भइया अब बिल्कुल ठीक है। मालिक की कृपा से जो भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरे मालिक! परसों रात एक कुछ सोते जागते में स्वप्न सा देखा कि आपकी आज्ञानुसार किसी ऐसे व्यक्ति को पूजा करवा रही हूँ जो संसार में नहीं है। पूजा समाप्त करते ही जो आँखे खोली तो स्वप्न से ही में लगा कि एक सेकेण्ड जैसे आप नाच रहे हैं और इससे समस्त संसार की पृथ्वी मानों हिल रही है परन्तु मैं भी संसार में नहीं हूँ बल्कि कहीं और हूँ और वहीं पूजा करवा रही थी। लगा कि संसार की गंदगी आपके पैरों तले रूँद गई और कहीं धीमी सी स्वच्छता एवं ताज़गी की महक अब संसार सूँघेगा ऐसा मुझे लगता है। मानों आपके नाचते पैरों ने धरा और वातावरण की गंदगी का Destruction कर दिया है और स्वच्छता एवं ताज़गी इसका Result होगा। अब कुछ ऐसी दशा है कि है और नहीं है इनका कोई अस्तित्त्व नहीं है। हालत मेरी अब कुछ भी नहीं है बस समस्त में Moderation फैला है उसे मैं देख रही हूँ सबसे अछूती हूँ केवल दृष्टामात्र हूँ।

मेरे 'मालिक', मेरी कुछ ऐसी दशा है कि मैं ही नहीं बल्कि मेरे लिये कुल जड़ हो गया है।

सामने चलते फिरते आदमी काम करती मैं मेरे लिये सब जड़ हो गया है। कहीं चैतन्यता नहीं, कहीं Vibration नहीं समस्त में मानों एक जड़ दशा सी फैल गई है। शरीर चलते रहने पर भी मानों मेरा रोम रोम, कण कण सब जड़वत् मौन पड़ा है। गाते समय आवाज़ मुझसे टकराती नहीं। दशा क्या है मानों एक पत्थर बनकर रह गई है। आपको पत्र लिख रही हूँ किन्तु मुझे पता नहीं pen ने क्या लिखा है और pen बेजान है। मानों जड़-समाधी में मैं समाधिस्त हो गई हूँ। न कहीं कोई इच्छा है, न ज़रूरत है। जब मन ही नहीं तो सारा खेल ख़त्म हो गया।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-898

परम श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 13.9.72

यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं- आशा है आप सभी स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। मालिक की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

पूज्य एवं स्नेही नारायण दद्दा से जानकर बहुत ख़ुशी हुई कि आपने 6.9.72 को अपनी बिटिया को छठवें Ring पर डाल दिया है। दद्दा बेहद ख़ुश थे और कह रहे थे कि कस्तूरी तुमने 'बाबूजी' की इच्छा पूरी कर दी। परन्तु मैं भला क्या कहूँ कि जिसने अभी भी आपके अलावा कुछ देखा नहीं और आपके मधुर स्वर के अलावा मेरे कानों ने कुछ भी नहीं सुना है। मुझे तो यह भी नहीं मालुम है कि Ring होता क्या है। मेरे मालिक दशा क्या है सादगी ही सादगी का एक दर्पण है जो मैं देख रही हूँ। शायद अब इसी दर्पण से बाहर, भीतर मैं देखती हूँ। मेरा रोम-रोम ही नहीं बल्कि समस्त ही सादगी के दर्पण के समान ही निखरा हुआ मैं देख रही हूँ। लगता है कि आंतरिक नैनों की ज्योति अब सामने बिखर गई है। मानों सादगी का नूर ही मेरे लिये नैनों का दर्पण बन गया है। लगता है कि दिव्य-दृष्टि ज़र्रे-ज़र्रे में बिखरी हुई है और मैं बिना आँखों के और बिना किसी नज़ारे के देख रही हूँ। या यों कहूँ कि सामने बिना नज़ारे की मैं दृष्टा हूँ। लगता है कि मेरा रोम-रोम, ज़र्रा-ज़र्रा स्थिर हो गया है। हो सकता है मेरे मालिक ने मुझे बेंच दिया तभी तो मैं खुद को छोड़कर चली गई। कहाँ? य पता नहीं परन्तु उसकी तिलमिलाहट जाने कहाँ छुपी मुझे तिलमिला जाती है। हर हालत लापता है। कुछ ऐसी हालत है कि मैं अपने 'मालिक' को भी नहीं रख सकी मानों मुट्ठी खुल गई और वे निकल गये परन्तु यदि कोई उन्हें देखना चाहे तो मेरे रोम-रोम में, कण-कण में, जीवन के हर पहलू में उन्हें देख सकता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-899

परम श्रद्धेय श्री बाबूजी मोदीनगर

सादर प्रणाम! 17.1.73

यहाँ सब कुशल पूर्वक है- आशा है आपका भी स्वास्थ्य अब ठीक होगा। पूज्य नारायन दद्दा से यह जानकर कि आपने कृपा करके मुझे छठवें Ring में डाल दिया था मेरा मन मानों पानी-पानी होकर आपके ही चरणों में समा गया है। मालिक की कृपा से जो भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

हालत क्या है कि "न बहार ने छुआ, न मातम ही छू सका, 'तुमने' छुआ कभी, यह भी पता किसे।" लगता है कि हालत ऐसी है कि जैसे एक नव-शिशु की तरह स्वच्छ एवं मुलायम है। लगता है कि मानों मेरा रोम रोम ठिकाना (वतन) बन गया है। लगता है कि मृत्यु और जीवन ज़िन्दगी के दो पहलू थे जो ज़िन्दगी में ही मिलकर ज़िन्दा-दिली (शक्ति) का ही पता देते हैं। मेरे 'मालिक' कल रात स्वप्न में मैंने देखा कि आप थके हुये हैं, मैं तुरन्त ही प्रार्थना में बैठ गई बस 5 मिनट बाद आप मेरे परम प्रिय मुस्कुराने लगे। थकान दूर होते ही जो दैविक मुस्कान भरा चेहरा मैंने देखा है वह आज भी मेरी निगाह के सामने है और मेरे मालिक का यह चेहरा मानों दुनियां की मृदु-मुस्कान बन गई है- मानों कह रही है कि "दुनियाँ तेरे मुस्कुराने के दिन आ गये हैं"। एक कुछ ऐसा हो गया है बाबूजी कि कोई कितनी भी तारीफ़ मेरी करे परन्तु मेरे होश में कोई चेतना नहीं भर सकता है। शायद इसलिये ऐसा हुआ है कि मैंने आपको लिखा था कि बाबूजी कोई जब मेरी तारीफ़ करता है तो अंतर में मानों कुछ होता है जो मुझे अच्छा नहीं लगता है। बस पत्र आप तक पहुँचने तक ही उपरोक्त हालत पर आप अपनी बिटिया को ले आये। मानों जड़-समाधि ने मुझे अपना ठिकाना बना लिया है जबकि मैं देख रही हूँ कि अब उसका भी कोई अस्तित्त्व नहीं है। मेरी समझ में नहीं आता है कि दशा को कैसे लिखूँ, क्या कहकर लिखूँ? हाँ यह लिख सकती हूँ कि अचम्भे ने देखा है हालत को जिसे अस्तित्त्व विहीन ही कहना ठीक होगा।

मेरा तो कुछ यह हाल है कि सोते में मुझे पूरे समय ऐसी प्यास लगी कि समुद्र भी पी जाने पर प्यास वैसी ही बाक़ी रह गई। जागने पर लगा कि भूल से मैं प्यास को ही पी गई हूं। शायद Everlasting Peace का क्या यही नमूना है आप ही जानें मालिक जो आप बताते हैं मैं लिख देती हूँ। वास्तव में मेरी हालत तो आप हैं।

एक कुछ यह दशा हो गयी है कि मैं कहाँ हूँ तो जहाँ ख्याल जाता है वहीं पाती हूँ। शाहजहाँपुर ख़्याल में आये तो शाहजहाँपुर में, डेनमार्क हो फ्राँस हो, लन्दन हो जहाँ भी ख़्याल आता है मानों मेरा ही पसारा, मेरी ही शक्ति व्याप्त है। सत्संग में हूँ, प्रश्नोत्तर हो रहे हों तो मेरे पास जवाबों का अंत नहीं और वह भी संतोषजनक होते हैं क्योंकि फिर किसी का प्रश्न ही नहीं उठता है। मैं ख़ुद चकरा जाती हूँ कि यह जवाब कहाँ से व कैसे आते हैं। परन्तु समय के बाद मानों Wisdom जहाँ से आती है वहीं चली जाती है। लगता है हालत ऐसी है जिसे दीन (ईश्वरीय) और दुनियाँ किसी ने भी न छुआ हो। मैं ग़ौर करती हूँ तो पाती हूँ कि हालत क्या है मानों वहां कभी क्षोभ पैदा न हुआ हो।

लगता है कि जो देखा नहीं जा सकता है वही अलख आपने लखाया है। अपनाइत मुझमें नहीं है लेकिन लगता है कि अपनाइत ने मुझे अपना लिया है तभी तो जो मुझे बुरा कह रहे होते हैं वे भी मुझे अपने ही लगते हैं। 'मालिक' की ही शक्ति मानों Faculity (कान, नाक आदि) से यंत्र

के समान काम लेकर लौट जाती है। लगता है कि जिस हालत को बंधन में नहीं लाया जा सकता, जिस परम-गति को अपनाने की क्षमता ने जन्म ही नहीं लिया है उस परम अगम्य गति को भी आपने लिखाने के लिये गम्य कर दिया है तभी तो कुछ न कुछ मैं आपको लिख पाने में सफल हो पाती हूँ। समस्त के प्राण मेरे बाबूजी आप चिरायु हों यही समर्थ सद्गुरु से मेरी प्रार्थना है। अम्मा आपको आशीर्वाद एवं छोटे भाई बहिन आपको प्रणाम कहते हैं। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-900

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 16.7.73

तुम्हारे सब पत्र मिल गये- जवाब देने के लिये किसी लिखने वाले का इंतजार करना पड़ता है। आज इत्तफ़ाक से लिखने वाला मिल गया है इसलिये तुम्हें उत्तर दे रहा हूँ।

ख़ुदा का करिश्मा है कि किसी को जब यहाँ उतारता है तो कोई न कोई 'उसकी' मुराद पूरी करने वाले को भी यहाँ ले ही आता है। मेरी ख़ुशी, समर्थ की निगाह और स्वामीजी का आशीर्वाद आज ख़ुशी से झूम उठा है- तुमने हालत को लिखने की हद पार कर दी है। शायद किसी भी आध्यात्मिक-लिटरेचर में इन हालतों का ज़िक्र तो क्या कहीं हवा भी नहीं लगी। मैं तो बस लालाजी साहब का शुक्रगुज़ार हूँ कि जिनकी निगाह के नीचे मैंने तुम्हें श्रेष्ठतम हालतों से गुजार कर अन्तिम सत्य की सत्यता को उजागर किया है। एक बात लिखता हूँ कि अब जिन हालतों से गुज़ार कर तुम्हें लिये जा रहा हूँ वहाँ शक्ति की भी गुज़र नहीं है। सातवें Ring पर तो तुम आ ही गई हो- लालाजी साहब ने तुम्हारा Charge खुद ले लिया है क्योंकि सातवें Ring के बाद तुरत ही, बल्कि सातवें Ring में ही अंतिम-सत्य (भूमा) की आदि झलक का मिलना शुरू हो जाता है। कहीं मेरी निगाह उधर न फिर जाये इसलिये उनकी निगरानी और मेरी निगाह ही तुम पर रहेगी। वाह, वाह क्या कहा जाये लालाजी साहब की निगरानी का कमाल कि मेरी आदि Unfailing-will तुम्हारी मौजूदा हालत को Touch न कर दे इसलिये ही अपनी निगरानी के प्यार का Cover उन्होंने तुम्हें दिया है। वैसे तो कोई हर्ज नहीं किन्तु तुम्हारा हर thought, power न बन जाये इसलिये ही शायद उनके प्यार ने तुम्हारी हालत को छुपा लिया है। हर हालत का Centre उसकी Power का केन्द्र होता है। R ing की खासियत यह है कि इसमें कदम रखते ही केन्द्र की कशिश अपनी ओर खींचने लगती है। मैंने कशिश लिखा है लेकिन यहाँ कशिश की गुज़र ही नहीं है। यूँ कह लो कि सिखाने वाले की निगाह ही कशिश का काम करती है। अलख तो तुमने लख ही लिया है और मैं तो यही कहूँगा कि परम-गति ने ही तुम्हें पा लिया है। अब लिखाने को विचार ही नहीं है- सच तो यह है कि तुम्हारे हालत लिखने की गर्मी ही विचार को ले आती है। अब मैं खुश हूँ कि तुम्हारे लिये आशीर्वादों की बारिश हो रही है।

तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-901

परम श्रद्धेय श्री बाबूजी मोदीनगर

सादर प्रणाम! 2.5.75

आशा है लम्बी बीमारी के बाद अब आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। मैं इस बीच आपको देखने शाहजहाँपुर आई तो बहुत बार और सेवा करने का सौभाग्य भी पाया परन्तु मैंने यही पाया कि कुर्सी पर बैठने वाले बाबूजी बीमार थे परन्तु मेरे बाबूजी की वही मृदु मुस्कान कभी भी कम नहीं हुई। मैं जानती हूँ कि मेरे पत्र के उत्तर भी अब मुझे नहीं मिल सकते हैं और पूज्य मास्टर साहब के देहावसान के बाद कोई यहाँ आने जाने वाले अभ्यासी भाई, बहिन नहीं हैं जिनसे 'आपका' कुछ समाचार कुछ 'आपकी' बातें सुनने को मिल सकें फिर भी जब तक मैं लिख पाऊँगी अपनी हालत के बारे में 'आपको' लिखती रहूँगी। मेरे 'मालिक' मुझे ऐसा लगता है कि शून्य-गति का रास्ता बनाकर कोई अपना व मेरा पता न देकर अनन्त-सागर में Swimming देकर उस पार ले गया है जहाँ न देना है न पाना है। न गीत है, न शून्य है मानों अपने संकल्प की नैया में लेकर आप मुझे पार ले गये हैं। आर क्या है, पार क्या है यद्यपि मैं यह कुछ नहीं जानती हूँ। शक्ति, भक्ति, शून्यता, ज्ञान, अज्ञान सभी ने मुझे छोड़ दिया है। बस लिये हुए हैं तो बस आपकी निगाह जो मेरी है। सच तो यह है कि इस हालत को किसी नाम या जगह का जामा नहीं पहिनाया जा सकता है। न लाज है, न भय है मानों स्वतन्त्रता ही खुद मेरे द्वारा कार्य करती है। लगता है कि कोई कहानी समाप्त हो गई है।

छोटे भाई,बहिनों को प्यार। इति:

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहोना
पुत्री-कस्तूरी

※ ※ ※ ※ ※ ※

संत कस्तूरी द्वारा लिखित पुस्तकें

1. दिव्य देश का दर्शन-सहज-मार्ग के दर्पण में - सन् 1978
2. साक्षात्कार से अन्तिम सत्य तक सन् 1988
3. कौन थे वे - प्रथम संस्करण, मार्च, 1992
   द्वितीय संस्करण, फरवरी, 1996
4. अनंत यात्रा - भाग 1 - जुलाई, 1992
5. वह सबको प्यार करता है - सन् 1994
6. अनंत यात्रा - भाग 2 - जुलाई, 1994
7. संध्या के गीत व्याख्या सहित - सन् 1995
8. अनंत यात्रा - भाग 3 - सितम्बर, 1996
9. वह दिव्य छवि - जुलाई, 1997
10. अनंत यात्रा - भाग 4 - दिसम्बर, 1997
11. अनंत यात्रा - भाग 5 - जनवरी, 1998

अनुवादित पुस्तकें - English Translation

1. Anant Yatra Part - I - July, 1992
2. Who was He - February, 1995
3. Realization to Ultimate Reality - Oct, 1996
4. Anant Yatra Part - II - February, 1997